दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 100 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, शनिवार 03 मई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

मुख्यमंत्री ने ली चिकित्सा विभाग की समीक्षा बैठक

स्वास्थ्य के कई मानकों में राजस्थान देश में बेहतर : भजनलाल शर्मा

आमजन को हीट वेव से राहत देने के लिए चिकित्सा विभाग रखे अपनी पूरी तैयारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि लू-तापघात (हीट वेव) और गर्मी जनित अन्य बीमारियों से आमजन को राहत पहुंचानें के लिए चिकित्सा विभाग अपनी पूरी तैयारी रखें। जिला कलक्टर नियमित तौर पर अस्पतालों का निरीक्षण करें। उन्होंने कहा कि राज्य के सभी अस्पताल व स्वास्थ्य केन्द्रों का पूर्ण रख-रखाव किया जाए एवंकिसी भी तरह की कमी पाए जाने पर जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। शर्मा ने कहा कि गर्मी के मौसम में आमजन को बिजली, पानी व चिकित्सकीय सुविधाओं की निरंतर उपलब्धता राज्य सरकार की प्राथमिकता है। अधिकारी संवेदनशीलता के साथ पूरे समर्पण भाव से काम करें जिससे लोगों को किसी भी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े।

अस्पतालों मे दवाइयों की हो पूरी उपलब्धता

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राज्य में लू से निपटने की तैयारियों के मद्देनजर अस्पतालों में दवाइयां और उपकरणों की हर समय उपलब्धता हो। हीट वेव की स्थिति में नियमित निगरानी रखी जाए तथा

चिकित्सालयों में हर समय सभी आवश्यक मेडिकल व्यवस्था सुनिश्चित की जाएं। शर्मा शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास परप्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन व राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की समीक्षा बैठक कोसंबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के तहत राज्य में पब्लिक हेल्थ केयर के बुनियादी ढ़ांचे को सुदृढ़ कर विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं को विकसित किया जा रहा हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि योजना के तहत प्रत्येक जिले में स्वास्थ्य के बुनियादी ढ़ांचे को विकसित कर आत्मनिर्भर बनाया जाए और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाते हुए महामारियों से बचाव के लिए उच्च स्तर की तैयारियां की जाएं। उन्होंने कहा कि शहरी आयुष्मान आरोग्य मंदिर के तहत राज्य के शहरी क्षेत्रों में वंचित वर्ग को उच्च गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभाग की ओर से इन आरोग्य मंदिरके लिए चिन्हित सरकारी अनुपयोगी जमीन को उपयोग में लिया जाए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर मिशन के तहत चिकित्सा के आधारभूत ढ़ांचे को मजबूत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में संचालित सभी आयुष्मान आरोग्य मन्दिरों में इस वर्ष तक प्रमुख 12 सेवाएं मिलना सुनिश्चित किया जाएं। उन्होंने एम्बुलेंस सेवाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि अत्याधुनिक चिकित्सकीय सुविधाओं से लैस करते हुए इनकी नियमित मॉनिटरिंग की जाएं। साथ ही, एम्बुलेंस की संख्या में भी बढ़ोतरी की जाए। उन्होंने कहा कि अस्पतालों में एक्सरे, सोनोग्राफी व डायलिसिस मशीनों की संख्या बढ़ाई जाए तथा इन सभी मशीनों को हर समय कार्यशील रखने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जाएं। शर्मा ने कहा कि राजस्थान डिजिटल हेल्थ मिशन के तहत प्रदेशवासियों का स्वास्थ्य रिकॉर्ड डिजिटल रूप से संधारित करने के लिए प्रदेश के हर व्यक्ति किना केवल आभा आईडी बनाई जाए बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाए कि आभा आईडी का अधिक से अधिक उपयोग शीघ्र प्रारम्भ हो। बैठक में नव-निर्मित उपस्वास्थ्य केन्द्र, इन्टीग्रेटेड पब्लिक हेल्थ लैब, क्रिटीकल केयर ब्लॉक, मा वाउचर योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत राज्य में योजना की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। इस दौरान प्रमुख शासन सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य नेविभाग की योजनाओं, कार्यक्रमों व नवाचारों का प्रस्तुतिकरण दिया।बैठक में चिकित्सा व स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

हाईकोर्ट ने रखा एडीजे का फैसला बरकरार

बीजेपी विधायक कंवरलाल मीणा की विधायकी पर संकट

जयपुर टाइम्स

अंता/एजेंसी।। झालावाड़ के अंता से बीजेपी विधायक कंवरलाल मीणा की विधायकी पर संकट खड़ा हो गया हैद्य हाईकोर्ट ने करीब 20 साल पुराने मामले में एडीजे अकलेरा, झालावाड़ की ओर से सुनाई गई तीन साल की सजा को बरकरार रखा है। ऐसे में अब उनकी विधानसभा सदस्यता खत्म हो गई हैद्य जनप्रतिनिधि कानून 1951 के तहत दो साल से ज्यादा की सजा होने पर सदस्य अयोग्य हो जाता हैद्य जानकारी के मुताबिक, कंवरलाल मीणा को झालावाड़ जिले की एडीजे अकलेरा कोर्ट ने राजकार्य में बाधा डालने, सरकारी अधिकारियों को डराने-धमकाने और सरकारी संपत्ति में तोड़फोड़ करने का दोषी मानते हुए 14 दिसंबर 2020 को तीन साल की सजा सुनाई थी, जिसके खिलाफ विधायक ने हाईकोर्ट में अपील की थी। लेकिन अब हाईकोर्ट ने भी विधायक की निगरानी याचिका को खारिज करते हुए उनकी सजा को बरकरार रखा है। हाईकोर्ट ने कहा कि घटना के समय याचिकाकर्ता ने स्वयं को एक राजनीतिक व्यक्ति होना बताया। उस स्थिति में उनसे अपेक्षा की जाती है कि वह कानून व्यवस्था को चुनौती देने की बजाए उसे बनाए रखने में सहयोग करे। लेकिन यहां पर उन्होंने दोबारा वोटिंग की मांग करते हुए एसडीएम की कनपटी पर पिस्तौल तानकर जान से मारने की धमकी दी। वीडियोग्राफर की कैसेट निकालकर उसे तोड़ दिया। जबरन प्रशिक्षु आईएएस अधिकारी का डिजिटल कैमरा कब्जा लिया, जिसे बाद में वापस कियाद्य कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार के अपराध से कानून व्यवस्था की स्थिति गंभीर रूप से प्रभावित होती है। आमजन और लोक सेवकों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है, उनका मनोबल गिरता है। अदालत ने कहा कि इस घटना से पूर्व याचिकाकर्ता के खिलाफ 15 आपराधिक प्रकरण दर्ज हो चुके थे। हालांकि अधिकांश में उसका दोष मुक्त होना बताया गया है। लेकिन फिर भी उसकी आपराधिक पृष्ठभूमि को यहां पर नजरअंदाज किया जाना उचित नहीं है।

पाली में खड़े ट्रक में घुसी कार, 4 की मौत, 3 घायल

जयपुर टाइम्स

पाली(निसं.)। पाली में शुक्रवार सुबह एक तेज रफ्तार कार सड़क पर खड़े ट्रक से जा टकराई। हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई और 3 घायल हो गए। हादसा इतना भीषण था कि कार के परखच्चे उड़ गए। इस हादसे में रावल समाज के अध्यक्ष सोहनलाल रावल के बेटे-बहू और पोते की जान गई है। सुमेरपुर सदर थाने के एसएचओ भगाराम ने बताया कि हादसा सुबह करीब सवा 3 बजे सुमेरपुर के सदर थाना क्षेत्र में ब्यावर-पिंडवाड़ा हाईवे पर जाखा नगर बाइपास पर हुआ। भगाराम के मुताबिक संभवत नींद की झपकी आने से ड्राइवर कार से संतुलन खो बैठा और कार सड़क किनारे खड़े ट्रक से जा टकराई। पुलिस के मुताबिक संभवत ड्राइवर को नींद आने की वजह से यह टक्कर हुई है। पुलिस के मुताबिक संभवत ड्राइवर को नींद आने की वजह से यह टक्कर हुई है। इस हादसे में पाली जिले के डायलाना कलां गांव (खिंवाड़ा) निवासी सुरेश रावल (49) पुत्र सोहनलाल रावल, सीता (45) पत्नी सुरेश रावल, प्रहलाद (14) पुत्र सुरेश रावल और विष्णु (14) पुत्र उत्तम रावल की मौत हो गई। वहीं, अनिता (38) पत्नी प्रवीण रावल, दिया (18) पुत्री प्रवीण रावल, हर्षिता (18) पुत्री सुरेश रावल निवासी डायलाना कलां घायल हो गए। सुमेरपुरा एसएचओ भगाराम मीणा ने बताया कि हादसा सुबह करीब सवा 3 बजे हादसा हुआ। कार में 7 लोग सवार थे, जिनमें से 4 की मौत हो गई और 3 घायल हैं। सभी कार सवार मुंबई से पाली जिले के खिंवाड़ा थाना इलाके के डायलाना कला गांव आ रहे थे। इस दौरान सड़क किनारे ढाबे पर खड़े ट्रक में तेज रफ्तार कार पीछे से घुस गई।

प्रदेश में बंद रास्तों को खुलवाएगी भजनलाल सरकार

जयपुर टाइम्स

जयपुर/झुंझुनूं(कासं.)। प्रदेश में खेतों और घरों में जाने के लिए रास्ते ना होने की शिकायतें काफी संख्या में आती हैं। न्यायालयों में रास्तों के विवाद के मामले भी लम्बे समय से चल रहे हैं। ऐसे में राजस्थान की भजनलाल सरकार ने पहली बार इन बंद रास्तों को खोलकर आमजन को राहत देने के लिए 'नया रास्ता' दिखाया है। दरअसल, पूरे प्रदेश में एक मई से 'रास्ता खोलो अभियान' शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीणों, किसानों और ढाणियों में रहने वाले लोगों को सुगम आवागमन की सुविधा प्रदान करना है। झुंझुनूं जिले में भी पहले दिन एक दर्जन के करीब बंद रास्तों को अधिकारियों ने खुलवाया है। जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने बताया कि उपखंड स्तर, जिला स्तर और राज्य सरकार को रास्तों के विवादों को लेकर जो भी परिवाद प्राप्त हुए हैं, उन्हें सूचीबद्ध कर संबंधित अधिकारियों को सौंपा गया है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे आपसी समझाइश और कानून सम्मत कार्रवाई के ज़रिए इन रास्तों को खुलवाएं, ताकि आमजन को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि इस अभियान से अधिक से अधिक लोगों को फायदा देने का प्रयास किया जाएगा। इस अभियान में उन सार्वजनिक रास्तों को प्राथमिकता दी जा रही है जो राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज हैं लेकिन किसी न किसी कारणवश बंद हो चुके हैं और जिनके बंद होने से बड़ी संख्या में काश्तकार या ग्रामवासी प्रभावित हैं। ऐसे प्रचलित रास्ते जो ढाणियों में रहने वाले लोगों की ओर से वर्षों से उपयोग किए जा रहे हैं लेकिन अब अवरुद्ध हो चुके हैं, उन्हें भी खोलने की कार्यवाही की जा रही है।

सैंकड़ों की संख्या में रास्तों का विवाद निपटेगा

अभियान के तहत राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251 के तहत निर्णीत उन रास्तों को भी क्रियान्वित किया जाएगा, जिनका अब तक अमल नहीं हुआ है। साथ ही, जिन रास्तों का रिकॉर्ड में अंकन नहीं हुआ है, उनका सर्वेक्षण कर उन्हें रिकॉर्ड में दर्ज करने की कार्यवाही भी अभियान के दौरान की जाएगी। जिला कलेक्टर ने बताया कि इस अभियान से झुंझुनूं में सैंकड़ों की संख्या में रास्तों का विवाद निपटेगा और वर्षों से बंद पड़े रास्ते दोबारा आमजन के उपयोग में लाए जा सकेंगे।

पाकिस्तान ने की जनता से अपील

दो महीने का जमा कर ले राशन, भारत करेगा हमला

कराची/एजेंसी। पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ मोदी सरकार कड़ी कार्रवाई कर रही है। शहबाज सरकार को डर है कि भारत पीओके (गुलाम कश्मीर) में सैन्य कार्रवाई कर सकता है। हाल ही में पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री इशाक डार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर यह दावा किया था कि उसके पास विश्वसनीय सबूत है कि भारत जल्द ही हम पर हमला कर सकता है। इसी बीच गुलाम कश्मीर के प्रधानमंत्री चौधरी अनवर उल हक ने शुक्रवार को विधानसभा में बताया कि बॉर्डर से सटे 13 निर्वाचन क्षेत्रों में दो महीने के लिए खाद्य आपूर्ति का भंडारण करने के निर्देश जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय सरकार ने 13 निर्वाचन क्षेत्रों में "खाद्य, दवाइयां और अन्य सभी बुनियादी आवश्यकताओं" की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए

एक अरब रुपए (3.5 मिलियन डॉलर) का इमरजेंसी कोष भी बनाया है। गुलाम कश्मीरके प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि नियंत्रण रेखा से लगे इलाकों में सड़कों के रखरखाव के लिए सरकारी और निजी मशीनरी भी तैनात की जा रही है। बता दें कि कुछ दिनों पहले प्रधानमंत्री मोदी ने हाई लेवल मीटिंग में भारतीय सेना को आतंकियों पर कार्रवाई करने के लिए खुली छूट दी है सैन्य तनाव बढ़ने की आशंका के चलते गुलाम कश्मीर में अधिकारियों ने गुरुवार को 10 दिनों के लिए 1,000 से मदरसों को बंद कर दिया।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने 'बाल विवाह मुक्त राजस्थान' अभियान का लोगो और थीम सॉन्ग किया लॉन्च

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राज्य में बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई को खत्म करने के लिए राजस्थान सरकार की ओर से चलाए जा रहे प्रयासों के तहत उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने 'बाल विवाह मुक्त राजस्थान' अभियान की शुरुआत की है। उपमुख्यमंत्री की ओर से अभियान का नया लोगो और थीम सॉन्ग भी जारी किया गया है। यह लोगो और सॉन्ग लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ते हुए बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने और अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा। इस लॉन्च के साथ, राजस्थान सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि हर बच्चे को सुरक्षा, शिक्षा और सम्मान देना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। अभियान के तहत सतर्क निगरानी, सामुदायिक भागीदारी और सरकार की त्वरित कार्रवाई को बढ़ावा दिया जाएगा। अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका ने बताया कि राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग और बाल अधिकार विभाग की ओर से नागरिकों से अपील की गई है कि यदि कहीं बाल विवाह की आशंका हो तो तुरंत चाइल्डलाइन 1098 या महिला हेल्पलाइन 181 पर जानकारी दें। उल्लेखनीय है कि राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग और बाल अधिकार विभाग के सहयोग से एक राज्य स्तरीय ओरिएंटेशन कार्यशाला भी आयोजित की गई, जिसमें बाल कल्याण समितियों, बाल संरक्षण इकाइयों, शिक्षकों, पुलिस अधिकारियों और सामाजिक संगठनों सहित 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया। उक्त कार्यशाला का समापन बाल अधिकार विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका की उपस्थिति में शपथ ग्रहण के साथ हुआ। इसमें सभी ने बाल विवाह को रोकने और हर बच्चे को सुरक्षित भविष्य देने का संकल्प लिया।

सोनिया- राहुल गांधी की बढ़ी मुश्किले: नेशनल हेराल्ड मामले में कोर्ट ने भेजा नोटिस

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली/एजेंसी।। दिल्ली की एक अदालत ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस नेताओं सोनिया गांधी और राहुल गांधी को नोटिस जारी किया है। दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट में दूसरी सुनवाई हुई। इससे पहले 25 अप्रैल को कोर्ट ने सोनिया गांधी, राहुल गांधी को नोटिस जारी करने से इनकार कर दिया था। अदालत ने ईडी से और अधिक प्रासंगिक दस्तावेज लाने और खामियों को दूर करने को कहा था। अब इस मामले में अगली सुनवाई 8 मई को होगी। इससे पहले नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी ने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर शिकंजा कसते हुए मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपपत्र दायर किया था। ईडी ने दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में आरोपपत्र दाखिल किया था। ईडी ने सोनिया और राहुल नेताओं को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपी बनाया है। आरोपपत्र में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सैम पित्रोदा, सुमन दुबे समेत कई नेताओं के नाम भी शामिल हैं। नेशनल हेराल्ड समाचार पत्र की स्थापना 1938 में पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने की थी। यह स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक था, इसे एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड यानी एजेएल की तरफ से प्रकाशित किया जाता था।

मोदी ने आंध्र को दी 58000 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात

पीएम ने 74 परियोजनाओं का शिलान्यास

जयपुर टाइम्स

अमरावती/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को आंध्र प्रदेश की राजधानी अमरावती में 58,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया, जिसमें ग्रीनफील्ड राजधानी अमरावती का निर्माण फिर से शुरू करना भी शामिल है, जो आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू का 'ड्रीम प्रोजेक्ट' है। प्रधानमंत्री ने 94 परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया, जिसमें राजधानी शहर के संस्थान, राष्ट्रीय राजमार्ग, रेलवे उन्नयन और रक्षा संबंधी प्रतिष्ठान शामिल हैं। अमरावती के निर्माण को फिर से शुरू करने के हिस्से के रूप में, पीएम ने 49,000 करोड़ रुपये की 74 परियोजनाओं की आधारशिला रखी, जिसमें विधानसभा, सचिवालय

और उच्च न्यायालय भवनों और न्यायिक आवासीय क्वार्टरों के साथ-साथ 5,200 परिवारों के लिए आवास भवनों का निर्माण शामिल है। पीएम मोदी ने ग्रीनफील्ड राजधानी शहर में भूमिगत उपयोगिताओं और उन्नत बाढ़ प्रबंधन प्रणालियों के साथ 320 किलोमीटर लंबे विश्व स्तरीय परिवहन नेटवर्क की विशेषता वाले बुनियादी ढांचे और बाढ़ शमन परियोजनाओं की नींव रखी। भूमि पूलिंग योजना के बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में ग्रीनफील्ड राजधानी अमरावती में केंद्रीय मध्य, साइकिल ट्रैक और एकीकृत उपयोगिताओं से सुसज्जित 1,281 किलोमीटर सड़कें शामिल होंगी। इसी तरह, पीएम ने 5,028 करोड़ रुपये की नौ केंद्रीय परियोजनाओं की नींव रखी, जैसे कि कृष्णा जिले के नागयालंका में डीआरडीओ का मिसाइल परीक्षण केंद्र (1,459 करोड़ रुपये), विजाग में यूनिटी मॉल (100 करोड़ रुपये), गुंटकल - मल्लप्पा गेट रेल ओवरब्रिज (293 करोड़ रुपये) और छह राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाएं (3,176 करोड़ रुपये)। विशाखापत्तनम के मधुरवाड़ा में पीएम एकता मॉल या यूनिटी मॉल की परिकल्पना राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने, मेक इन इंडिया पहल का समर्थन करने, 'एक जिला एक उत्पाद' पहल को बढ़ावा देने, रोजगार के अवसर पैदा करने, ग्रामीण कारीगरों को सशक्त बनाने और स्वदेशी उत्पादों की बाजार में उपस्थिति बढ़ाने के उद्देश्य से की गई है। जिन छह राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की उन्होंने आधारशिला रखी, उनमें एनएच के विभिन्न खंडों का चौड़ीकरण, एलिवेटेड कॉरिडोर, हाफ क्लोवर लीफ और रोड ओवर ब्रिज का निर्माण शामिल है। ये परियोजनाएं कनेक्टिविटी, अंतर-राज्यीय यात्रा को बढ़ाएंगी, भीड़भाड़ को कम करेंगी और समग्र रसद दक्षता में सुधार करेंगी। इसी तरह, गुंटकल पश्चिम और मल्लप्पा गेट स्टेशनों के बीच रेल ओवर रेल के निर्माण का उद्देश्य मालगाड़ियों को बायपास करना और गुंटकल जंक्शन पर भीड़भाड़ को कम करना है। इसी तरह, पीएम ने 254 करोड़ रुपये की तीन रेलवे परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया, जिसमें दोहरीकरण और तिहरीकरण परियोजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा, पीएम मोदी ने 3,860 करोड़ रुपये की लागत वाली आठ राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जो तिरुपति, श्रीकालहस्ती, मालाकोंडा और उदयगिरि किला जैसे धार्मिक और पर्यटन स्थलों तक निर्बाध संपर्क प्रदान करती हैं। वहीं इस कार्यक्रम की शुरुआत के दौरान आंध्र प्रदेश के डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने कहा कि 'हमारे युवाओं को बैंगलोर, चेन्नई और हैदराबाद जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जल्द ही आंध्र प्रदेश सभी लोगों के लिए नौकरियां उत्पन्न करेगा और देश-दुनिया भर से प्रतिभाओं को आकर्षित करेगा।

पहलगाम आतंकी हमला देश के लिए काला दिन- पवन कल्याण

डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने कहा कि पहलगाम आतंकवादी हमला पूरे देश के लिए सबसे काले दिनों में से एक रहा है...हमने पीड़ितों के दर्द को व्यक्तिगत रूप से देखा है। प्रधानमंत्री मोदी इस कठिन समय में देश का नेतृत्व कर रहे हैं और उन्होंने सभी नागरिकों को आतंकवाद के अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया है। मैं जानता हूं कि यह बहुत संवेदनशील समय है...इस अत्यंत कठिन क्षण के बीच भी मोदी ने समय निकाला और अमरावती आए। यह आंध्र प्रदेश के लोगों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है'।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, शनिवार 03 मई, 2025

वर्ल्ड लाफ्टर डे मनेगा कल

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। आर.डी.एन.सी.मित्तल फाउंडेशन, कम्पनी बाग विकास समिति, भारतीय योग संस्थान, पतंजलि परिवार, लाफ्टर क्लब अलवर, सर्व हितकारी योग संस्थान, लायंस क्लब अलवर मत्स्य, भारत विकास परिषद, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में वर्ल्ड लाफ्टर डे धूमधाम से मनाया जाएगा। यह आयोजन 4 मई को सुबह 6 बजे कम्पनी बाग में मनाया जाएगा। मित्तल फाउंडेशन के मुख्य ट्रस्टी एवं लाफ्टर क्लब के संस्थापक डॉ.एस.सी.मित्तल ने बताया कि लाफ्टर क्लब अलवर को 10 वर्ष पूरे होने तथा मई माह के प्रथम रविवार को वर्ल्ड लाफ्टर डे दोनों ही उपलक्ष्य में बडी धूमधाम से मनाया जाएगा। वर्ल्ड लाफ्टर डे सबसे पहले 11 जनवरी 1998 में मु बई मनाया गया था और अलवर में इसकी शुरुआत 4 मई 2015 को की गयी थी। डॉ. मित्तल ने बताया कि आजकल असंतुलित आहार, बिगती दिनचर्या, तनावपूर्ण जिन्दगी, एवं अनिंद्रा से होने वाली अनेको बीमारियों का एक मात्र ईलाज हास्य योग बताया। हास्य थेरेपी एवं योग दोनों मिलकर जीवन को सुखी रखने की एक आसान राह है और अलवर लाफ्टर क्लब तथा भारतीय योग संस्थान मिलकर यही कार्य करने का प्रयास कर रहे है जिससे बीमारियों को दूर रखने के साथ साथ तनाव मुक्त जीने का एकमात्र आसान तरीका है।

चोरों ने सरकारी स्कूल को बनाया निशाना, एमडीएम के बर्तन सहित सामान पार

जयपुर टाइम्स

राजगढ(निसं.) उपखंड के समीपवर्ती डाबला मीना गांव के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में गुरुवार रात को अज्ञात व्यक्ति विद्यालय की रसोई कक्ष का ताला तोड़कर एमडीएम के बर्तन सहित सामान चुरा ले गए। विद्यालय के संस्थाप्रधान ब्रजेश कुमार शर्मा ने बताया कि शुक्रवार सुबह जब विद्यालय में बच्चों को एमडीएम बनाने के लिए रसोई कक्ष में गया तो देखा कि रसोईघर का ताला टूटा हुआ है। कुक कम हेल्पर द्वारा रसोई कक्ष खोलने पर देखा कि रसोई में कुछ भी सामान नहीं है। उन्होंने बताया कि अज्ञात चोर सिल्वर का भगोना, परात, 3 गैस के चुल्हे, बिजली मोटर का स्टार्टर सहित खाने का सामान चुरा ले गए। उन्होंने बताया कि विद्यालय में पूर्व में भी कई बार चोरी हो चुकी है।

विशेष योग्यजनों को वितरित की गई इलेक्ट्रिकल व्हील चेयर

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में समाज कल्याण कार्यालय खैरथल-तिजारा में एक कार्यक्रम आयोजित कर जिले के पाँच मांसपेशीय दुर्विकास से पीड़ित विशेष योग्यजनों को इलेक्ट्रिकल पावर/व्हील चेयर वितरित की गई। जिला कलेक्टर ने कहा कि राज्य सरकार विशेष योग्यजनों के सशक्तिकरण हेतु लगातार प्रयासरत है और इस प्रकार की योजनाएं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान सरकार की बजट घोषणा के अंतर्गत 80% से अधिक मांसपेशियां दुर्विकास बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को इलेक्ट्रिक पावर व्हीलचेयर दि गई। समाज कल्याण अधिकारी ने बताया कि कुल 13 आवेदन प्राप्त हुए जिसमें से छटनी कर पांच जरूरतमंद विशेष योग्यजन धर्मदास, अंजू, कैलाश गुर्जर, योगेन्द्र सैनी एवं राहुल सांखला को सहायता प्रदान की गई। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अरविंद गेट, जिला समाज कल्याण अधिकारी गजराज सिंह यादव, तिलकराज शर्मा, नीरज भड़ाना एवं सत्यनारायण यादव सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जानलेवा हमले व फायरिंग का 1 और आरोपी गिरफ्तार

घटना में प्रयुक्त वाहन को किया जब्त

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निस.) दिल्ली मुम्बई एक्स्प्रेस वे पर टोलकर्मियों पर जानलेवा हमले व फायरिंग के 1 और आरोपी को थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है आरोपी 10 हजार रुपये का ईनामी था इससे पहले भी थाना पुलिस ने 10 हजार के ईनामी दो आरोपियों को पहले गिरफ्तार किया था वही एक बाल अपचारी को निरुद्ध किया था थाना पुलिस ने बताया कि 10 अप्रैल को दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस वे पर पिनान टोल पर टोलकर्मियों पर जानलेवा हमला करने के मामले के अन्य आरोपी कपिल कुमार पुत्र हरिराम को गिरफ्तार किया है वही घटना में प्रयुक्त वाहन को भी पुलिस ने जब्त किया है यह कार्यवाही राजगढ़ थानाधिकारी राजेश मीना की टीम ने की है।

युवती के आत्महत्या करने का मामला, थाने के बाहर प्रदर्शन

जोधपुर (निसं.)जोधपुर के माता का थान थाने के बाहर शुक्रवार को युवती के आत्महत्या करने के मामले में उचित कार्रवाई करने की मांग को लेकर बड़ी संख्या में महिला के परिजन और समाज के लोग एकत्रित हो गए और पुलिस से इस मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग की। प्रदर्शन में शामिल लोगों ने पुलिस से आत्महत्या के मामले में शामिल आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की। आरोप लगाया कि पूर्व में हुई मारपीट की घटना के बावजूद पुलिस ने मामला दर्ज नहीं किया और पार्षद के माध्यम से समझौते का दबाव बनाया। मृतका के परिजनों की ओर से थाने में रिपोर्ट दी गयी। इसमें बताया कि उनके परिवार के लोगों को आरोपियों की ओर से जान से मारने की धमकी दी जा रही थी। पूर्व में भी शंकर लाल और उसके बेटे ने मिलकर उनकी बहन मृतका के साथ मारपीट की।

सरकार की गोवर्धन जैविक उर्वरक, वर्मीकंपोस्ट इकाई व मृदा शक्ति संवर्धन आदि योजनाओं के माध्यम से कर रही है जैविक खेती को प्रोत्साहित

थानागाजी क्षेत्र में जैविक खेती को अपनाने से किसानों को मिल रहा है भरपूर लाभ

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। वर्तमान समय में खेती में जिस प्रकार रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि हो रही है, जिससे मृदा के उपजाऊपन में कमी आने के साथ अनाज में पेस्टिसाइड की मात्रा में वृद्धि भी हुई है। इस प्रकार के अनाज के उपयोग से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडते हैं। केंद्र व राज्य सरकार रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में कमी लाने के साथ परम्परागत रूप में की जाने वाली जैविक खेती को बढावा दे रही है। जैविक खेती से जैव विविधता के संरक्षण के साथ-साथ खेतों की मिट्टी की उर्वरता को बढ़ावा मिलता है। इसी कड़ी में कृषि विभाग की जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए संचालित योजनाओं का लाभ लेकर जिले के थानागाजी क्षेत्र में बड़ी संख्या में किसान जैविक खेती को अपना रहे हैं। क्षेत्र के जो किसान पहले अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर कृषि कर रहे थे, वे राज्य सरकार के प्रोत्साहन से जैविक खेती की तरफ उन्मुख हुए। किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि उनके द्वारा सब्जी की खेती जैसे बैंगन, टमाटर, गोभी, गाजर, मूली, पालक व मेथी इत्यादि में जैविक उर्वरकों के प्रयोग से सब्जियों का स्वाद अच्छा होने के साथ-साथ सब्जी में अच्छी पैदावार, बेहतर मिट्टी की गुणवत्ता बनी रहना, लंबे समय तक खराब ना होना, सब्जियों में बीमारी फैलाव कम होना एवं बाजार में जैविक उर्वरक के प्रयोग से तैयार सब्जियों की खपत ज्यादा होने से जैविक खेती फायदे का सौदा बनती जा रही है। इन किसानों से प्रेरित होकर क्षेत्र के अन्य किसान भी जैविक खेती की तरफ अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

किसान इन योजनाओं का ले रहे लाभ

गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना- इस योजना के तहत, राजस्थान सरकार जैविक खाद की यूनिट लगाने पर 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी प्रदान कर रही है, जिसका अधिकतम लाभ 10,000 रुपये है। इस योजना का उद्देश्य जैविक खेती को बढ़ावा देना और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करना है। वर्मीकम्पोस्ट यूनिट योजना- राजस्थान सरकार वर्मीकम्पोस्ट यूनिट स्थापित करने पर प्रति इकाई स्थापना लागत का 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी प्रदान कर रही है, जिसका उद्देश्य जैविक खाद के उत्पादन को बढ़ावा देना है। मृदा शक्ति संर्वधन योजना- योजना के अन्तर्गत किसानों को हरी खाद के लिए 3 लाख ढैंचा बीज मिनिकिट वितरित किए जाएंगे। बैल से पारम्परिक खेती को प्रोत्साहन- बजट घोषणा वर्ष 2025-26 के तहत राज्य सरकार किसानों को खेती कार्य में प्रयुक्त होने वाली बैल जोड़ी पर 30 हजार रुपये प्रति जोड़ी का अनुदान देगी। यह योजना उन किसानों के लिए एक बड़ी राहत साबित होगी जो पारंपरिक तरीकों से खेती करते हैं और महंगे कृषि यंत्र खरीदने में सक्षम नहीं हैं। इस हेतु हाल ही कृषि विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। इस प्रकार जैविक खेती एक स्थायी विकल्प है, जो न केवल किसानों के लिए फायदेमंद है, बल्कि मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद है।

कन्यादान के साथ एक सौ दौ बेटियों को दक्षता प्रमाण-पत्र दिए

बेटियों को स्किल डवलपमेंट कोर्स के बाद दिया सम्मान

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। नेक कमाई फाउंडेशन की ओर से अलवर के रिवाज रिसोर्टस में एक बेटी का कन्यादान किया गया। इस अवसर पर एक सौ दो बेटियों को ब्यूटी पार्लर दक्षता प्रमाण पत्र दिया गया, जिन्होंने एक माह का निशुल्क प्रशिक्षण लिया है। इस बार कोरोना में पिता को खो चुकी ऐसी एक बेटी का कन्यादान किया, जिसने कठिन परिस्थितियों में भी परिवार को चलाया और स्वयं भी पढ़-लिखकर लायक बनी। इस बेटी के विवाह की जानकारी मिलने पर नेक कमाई टीम ने स्वयं जाकर कन्यादान करने की इच्छा जताई जिसे परिवार ने स्वीकार कर लिया। मुख्य कोर्डिनेटर अभिषेक तनेजा ने बताया कि कार्यक्रम में इस बार मुख्य अतिथि समाज सेविका शिखा जैन, मुकेश जैन और रामावतार महावर रहे। अन्य अतिथियों में आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. बी. बी. गौतम, शिक्षाविद डॉ. जी. डी. मेहंदीरता और बीमा अधिकारी डी. डी. शर्मा थे। अध्यक्षता पुरुषार्थी धर्मशाला समिति के अध्यक्ष प्रेम गांधी ने की। कार्यक्रम की शुरूआत में संरक्षक दौलत राम हजरती ने बताया कि नेक कमाई की ओर से 1100 युवतियों को नारी सृजन प्रोजेकट प्रभारी बिंदू कपूर के नेतृत्व में सिलाई व ब्यूटी पार्लर का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिनके तीन बैच की बेटियों को प्रमाण पत्र दिए गए। नेक कमाई अब तक अलवर में 263 बेटियों का कन्यादान कर चुका है। मंच संचालन सौरभ कालरा ने किया। कार्यक्रम में नेक कमाई के शिक्षा संकल्प की प्रभारी प्रवीन बत्रा, महिला विंग प्रभारी सोनिका अरोड़ा, कमला यादव, गायत्री प्रकोष्ठ की प्रभारी प्रतिभा सिंह सहित स्वदेश कपिल, सुरेन्द्र चौहान, ज्योति शर्मा सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में दुल्हन के साथ सभी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी बेटियों ने महिला संगीत में नृत्य किया और आगे खूब पढने् व स्वावलंबी बनने का संकल्प लिया। मुख्य कोर्डिनेटर अभिषेक तनेजा ने कहा कि अलवर में पहली बार एक साथ 1100 बेटियों को निशुल्क स्किल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में नेक कमाई की ओर से बिंदू कपूर और प्रो. जी. डी. मेहंदीरता ने सभी का आभार जताया।

निजी विद्यालयों ने आवेदन में लगाएं आक्षेप

अभिभावक 5 मई तक सीबीईओं कार्यालय में करा सकते हैं दस्तावेज सत्यापन

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) निजी स्कूलों में आरटीई के तहत निशुल्क सीटों पर प्रथम वरियता सूची के पश्चात जिन विद्यालयों के द्वारा बच्चों के दस्तावेजों में कमी पाई गई है तथा अभिभावकों द्वारा निर्धारित दिनांक 24 अप्रैल तक दस्तावेज में कमी को पूर्ती नहीं कि गई है वो सभी अभिभावक 5 मई तक सीबीईओं कार्यालय में जाकर पुनः दस्तावेज अपलोड का आवेदन देकर सत्यापित करवा सकते हैं। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी लीलावती मीना ने बताया कि ब्लॉक में 55 विद्यार्थियों के आवेदनों में निजी विद्यालयों द्वारा आक्षेप लगाया है। ऐसे विद्यार्थी सीबीईओं कार्यालय में आकर अपना आवेदन पत्र को अनलॉक करवाकर पुनः दस्तावेज अपलोड करवा सकते हैं। निजी विद्यालयों को 5 मई तक वैरिफाई करना आवश्यक है। यदि निजी विद्यालयों द्वारा विद्यार्थी डाटा वैरिफाई नहीं करते हैं तो 6 मई को एनआईसी के माध्यम से ऑटो वैरिफाई होंगे। पोर्टल द्वारा उपलब्ध आरटीई सीट्स पर प्रथम चरण में बच्चों का आवंटन 9 मई से 15 जुलाई तक राज्य स्तर से एनआईसी के माध्यम से होगा। उन्होंने बताया कि तृतीय चरण जिस भी विद्यार्थी द्वारा आनलाइन रिपोर्टिंग कर दी गई है उन सभी बच्चों को उनके द्वारा चयनित पांच विद्यालयों में से जिस विद्यालय में सीटें उपलब्ध है उसी विद्यालय में एनआईसी द्वारा प्रवेश दे दिया जाएगा।

इनका कहना

आरटीई के अंतर्गत निशुल्क सीटों पर ब्लॉक के 55 विद्यार्थियों के निजी विद्यालयों द्वारा आक्षेप लगाए गए हैं।वो सभी अभिभावक 5 मई तक कार्यालय में आकर अपने दस्तावेज सत्यापित करवा सकते हैं

लीलावती मीना मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजगढ़

कांग्रेस का आरोपः भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार फेल हो गई है-मिश्रा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कांग्रेस कमेटी अलवर के जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने जिले में बिगडती कानून व्यवस्था पर चिंता करते हुए आक्रोश व्यक्त किया है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कहा की जिले की बिगड़ती कानून व्यवस्था से भय का माहौल बन गया है। महिलाओं, छात्राओ एवं आमजन असुरक्षित महसूस कर रहे है,अलवर में नीट की छात्रा का अपहरण करके गैंगरेप किया गया है, कई दिन बीत जाने के बाद भी गैंगरेप के दोषी आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो रही है। आरोपी खुलेआम घूम रहे हैं, यह चिंताजनक है, उन्होंने कहा कि प्रदेश की पर्ची सरकार से कानून व्यवस्था नही संभल पा रही रही है। भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार फेल हो गई है। जिलाध्यक्ष मिश्रा ने भाजपा की प्रदेश सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि महिला सशक्तिकरण की बात करने वाले बीजेपी के नेता चुप बैठे है, हालात ये है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को अपनी ही भाजपा सरकार के खिलाफ न्याय के लिये सडकों पर उतरना पड रहा है, ये घटना केवल कानून

व्यवस्था ही नही बल्कि सरकार की विफलता है। राजस्थान के मु यमंत्री भजनलाल शर्मा को इस प्रकरण में तुरंत कार्यवाही करते हुए चीफ सेक्रेटरी और ष्ठत्रक्क को आदेश करना चाहिए और इस तरह के अपराधियों के खिलाफ शीघ्र कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

गिवअप अभियान के तहत अपात्रों पर सख्ती, पात्रों को मिलेगा खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ

खैरथल-तिजारा(निसं.)। खाद्य सुरक्षा योजना के तहत अपात्र व्यक्तियों को बाहर करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा "गिवअप अभियान" चलाया जा रहा है। जिला रसद अधिकारी राकेश सोनी ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य योजना के लाभ को वास्तविक पात्रों तक पहुंचाना है, जिससे अपात्र लोग योजना से बाहर होकर स्वेच्छा से अपना नाम हटवाएं। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत आयकर दाता, चौपहिया वाहन धारक, सरकारी व अर्द्धसरकारी कर्मचारी सहित अन्य सक्षम व्यक्तियों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने क्षेत्र के उचित मूल्य दुकानदार के पास जाकर निर्धारित प्रपत्र भरकर योजना से अपना नाम हटवाएं। अंतिम तिथि 31 मई 2025 निर्धारित की गई है। इसके बाद जांच में अपात्र पाए जाने पर संबंधित व्यक्ति से बाजार दर पर राशन की वसूली की जाएगी एवं कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी। जिला रसद अधिकारी ने बताया कि वर्तमान में जिले में प्रत्येक सप्ताह 20 अपात्र व्यक्तियों को नोटिस जारी किए जा रहे हैं। जांच के उपरांत यह कार्यवाही की जा रही है। यदि नोटिस के बावजूद अपात्र व्यक्ति स्वेच्छा से नाम नहीं हटाता है, तो नियमानुसार कठोर कानूनी कदम उठाए जाएंगे। जिला रसद अधिकारी स्वयं प्रत्येक सप्ताह दो दिन भ्रमण पर रहकर गिवअप अभियान की निगरानी करेंगे। भ्रमण के दौरान वे न्यूनतम 8 उचित मूल्य दुकानों का निरीक्षण करेंगे। इसके अलावा, जिले के प्रवर्तन अधिकारी और निरीक्षक प्रतिदिन अपने-अपने क्षेत्र में कम से कम 5 उचित मूल्य दुकानों का निरीक्षण करेंगे तथा लाभार्थियों में से अपात्र व्यक्तियों को स्वेच्छा से नाम हटाने के लिए प्रेरित करेंगे। इस अभियान के लिए राशन डीलरों को एक विशेष आवेदन प्रपत्र उपलब्ध कराया गया है।

महाभारत समन्वय का ग्रन्थ, इसकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिकः मनोज कुमार

साहित्य परिषद जयपुर द्वारा पुस्तक विमोचन व परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित

जयपुर(कासं.) अखिल भारतीय साहित्य परिषद, जयपुर द्वारा शिक्षा संकुल परिसर में पुस्तक विमोचन एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लेखक याजवेंद्र यादव की पुस्तक 'महासंग्राम तक यात्रा' और धर्मेंद्र 'धकू' की 'कौतुक ताना' का विमोचन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सह संगठन मंत्री मनोज कुमार ने कहा कि महाभारत एक समन्वय का ग्रन्थ है, जिसमें अच्छाई और बुराई की विविध प्रवृत्तियाँ दर्शाई गई हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय का "महाभारत" समाज में फैले वैमनस्य के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक बन गया है। मनोज कुमार ने लेखक याजवेंद्र द्वारा महाभारत के पात्रों पर की गई विवेचना को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि यह पुस्तक युवाओं के लिए मार्गदर्शक साबित होगी। उन्होंने महाभारत को गीता का जनक बताते हुए इसकी शिक्षाओं को आज भी प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम में धर्मेंद्र 'धकू' की पुस्तक 'कौतुक ताना' पर विकास तिवाड़ी द्वारा लेखक से संवाद किया गया, जिसमें सामाजिक विषयों पर आधारित रेखाचित्रों की विशेषताओं पर चर्चा हुई। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों का पौधा भेंट कर सम्मान करने के साथ हुई। इस अवसर पर परिषद के प्रदेश संगठन मंत्री विपिन, महामंत्री केशव कुमार शर्मा, विभाग मंत्री विकास बागड़ा सहित अनेक साहित्यकार और पाठक उपस्थित रहे। मनोज कुमार ने बताया कि परिषद समय-समय पर ऐसे साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से लेखन को बढ़ावा देती रही है।

सिरोही में एयरपोर्ट की संभावनाएं तलाशेगा उड्डयन विभाग

मंत्री जोराराम कुमावत की गौतम कुमार दक से मुलाकात

पाली व सुमेरपुर में हैलीपेड तथा सिरोही में एयरपोर्ट की रखी मांग

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। पाली व सुमेरपुर में हैलिपेड तथा सिरोही में एयरपोर्ट बनाने जाने को लेकर शासन सचिवालय में पशुपालन एवं डेयरी तथा देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत की नागरिक उड्डयन विभाग के राज्यमंत्री श्री गौतम कुमार दक के साथ एक अहम बैठक हुई। दोनों मंत्रियों ने एयरपोर्ट व हैलिपेड के निर्माण को लेकर संभावनाएं तलाशने को लेकर चर्चा की। जोराराम कुमावत ने बताया कि सुमेरपुर एक बड़ा व्यापारिक कस्बा और उपखंड मुख्यालय है, जहां करीब 50 हजार की आबादी है। इसके आसपास के क्षेत्र में बड़े शैक्षणिक व चिकित्सा संस्थान तो हैं ही, यहां की कृषि मंडी भी ए-श्रेणी की है। इसके अलावा सुमेरपुर रेल सेवा से भी जुड़ा हुआ है। यह शहर पर्यटन की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण स्थल है। इसके पास पश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा जवाई बांध है। इस क्षेत्र में लेपर्ड सफारी क्षेत्र भी है, जहां देश-विदेश की नामी हस्तियां आती रहती हैं। यही नहीं सरकार द्वारा जवाई बांध के पास कोलीवाड़ा में फिल्मसिटी भी प्रस्तावित है, जिसके लिए 500 बीघा भूमी भी आरक्षित की जा चुकी है। इस कारण यहां देश-विदेश से पर्यटकों की संख्या में निरंतर इजाफा हो रहा है। खासकर विदेशी सैलानियों के मुख्य आकर्षण का केंद्र जवाई बांध तक पहुंचने के लिए सुमेरपुर में हैलीपैड बनाए जाने की नितांत आवश्यकता है। विश्व प्रसिद्ध टूरिस्ट पैलेस माऊंट आबू में टूरिज्म को और अधिक मजबूत बनाने के लिए सिरोही की हवाई पट्टी को एयरपोर्ट के रूप में विकसित करने की मांग को लेकर केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने नागरिक उडडयन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक से गहन मंथन किया। जोराराम कुमावत ने अवगत कराया कि सिरोही जिला मुख्यालय के पास विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल माउंट आबू है, जहां सालभर में लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। इसके अलावा क्षेत्र में रणकपुर जैन तीर्थ, सोनाणा खेतलाजी मंदिर सांडेराव, राता महावीर तीर्थ, पावापुरी जैन तीर्थ, भैरूतारक जैन तीर्थ, सुंधा माता मंदिर जैसे विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं। इसके अलावा पाली, जालोर व सिरोही जिलों के हजारों लोग देश-विदेश में कारोबार कर रहे हैं। इस कारोबारियों का समय-समय पर अपने मूल निवास आना-जाना लगा रहता है। इसके लिए उन्हें सिरोही जिला मुख्यालय से करीब 150-150 किमी. की दूरी पर स्थित उदयपुर व जोधपुर से हवाई यात्रा करनी पड़ती है। सामरिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण सिरोही जिला मुख्यालय की हवाई पट्टी को एयरपोर्ट के रूप में विकसित किया जाता है तो हर साल लाखों लोगों को फायदा होगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश सरकार नागरिक उड्डयन को पर्यटन विकास से जोड़ते हुए धार्मिक स्थलों और जिला मुख्यालयों को हवाई सेवाओं से जोड़ने की दिशा में अग्रसर है। भारत सरकार की उड़ान योजना (आरसीएस) के तहत क्षेत्रीय संपर्क को मजबूत किया जा रहा है। जिन जिलों में वर्तमान में हवाई पट्टियाँ नहीं हैं, वहाँ भविष्य की जरूरतों के अनुरूप प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर हेलीपेड निर्माण की योजना पर कार्य किया जा रहा है। इससे तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को त्वरित और सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिल सकेगी। मंत्री जोराराम कुमावत ने बताया कि पर्यटन की दृष्टि से सिरोही व सुमेरपुर बेहद महत्वपूर्ण स्थल हैं। यहां हर साल हजारों पर्यटक आते हैं। उन्होंने कहा कि यदि इन शहरों को सीधे हवाई सेवा से जोड़ा जाता है तो यहां पर्यटन को और अधिक बढावा मिलेगा, जिससे राज्य सरकार की आय में वृद्दि होगी।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 की तैयारीः निष्क्रिय समितियों पर होगी सख्त कार्यवाही

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) नेहरू सहकार भवन में शुक्रवार को आयोजित बैठक में सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार मंजू राजपाल ने 'अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025' व 'सहकार से समृद्धि' अभियान की समीक्षा की। उन्होंने सभी सहकारी समितियों की समयबद्ध ऑडिट सुनिश्चित करने के निर्देश दिए और कहा कि लगातार अनदेखी करने वाली समितियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। बैठक में निष्क्रिय पैक्स के चिन्हीकरण और 30 जून तक उनके अवसायन की प्रक्रिया को एसओपी के अनुसार समय पर पूरा करने को कहा गया। उन्होंने बताया कि नई पैक्स के गठन के बाद कार्यकारिणी, ऋण सुविधा और अन्य गतिविधियों पर शीघ्र कार्रवाई होनी चाहिए। प्रत्येक जिले में कम से कम 20 सहकारी समितियों द्वारा नर्सरी संचालन का लक्ष्य तय किया गया है। इसके लिए मनरेगा के तहत भूमि वाली समितियों को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए गए। साथ ही सभी समितियों को कम से कम तीन नई गतिविधियां शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। एनसीडी पोर्टल व अन्य पोर्टल्स पर डेटा समान रूप से अपलोड करने की सख्त हिदायत दी गई। उन्होंने बीज उत्पादन, जैविक कृषि एवं निर्यात में रुचि रखने वाली समितियों को राष्ट्रीय सहकारी समितियों से जोड़े जाने की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक में वरिष्ठ अधिकारी, अतिरिक्त रजिस्ट्रार व जिला उप रजिस्ट्रार वीसी के माध्यम से शामिल हुए।

सांगानेरवासियों को बड़ी सौगातः सिरोली गांव में बनेगी आवासन मंडल की आवासीय योजना

एक दशक से ज्यादा का इंतजार हुआ खत्म, 329.17 हेक्टेयर में विकसित होगी योजना

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सांगानेर तहसील के सिरोली ग्राम के लोगों को आखिरकार बड़ी राहत मिली है। राजस्थान आवासन मंडल अब यहां 329.17 हेक्टेयर भूमि पर आवासीय योजना विकसित करेगा। वर्षों से अटकी इस योजना को लेकर ग्रामीणों में उत्साह है और चेहरों पर खुशी झलक रही है। इस संबंध में जानकारी देते हुए राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष एवं नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव वैभव गालरिया ने बताया कि यह योजना राज्य सरकार की "हर व्यक्ति को आवास" संकल्पना को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है। उन्होंने कहा कि मंडल आमजन को सस्ती एवं सुविधाजनक आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। गौरतलब है कि ग्राम सिरोली में वर्ष 2011 में ही 329.17 हेक्टेयर भूमि की अधिसूचना जारी की गई थी। इसमें से केवल 51.71 हेक्टेयर भूमि का नियोजन आवासीय उपयोग के लिए मास्टर विकास योजना-2025 में हो पाया था, जबकि शेष 277.40 हेक्टेयर भूमि "पब्लिक सेमी पब्लिक" श्रेणी में होने के कारण विकास अटका हुआ था। अब राज्य सरकार ने जयपुर विकास प्राधिकरण अधिनियम-1982 की धारा 25(4) के तहत इस शेष भूमि के उपयोग को संशोधित कर "आवासीय भू-उपयोग" घोषित कर अधिसूचित कर दिया है। हालांकि, इसमें पर्यावरणीय, जल निकाय व मनोरंजन से जुड़ी संरचनाएं पूर्ववत रखी जाएंगी। इस निर्णय के बाद अब पूरी 329.17 हेक्टेयर भूमि पर आवासन मंडल द्वारा नियोजित एवं सुनियोजित आवासीय योजना का विकास किया जा सकेगा। इससे न केवल सिरोली बल्कि पूरे सांगानेर क्षेत्र के निवासियों को आधुनिक आवासीय सुविधाएं उपलब्ध होंगी और क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी।

अंधड़ में उड़ गई टीन, महिला बाल-बाल बची, बाइक क्षतिग्रस्त

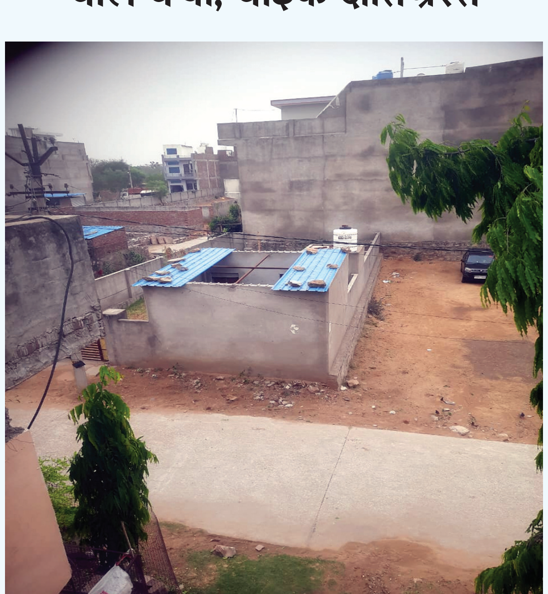

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। गुरुवार शाम शहर में आए तेज अंधड़ ने कई इलाकों में नुकसान पहुंचाया। सीकर रोड स्थित बालाजी बिहार योजना के प्लॉट संख्या ष्ठ-27 पर एक निर्माणाधीन मकान पर रखी टीन की चादरें तेज हवा में उड़ गईं। इसी दौरान वहां मौजूद एक महिला चपेट में आने से बाल-बाल बच गई। हालांकि, टीन की चादरें पड़ोसी की मोटरसाइकिल पर जा गिरीं, जिससे वाहन को नुकसान पहुंचा। मोटरसाइकिल मालिक राजेश सामोता ने बताया कि टीन को ठीक तरीके से नहीं रखा गया था। केवल पत्थरों से दबाकर रखी गई थीं, जिससे तेज अंधड़ में वे उड़ गईं। चादरें सीधा उनकी मोटरसाइकिल पर गिरीं, जिससे बाइक की हेडलाइट, मडगार्ड और साइड पैनल टूट गया। घटना के समय महिला मकान के पास खड़ी थी, लेकिन टीन कुछ इंच के फासले से निकल गई, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई। गनीमत रही कि कोई गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ। स्थानीय निवासियों ने निर्माणाधीन मकानों पर लापरवाही से रखे गए सामान को लेकर चिंता जताई है और नगर निगम से सख्ती बरतने की मांग की है। लोगों का कहना है कि मानसून से पहले ऐसी लापरवाही बड़े हादसों का कारण बन सकती है।

जयपुर टाइम्स

हमारे यहॉ दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक एवं मासिक समाचार पत्रो की प्रिंटिंग की जाती है।

70142177770

सी-588, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, जयपुर-13

सांवलिया सेठ के भंडार से फिर टूटा रिकॉर्डः अप्रैल में 25 करोड़ से अधिक का चढ़ावा, 1 किलो सोना और 95 किलो चांदी प्राप्त

जयपुर टाइम्स

चित्तौड़गढ़(निसं.) मेवाड़ क्षेत्र स्थित श्री सांवलिया सेठ मंदिर में इस बार भक्तों की आस्था ने नया रिकॉर्ड कायम किया है। अप्रैल माह में मंदिर को नकद, ऑनलाइन और मनीऑर्डर के माध्यम से कुल 25 करोड़ 13 लाख 64 हजार 699 रुपये की भेंट प्राप्त हुई है, जो अब तक का सर्वाधिक मासिक आंकड़ा है। इससे पहले दिसंबर माह में 23 करोड़ 19 लाख 8 हजार 764 रुपये प्राप्त हुए थे। मंदिर के भंडार की गिनती का कार्य 26 अप्रैल से शुरू हुआ और पांच चरणों में पूर्ण हुआ। 1 मई तक की गई गिनती में कुल 22 करोड़ 6 लाख 8 हजार 761 रुपये नकद प्राप्त हुए। गिनती में मंदिर ट्रस्ट, बैंक और प्रशासनिक अधिकारी शामिल रहे। चरणवार गिनती में 26 अप्रैल को 10 करोड़, 28 अप्रैल को 3.73 करोड़, 29 अप्रैल को 3.76 करोड़, 30 अप्रैल को 4.15 करोड़ और 1 मई को 40.58 लाख रुपये प्राप्त हुए। 27 अप्रैल को गिनती अवकाश के चलते नहीं हुई। भक्तों ने डिजिटल माध्यमों से भी भक्ति का परिचय दिया। ऑनलाइन ट्रांसफर और मनीऑर्डर के माध्यम से 3 करोड़ 7 लाख 55 हजार 938 रुपये की राशि प्राप्त हुई। इस तरह कुल भेंट राशि 25 करोड़ रुपये से अधिक पहुंच गई, जो श्रद्धालुओं की बढ़ती आस्था और मंदिर ट्रस्ट की पारदर्शिता को दर्शाती है। चढ़ावे में कीमती धातुओं का योगदान भी उल्लेखनीय रहा। मंदिर के भंडार से 987 ग्राम सोना और 49 किलो 330 ग्राम चांदी प्राप्त हुई। वहीं, भेंट कक्ष से 87 ग्राम 650 मिलीग्राम सोना और 46 किलो 137 ग्राम 5 मिलीग्राम चांदी मिली। कुल मिलाकर अप्रैल माह में 1074 ग्राम 650 मिलीग्राम सोना और 95 किलो 467 ग्राम 5 मिलीग्राम चांदी चढ़ावे में प्राप्त हुई। सांवरा सेठ की ख्याति अब देशभर में फैली हुई है और भक्तों की निरंतर बढ़ती भक्ति इसका प्रमाण है।

अजमेर होटल अग्निकांडः मदद न मिलने पर मां ने बच्चे को चौथी मंजिल से फेंका, पति की गिरने से मौत, गुजरात के दंपती सहित 4 की जान गई

जयपुर टाइम्स

अजमेर(निसं.) डिग्गी बाजार इलाके में गुरुवार सुबह होटल नाज में भीषण आग लगने से चार लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतकों में नई दिल्ली के मोहम्मद जाहिद और गुजरात के अमरेली जिले के दंपती अल्फेज नूरानी, उनकी पत्नी शबनम और डेढ़ साल का बेटा अरमान शामिल हैं। दिल्ली की रेहाना अपने पति जाहिद और बच्चों के साथ होटल की चौथी मंजिल पर ठहरी थीं। आग लगने पर होटल स्टाफ मौके से भाग गया। रेहाना ने बताया कि उन्होंने मदद के लिए चिल्लाया, लेकिन कोई नहीं आया। गेट नहीं खुलने पर पति ने खिड़की का कांच तोड़ा और बाहर तारों के सहारे बचने की कोशिश की, लेकिन संतुलन बिगड़ने से वह नीचे गिरकर मारे गए। वहीं, अपने बेटे को बचाने के लिए रेहाना को मजबूरन उसे नीचे फेंकना पड़ा। बच्चा गंभीर रूप से घायल है और ह्रष्ट में भर्ती है। गुजरात के नूरानी परिवार की मौत कमरे में दम घुटने से हुई। वेंटिलेशन नहीं होने के कारण वे धुएं में ही बेहोश हो गए और जान नहीं बच सकी। हादसे के समय वे नींद में थे। नाज होटल की तंग गलियों में स्थिति और बिना आपात निकासी व्यवस्था की वजह से बचाव कार्य में भी काफी दिक्कतें आईं। स्थानीय लोगों और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, होटल का एसी फटने से आग लगी। हादसे के करीब 30 मिनट बाद फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची। नगर निगम फायर ऑफिसर के अनुसार, सभी मौतें या तो दम घुटने या ऊंचाई से गिरने के कारण हुई हैं, जलने से नहीं। इस घटना में होटल स्टाफ की लापरवाही उजागर हुई है। होटल में ना कोई इमरजेंसी एग्जिट था, ना अलार्म सिस्टम, और ना ही आग से निपटने की कोई तैयारी। रेहाना ने होटल मालिक और स्टाफ के खिलाफ केस दर्ज कराया है। घटना के बाद से इलाके में शोक और आक्रोश का माहौल है।

'हरियालो राजस्थान' अभियान के तहत 32 लाख पौधे लगाने की तैयारी, पौधों की जियो टैगिंग पर जोर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष 'हरियालो राजस्थान' अभियान के तहत बड़े स्तर पर वृक्षारोपण किया जाएगा। कृषि, उद्यानिकी और कृषि विपणन विभाग मिलकर लगभग 32 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे हैं। इनमें छायादार और फलदार पौधों को प्राथमिकता दी जाएगी। शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी राजन विशाल की अध्यक्षता में शुक्रवार को पंत कृषि भवन में आयोजित बैठक में 'हरियालो राजस्थान' अभियान सहित कृषक उत्पादक संगठनों की प्रगति, ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट और राजस्थान स्टेट एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन लिमिटेड की समीक्षा की गई। श्री राजन विशाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि लगाए जाने वाले हर पौधे की जियो टैगिंग 'हरियालो राजस्थान' मोबाइल एप के माध्यम से की जाए, ताकि उनकी निगरानी और देखरेख सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में आत्मनिर्भरता के लिए नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल-तिलहन मिशन 2024-25 से प्रारंभ किया गया है, जिससे खाद्य तेल उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। इसके तहत ऑयल मील स्थापना को प्रोत्साहित किया जाएगा। शासन सचिव ने एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत जीआई टैग प्राप्त करने के प्रयासों पर भी बल दिया। इससे राज्य के कृषि उत्पादों को वैश्विक पहचान मिलने के साथ उनके निर्यात में वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेंगी। बैठक में आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल, आयुक्त उद्यानिकी सुरेश कुमार ओला, निदेशक कृषि विपणन राजेश कुमार चौहान सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

विभिन्न छात्रवृति योजनाओं की अंतिम तिथि में बढ़ोतरी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने छात्र-छात्राओं की सुविधा और मांग के आधार पर विभाग द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृति योजनाओं की अंतिम तिथि में बढ़ोतरी की है। निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव बचनेश अग्रवाल ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 में राजस्थान राज्य के मूल निवासियों के लिए विभिन्न छात्रवृति योजनाओं में अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति/अति पिछड़ा वर्ग/अन्य पिछडा वर्ग/आर्थिक पिछड़ा वर्ग/विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्धघुमंतु समुदाय/मिरासी एवं भिश्ती समुदाय तथा मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजनाओं में राज्य की राजकीय/निजी मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं एवं राज्य के बाहर संचालित राष्ट्रीय/राजकीय स्तर की शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में प्रवेशित/अध्ययनरत (कक्षा 11 व 12 के अतिरिक्त) शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाई है। श्री अग्रवाल ने बताया कि शिक्षण संस्थाओं के छात्रवृति पोर्टल पर पंजीयन/नवीनीकरण, कोर्स मैपिंग, मान्यता एवं पाठयक्रमवार फीस स्ट्रक्चर आदि को अद्यतन (अपडेट) करने के लिए अन्तिम तिथि 28 मई, 2025 निधारित की गई है। साथ ही उत्तर मैट्रिक छात्रवृति के लिए विद्यार्थियों द्वारा पेपरलेस आनलाइन आवेदन पत्र पंजीकरण कर आनलाइन आवेदन पत्र भरने के लिए अंतिम तिथि/पोर्टल बन्द करने की तिथि को बढ़ाकर 31 मई, 2025 किया गया है। शेष शर्तें यथावत रहेंगी। निदेशक ने बताया कि अभ्यर्थी विभाग के वेब पोर्टल www.sjmsnew.rajasthan.gov.in/ scholarship अथवा एसएसओ पोर्टल पर स्कॉलरशिप एसजेई एप अथवा मोबाइल ऐप एसजेईडी एप्लीकेशन के माध्यम से ऑनलाइन पेपरलेस छात्रवृति आवेदन कर सकते हैं।

पीएम-किसान योजना के तहत राज्यभर में 1 से 31 मई तक सेचुरेशन कैम्पेन का आयोजन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के तहत राजस्थान में 1 मई से 31 मई, 2025 तक 30 दिवसीय सेचुरेशन कैम्पेन चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य पात्र लेकिन वंचित कृषकों को योजना से जोड़ना तथा योजना से जुड़े अनिवार्य कार्यों को पूर्ण कराना है। अभियान के दौरान प्रत्येक ग्राम स्तर पर विलेज नोडल अधिकारी नागरिक सेवा केंद्र के संचालक एवं इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक के समन्वयक उपस्थित रहेंगे। ऐसे किसान जो योजना की पात्रता रखते हैं लेकिन अब तक आवेदन नहीं कर पाए हैं, वे इन कैम्पों में जाकर आवेदन प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं। योजना के तहत किसानों के लिए फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनवाना अनिवार्य कर दिया गया है। आगामी किश्तें केवल उन्हीं किसानों को प्रदान की जाएंगी जिनके पास फार्मर आईडी होगी। जिन किसानों की आईडी अभी नहीं बनी है, वे नजदीकी पटवारी या तहसीलदार से संपर्क कर आईडी बनवा सकते हैं। इसके साथ ही फॉरेस्ट रिजर्व एक्ट के पट्टा धारक एवं पीवीटीजी (अत्यंत कमजोर जनजाति समूह) किसान भी योजना का लाभ लेने के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ जिला नोडल अधिकारी (पीएम-किसान) कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं। कैम्पों में किसान ई-केवाईसी, आधार सीडिंग फार्मर आईडी पंजीकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्य पूरे कर सकेंगे, जिससे उन्हें भविष्य में योजना की किश्तों का समय पर लाभ मिल सके।

सीकर में 10-10 हजार के 4 इनामी बदमाश गिरफ्तार, 5600 ग्रुप के हैं बदमाश, ठिकाने बदलकर काट रहे थे फरारी

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं.)। सीकर जिले की दादिया थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरके ग्रुप 0056 के सहयोगी ग्रुप 5600 के चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी 10-10 हजार के इनामी बदमाश हैं। जो अपने ठिकाने बदलकर रह रहे थे। जिसके कारण वे पुलिस हिरासत से बाहर थे। जानकारी के अनुसार, बदमाशों ने 25 नवंबर 2024 को एक शादी समारोह से लौट रहे श्रवण, अशोक कुमार व सुरेश मुवाल निवासी भादवासी (सीकर) पर जानलेवा हमला कर 8.85 लाख रुपए की लूट की थी। घटना लक्ष्मण का बास में सिकर-झुंझुनूं सड़क मार्ग पर टीवीएस शोरूम के पास रात करीब 8.15 बजे हुई थी। हमलावरों ने सुरेश मुवाल की फॉर्च्यूनर गाड़ी को घेरकर तोड़फोड़ की और उसे गंभीर रूप से घायल कर सड़क किनारे खाई में फेंक दिया था। सुरेश के साथी अशोक कुमार ने भागकर अपनी जान बचाई, लेकिन हमलावरों ने सुरेश पर पिस्टल से फायरिंग की और उसे जबरन अपनी गाड़ी में डालकर किडनैप कर लिया। कुछ दूरी पर ले जाकर बदमाशों ने उसे लोहे के धारदार हथियारों से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। हमलावरों ने सुरेश के दोनों हाथ तोड़ दिए और उसे मृत समझकर फरार हो गए। बदमाशों ने धमकी दी कि सुरेश के भाई श्रवण और उसके परिवार को भी जान से मार देंगे। दादिया थाना पुलिस ने सुरेश मुवाल की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने तकनीकी संसाधनों और साइबर सेल की मदद से चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान संदीप कुमार (30), विकास बाटड़ (27), अनिल ढाका उर्फ सोनू (21), और रोहित कुमार (28) के रूप में हुई है।आरोपी झुंझुनूं और हनुमानगढ़ जिले के निवासी हैं। पुलिस ने आरोपियों को पकड़ने के लिए सीकर, झुंझुनूं, जयपुर, हरियाणा, गुड़गांव और दिल्ली में छापेमारी की। पुलिस ने इससे पहले 10 हजार के इनामी बदमाश मनोज मेघवाल को 12 अप्रैल और 25 हजार के इनामी मास्टरमाइंड मुख्य आरोपी रविंद्र कटेवा को 28 अप्रैल को गिरफ्तार कर लिया था। एक अन्य आरोपी महेंद्र कुमार ढींवा को 27 दिसंबर 2024 को गिरफ्तार किया गया था। पुलिस ने घटना में शामिल 20 बोलेरो कैंपर गाड़ियों को भी जब्त किया। मास्टरमाइंड मुख्य आरोपी रविंद्र कटेवा को 28 अप्रैल को पुलिस ने पकड़ लिया। कटेवा व उसके साथी रोजाना गाड़ियों की नम्बर प्लेट बदलकर पुलिस को चकमा देते थे और भागे जाते थे।

उदयपुर में फर्जी जमीन मालिक बनकर बेची जमीन, डमी खातेदार महिला सहित 4 आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर(निसं.)। उदयपुर की बड़गांव थाना पुलिस ने फर्जी भू-स्वामी बनकर करोड़ों रुपए की बेशकीमती जमीन का विक्रय करने के मामले में डमी खातेदार महिला सहित 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी पूरणसिंह राजपुरोहित ने बताया कि प्रार्थी बदामीबाई पत्नी मोतीलाल सुथार निवासी बेडवास ने थाने में रिपोर्ट दी थी। जिसमें बताया कि उसकी खातेदारी की 10 बीघा जमीन रकमपुरा बेड़वास में है जिसकी किसी महिला ने फर्जी बदामीबाई बनकर किसी अन्य को रजिस्ट्री करवा दी। मेरे स्वामित्व की 10 बीघा खातेदारी जमीन को बदामीबाई बनकर क्रेता अर्जुनसिंह पिता भोपालसिंह के पक्ष में विक्रय पत्र तैयार करवा दिया है। जिसमें गवाह के तौर पर गजेंद्र और हमेरसिंह ने हस्ताक्षर किए हैं। इस प्रकार इन तीनों और अन्य ने मिलकर धोखाधड़ी पूर्वक मेरी खातेदारी जमीन का कूटरचित दस्तावेज से विक्रय पत्र सम्पादित करा दिया है। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने टीम का गठन करते हुए जांच शुरू की। जिसमें पता लगा कि मूल खातेदार बदामीबाई की जगह डमी खातेदार सूरजबाई पत्नी बगदीराम निवासी कुराबड़ थी। पुलिस ने महिला के साथ तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। थानाधिकारी ने बताया कि डमी खातेदार सूरजबाई के अलावा आरोपी शंकरलाल पिता देवीलाल, कमलेशदास पिता मोहनदास, रमेशगिरी पिता गणेशगिरी को गिरफ्तार किया गया।

एटमी संयंत्रों की सुरक्षा का सवाल

इनके रिसाव या विस्फोट के कारण तापक्रम इतना अधिक बढ़ जाता है कि धातु तक पिघल जाती है। सोलह किलोमीटर तक चारों ओर के स्थान में विस्फोट से सारी लकड़ी जल जाती है। ऐसे रिसाव से नए-नए रेडियोधर्मी पदार्थ पर्यावरण में मिल जाते हैं जो अपने विकिरणीय प्रभाव द्वारा समस्त जैव मंडल के घटकों को प्रभावित करते हैं। मौजूदा समय में विश्व में चार सौ से अधिक परमाणु संयंत्र कार्यरत हैं जिनमें कई बार भयंकर दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं जिनके कारण पर्यावरण में रेडियोधर्मी पदार्थ फैले हैं। पच्चीस वर्ष पहले यूक्रेन में हुए चेरनोबिल एटमी हादसे से दुनिया हिल गई थी। इस घटना के बाद यूरोप में एक भी परमाणु रिएक्टर नहीं लगा। जापान के फुकुशिमा रिएक्टर में भी विस्फोट हो चुका है। हालांकि इस विस्फोट में किसी की जान नहीं गई, लेकिन इसका विकिरण सैकड़ों किलोमीटर तक फैला। भारत खुद परमाणु दुर्घटना का शिकार हो चुका है। 1987 में कलपक्कम रिएक्टर का हादसा..

पिछले दिनों परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा मुंबई स्थित भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बार्क) में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में भारत के परमाणु वैज्ञानिकों के इस दावे पर- कि हमारे यहां किसी भी परमाणु हादसे की आशंका बेहद कम है और देश के परमाणु रिएक्टर बेहद सुरक्षित हैं- भरोसा करना इसलिए कठिन है कि न सिर्फ दिल्ली के मायापुरी में हुई विकिरण की घटना में एक व्यक्ति की मौत हुई बल्कि बेहद सुरक्षित समझे जाने वाले देश के एक परमाणु रिएक्टर में चेचक जैसी संक्रमण की खामियां भी उजागर हुईं। अब भी भारतीय वैज्ञानिक गुजरात के काकरापार परमाणु ऊर्जा संयंत्र में रिसाव की गुत्थी नहीं सुलझा पाए हैं। गौरतलब है कि 11 मार्च 2016 की सुबह काकरापार में 220 मेगावाट की यूनिट में भारी जल रिसाव शुरू हो गया था और उसे आपातस्थिति में बंद करना पड़ा। परमाणु विशेषज्ञों की मानें तो एक दुर्लभ मिश्रधातु से निर्मित पाइपों पर चेचक जैसा संक्रमण देखने को मिला।यही नहीं, विफल हुए प्रशीतन चैनल में तीन दरारें भी पाई गई हैं।

यहां ध्यान देना होगा कि जिस किस्म के रिएक्टर में काकरापार में रिसाव हुआ है, उस किस्म के कुल सत्रह रिएक्टर भारत संचालित करता है और कुल मिलाकर ऐसे पांच हजार प्रशीतन चैनल हैं। चूंकि काकरापार रिएक्टर से स्वीकार्यता के स्तर से ज्यादा विकिरण का रिसाव नहीं हुआ इसलिए यह ज्यादा खतरनाक साबित नहीं हुआ। पर अहम सवाल है कि परमाणु रिएक्टरों के पास रहने वाले लोगों का जीवन किस तरह सुरक्षित माना जाए और कैसे आश्वस्त हुआ जाए कि अगर रिसाव होता है तो वे कैंसर जैसी घातक बीमारियों की चपेट में नहीं आएंगे? यह तथ्य है कि परमाणु रिएक्टरों के रिसाव या विस्फोट से इलेक्ट्रान, प्रोट्रॉन के साथ न्यूट्रान तथा अल्फा, बीटा, गामा किरणें प्रवाहित होती हैं, जिनके कारण उस क्षेत्र का तथा उसके आसपास के क्षेत्रों का समस्त पर्यावरण नष्ट हो जाता है। विभिन्न प्रक्रमों में प्रयुक्त होने वाली परमाणु भट्ठियों तथा इनमें प्रयुक्त ईंधन में रेडियोधर्मी तत्त्व होते हैं।

इनके रिसाव या विस्फोट के कारण तापक्रम इतना अधिक बढ़ जाता है कि धातु तक पिघल जाती है। सोलह किलोमीटर तक चारों ओर के स्थान में विस्फोट से सारी लकड़ी जल जाती है। ऐसे रिसाव से नए-नए रेडियोधर्मी पदार्थ पर्यावरण में मिल जाते हैं जो अपने विकिरणीय प्रभाव द्वारा समस्त जैव मंडल के घटकों को प्रभावित करते हैं। मौजूदा समय में विश्व में चार सौ से अधिक परमाणु संयंत्र कार्यरत हैं जिनमें कई बार भयंकर दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं जिनके कारण पर्यावरण में रेडियोधर्मी पदार्थ फैले हैं। पच्चीस वर्ष पहले यूक्रेन में हुए चेरनोबिल एटमी हादसे से दुनिया हिल गई थी। इस घटना के बाद यूरोप में एक भी परमाणु रिएक्टर नहीं लगा। जापान के फुकुशिमा रिएक्टर में भी विस्फोट हो चुका है। हालांकि इस विस्फोट में किसी की जान नहीं गई, लेकिन इसका विकिरण सैकड़ों किलोमीटर तक फैला। भारत खुद परमाणु दुर्घटना का शिकार हो चुका है। 1987 में कलपक्कम रिएक्टर का हादसा, 1989 में तारापुर में रेडियोधर्मी आयोडीन का रिसाव, 1993 मेंनरौरा के रिएक्टर में आग, 1994 में कैगा रिएक्टर और 11 मार्च, 2016 को काकरापार यूनिट से भारी जल रिसाव की घटना सामने आ चुकी है।

इस समय भारत में तकरीबन बाईस रिएक्टर हैं जिनकी क्षमता 6780 मेगावाट है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी यानी आईएईए के मुताबिक विश्व में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की संख्या 774 है। 243 परमाणु संयंत्रों में बिजली का उत्पादन हो रहा है। चौबीस देशों के पास परमाणु पदार्थ हथियार के लिए उपलब्ध हैं। अगर इन परमाणु रिएक्टरों की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम नहीं हुआ तो रिसाव से लाखों लोगों की जिंदगी काल की भेंट चढ़ सकती है। यहां सवाल सिर्फ रिएक्टरों में होने वाले रिसाव तक सीमित नहीं है। अब परमाणु रिएक्टर आतंकियों के निशाने पर भी हैं। ब्रसेल्स में आतंकी हमले के बाद संयुक्त राष्ट्र और आईएईए ने आशंका जताई है कि आतंकी अब परमाणु बिजलीघरों को भी निशाना बना सकते हैं। पूर्व में ब्रिटिश थिंक टैंक चाथम हाउस ने भी इन परमाणु ऊर्जा संयंत्रों पर साइबर हमले का अंदेशा जताया था। अमेरिकी संस्था 'न्यूक्लियर थ्रेट इनीशिएटिव' द्वारा पिछले वर्ष जनवरी में जारी परमाणु सुरक्षा सूचकांक में भी कुछ ऐसी ही आशंका जताई गई है।

इस सूचकांक के मुताबिक भारत परमाणु सुरक्षा के लिहाज से फिलहाल बेहतर स्थिति में है। चौबीस देशों की सूची में उसे इक्कीसवां स्थान हासिल है। भारत को सौ में छियालीस अंक मिले हैं। सूचकांक में पहले स्थान पर आस्ट्रेलिया और दूसरे तथा तीसरे स्थान पर क्रमश स्विट्जरलैंड व कनाडा हैं। भारत अंतरराष्ट्रीय सहयोग की ओर भी अग्रसर है, हालांकि देश में परमाणु सुरक्षा के लिए एक स्वतंत्र नियामक संस्था की कमी है। ऐसा माना जा रहा है कि अगर आतंकी परमाणु रिएक्टरों को निशाना बनाते हैं तो उस स्थिति में संयंत्र से बेहद खतरनाक रेडियोधर्मी विकिरण होगा और वातावरण में इनके मिलने से बड़ी संख्या में लोगों की जान जा सकती है। इसलिए कि संयंत्रों में आमतौर पर यूरेनियम और प्लूटोनियम का प्रयोग ईंधन के रूप में होता है। परमाणु वैज्ञानिकों का मानना है कि परमाणु संयंत्रों के कंप्यूटरों को साइबर हमले से बचाने के लिए इंटरनेट की सार्वजनिक सुविधा से दूर रखा जाना चाहिए। परमाणु वैज्ञानिकों द्वारा रेडियाधर्मी प्रदूषण से निपटने के लिए कई अन्य महत्त्वपूर्ण उपाय भी सुझाए गए हैं।

मसलन, परमाणु बिजलीघरों तथा रिएक्टरों की स्थापना नगरों तथा आबादी से दूर की जानी चाहिए। रिएक्टर संयंत्र के रखरखाव में सतर्कता बरती जानी चाहिए। किसी भी प्रकार की संभावित दुर्घटना से सुरक्षा व बचाव के उपायों की व्यवस्था आवश्यक है। रेडियोधर्मी तत्त्वों का प्रयोग शांति, आर्थिक व औद्योगिक विकास के लिए किया जाना चाहिए। रेडियोधर्मी तत्त्वों का प्रयोग सैनिक तथा युद्ध संबंधी उद्देश्यों के लिए पूरी तरह प्रतिबंधित होना चाहिए। परमाणु बिजलीघर में उत्पन कचरे को ऐसे क्षेत्रों में दफनाना चाहिए जहां से रेडियोधर्मी विकिरण से मानवजाति, जीव-जंतुओं और वनस्पतियों को नुकसान न पहुंचे। अंतरराष्ट्रीय कानून बना कर भूमिगत, वायुमंडल और जलमंडल में परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

आंकड़ों के मुताबिक 1945 के बाद से दुनिया में कम से कम 2060 ज्ञात परमाणु परीक्षण हो चुके हैं जिनमें से पचासी फीसद परीक्षण अमेरिका और रूस ने किए हैं। भारत हमेशा परमाणु शक्ति का उपयोग लोगों के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए करने का पक्षधर रहा है, न कि उसके सामरिक उपयोग का। भारत का तीन स्तरीय स्वदेशी परमाणु विकास का कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए ही है। यह ऊर्जा उत्पादन का एक अहम अंग है। चूंकि शीतयुद्धोत्तर युग के आर्थिक सुधारों तथा विश्व में भूमंडलीकरण के बाद आए नए बदलावों ने परमाणु कार्यक्रमों को बहुत महत्त्वपूर्ण बना दिया, लिहाजा भारत को भी अपनी बढ़ती ऊर्जा जरूरतें पूरी करने के लिए परमाणु संयंत्रों की स्थापना करना आवश्यक था। लेकिन साथ-साथ सुरक्षा का भी पुख्ता बंदोबस्त हो।

सम्पादकीय

पहलगाम के बाद पाकिस्तानी साजिशें तेज, गोलीबारी से उकसावे की चाल

पहलगाम हमले के बाद जिस तरह भारत में आक्रोश है और सरकार पर कोई बड़ी कार्रवाई करने का जन-दबाव बन रहा है, उसे देखते हुए पाकिस्तान में घबराहट है। उसने घटना के बाद सीमा पर हवाई गश्ती और चौकियों पर सैनिक दस्ते बढ़ा दिए। हालांकि वह लगातार कह रहा है कि उस हमले में उसका कोई हाथ नहीं था, उसकी जांच की पेशकश भी कर रहा है, पर वहां की सेना जिस तरह बार-बार संघर्ष विराम का उल्लंघन कर रही है, उससे जाहिर है कि वह भारतीय सैनिकों को उकसाने की कोशिश कर रही है। पहलगाम हमले के बाद से वह चार बार गोलीबारी कर चुकी है। हालांकि आमतौर पर छोटे हथियारों से गोलीबारी की जाती है, तो उसका यही मतलब होता है कि दुश्मन देश सीमा पर अपने सैनिकों की मुस्तैदी का संकेत दे रहा है। बताने का प्रयास कर रहा है कि वह किसी भी तरह की चुनौती से निपटने को तैयार है। मगर पाकिस्तानी सेना साजिशन ऐसा करती है। अक्सर वह अपने प्रशिक्षित आतंकवादियों को भारतीय सीमा में घुसपैठ कराने के मकसद से इस तरह गोलीबारी करती है। इस तरह वह अनेक बार संघर्ष विराम समझौते का उल्लंघन कर चुकी है। पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तानी सेना की गोलीबारी से यह शक गहरा होता है कि उसकी साजिश में कहीं न कहीं उसका हाथ है। यह छिपी बात भी नहीं है कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को बढ़ावा देने में मुख्य रूप से पाकिस्तानी सेना और वहां की खुफिया एजंसी का हाथ है। इसके अनेक प्रमाण मौजूद हैं। भारत सरकार अनेक आतंकी हमलों से जुड़े प्रमाण पाकिस्तान सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सौंप चुकी है। मगर पाकिस्तान हर दस्तावेज को सिरे से खारिज करता रहा है। वह खुद दहशतगर्दी के गहरे जख्म झेल चुका है, पर इस पर नकेल इसलिए नहीं कस पाता कि वहां निर्णय करने का कोई व्यवस्थित तंत्र नहीं है। वहां की सेना ने सियासी हुकूमत के ऊपर अपना वर्चस्व बना लिया है। इसलिए सरकार के स्तर पर लिया गया कोई भी निर्णय सेना अपनी मर्जी से स्वीकार या अस्वीकार करती है। दरअसल, आतंकवाद को वहां की सेना ने अपना हथियार बना लिया है और उसका इस्तेमाल वह मुख्य रूप से भारत के खिलाफ करती रही है। ऐसा लगता है कि इसी से उसका वजूद बचा और बना हुआ है। वह भारत के खिलाफ आतंकी गतिविधियां चला कर उकसाने और सीमा पर तनाव बनाए रख कर पाकिस्तानी अवाम को बरगलाने में कामयाब होती रही है। आतंकवाद और भारत के साथ तनावपूर्ण रिश्ते पाकिस्तान सरकार को भी रास आते हैं। इस तरह वह बुनियादी समस्याओं की तरफ से वहां के लोगों का ध्यान भटकाने में कामयाब हो जाती है। पाकिस्तान पूरी तरह से विफल राष्ट्र है। उसकी माली हालत निहायत खस्ता हो चुकी है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं दुर्दशा झेल रही हैं। लोगों को दो जून की रोटी के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। उधर बलूचिस्तान के विद्रोही संगठन रोज उसे गंभीर चुनौती पेश कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत के साथ सीमा पर तनाव से बुनियादी समस्याओं पर कुछ समय के लिए पर्दा पड़ जाता है।

नशे की गिरफ्त

नशीले पदार्थों का सेवन देश के दूसरे राज्यों में भी लगातार बढ़ता जा रहा है। हाल ही में बिहार में जहरीली शराब पीने से पचास से ज्यादा लोगों की मौत की खबर आई। जबकि बिहार में शराब प्रतिबंधित है। फिर भी वहां इस तरह की घटनाएं सरकार और प्रशासन की नाकामी है। हालांकि जहरीली शराब से देश के दूसरे राज्यों में भी मौतें होती रहती हैं। दरअसल, आज का युवा नशीले पदार्थों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहा है, जो उनके खुद के लिए और उससे ज्यादा देश के लिए चिंता का विषय है। युवाओं को नशे की आदत लगने की वजह से देश में अपराधों में भी बढ़ोतरी होगी। अनेक खबरों में देखा जा सकता है कि नशे की जरूरतें पूरी करने के लिए युवा चोरी, लूटपाट और यहां तक कि अपने परिवार के सदस्यों की हत्या भी कर रहे हैं। प्रशासन और नेताओं की मिलीभगत की वजह से शराब और नशे की दूसरी चीजें आज समाज में सहज उपलब्ध हैं। पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के साथ-साथ देश के अन्य राज्यों में भी बड़े-बड़े गिरोह हैं जो अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए युवा पीढ़ी को नशे की दुनिया में धकेल रहे हैं और इसमें प्रशासनिक अधिकारी और नेता भी मिले हुए हैं। कुछ वर्ष पहले युवा अगर सिगरेट भी पीता था तो छिपा कर पीता था, ताकि उसके घर वालों को पता न चले। लेकिन आज ऐसा नहीं है। अच्छे-अच्छे घरों के युवा अपने माता-पिता के सामने ही नशा करते हैं और मां-बाप भी उन्हें नहीं रोकते। शादी-ब्याह में अधिकतर युवा चाहे शराब पीते हैं। आजकल ज्यादातर रेस्तरां में और शादियों में हुक्का संस्कृति भी शुरू हो गई है। इन सबसे समाज में बुराइयां ही बढ़ रही हैं। सुप्रीम कोर्ट भी इस पर अपनी चिंता जता चुका है। सरकारें राजस्व बढ़ाने के नाम पर आंखें मूंदे रहती हैं। देश को अगर अच्छा भविष्य देना है तो नशीले पदार्थों पर पूरी तरह से सख्ती से रोक लगनी चाहिए। 'भूखे को भोजन' (संपादकीय, 26 दिसंबर) पढ़ा। यह कहा जा सकता है कि आज भारत सरकार ने फिर से एक बड़ा फैसला ले लिया है कि वह राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत अगले एक साल तक और 81.3 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देती रहेगी। इसलिए वह आगे भी फिलहाल प्रति व्यक्ति पांच किलो अनाज मुफ्त देती रहेगी। गरीबों को मुफ्त अनाज देना चाहिए, पर सच यह है कि सरकार ने कोरोना काल में इस योजना को शुरू किया था तब वाकई इसकी सख्त जरूरत थी। कारण उन दिनों पूर्णबंदी के कारण सब कुछ बंद था। इसलिए कमाई के सभी साधन भी बंद थे। तब वाकई यह बेहद जरूरी था। पर आज के समय में, जबकि सब कुछ सामान्य है और हर व्यक्ति को आज कमाकर खाने की पूरी आजादी है। इसलिए जो कमा कर खा रहा है, उसे बार-बार अनाज देकर शर्मिंदा नहीं किया जाना चाहिए। कारण कि इसी वजह से उसकी आदत बिगड़ रही है राशन की लाइन में खड़े होकर मुफ्त का अनाज लेने की। आज के समय रोजगार भी खुल चुका है और मेहनत कर कमाने का समय भी आ गया है। एक बार तो इसे 'रेवड़ी संस्कृति' कहा जाता है, दूसरी ओर वही किया जाता है। क्या यह उचित है? पिछले कई सालों से लगातार भारत विश्व भुखमरी सूचकांक में पायदान दर पायदान नीचे खिसक रहा है और अगले साल आबादी के पैमाने पर हम दुनिया का सबसे बड़ा देश बनने जा रहे हैं। इसी तरह से भोजन और पोषण संबंधी चुनौतियां भी हमारे यहां उत्तरोत्तर बढ़ रही है। इसके लिए खाद्य सुरक्षा को लेकर चिंता होना स्वाभाविक है।

सुंदरता का गणित

दरअसल, मानव शरीर की बनावट में हरेक अंग को बाकी शरीर के एक अनुपात और बाकी अंगों से उसकी समरूपता को देखा जाता है। यही तत्त्व सुंदरता का निर्माण करता है और देखने वाले किसी व्यक्ति के मन में आकर्षण का भाव पैदा करता है। हिंदी और अंग्रेजी, दोनों ही साहित्य में सुंदरता, खासतौर पर स्त्री की सुंदरता पर अनगिनत काव्य, कहानियां और शोध ग्रंथ उपलब्ध हैं। कालिदास की शकुंतला, शेक्सपियर की क्लिओपेट्रा, जायसी की पद्मावत, ग्रीक पुराणों की हेलेन ऑफ ट्रॉय, हमारे मुगल इतिहास की नूरजहां, अर्जुमंद बानो मुमताज महल, जहांआरा बेगम आदि की जादुई सुंदरता और आकर्षक व्यक्तित्व पर आज भी लिखा जा रहा है।

सुंदरता की वास्तविक परिभाषा क्या है? अचानक यह सवाल प्रासंगिक हो गया है, क्योंकि कुछ समय पहले तेईस वर्षीया मॉडल इसाबेला हदीद को दुनिया की सबसे सुंदर महिला घोषित किया गया है। यह जानना दिलचस्प है कि इसाबेला को गणित के फार्मूले की बदौलत यह सम्मान मिला है। अगर यह फार्मूला नहीं होता तो निश्चित रूप से इसाबेला का मनोनयन अब तक विवादों की भेंट चढ़ चुका होता। ग्रीक सभ्यता के एक प्राचीन शिल्पकार, चित्रकार, आर्किटेक्ट फीडिअस ने शिल्पकला को अविश्वसनीय ऊंचाई पर पहुंचाया था। उनके ओलम्पिया शहर में बनाए शिल्प को प्राचीन सात आश्चर्यों में शामिल किया गया है। फीडिअस ने जीवित मनुष्यों के शिल्प बनाने में प्राचीन ग्रीक गणित के सूत्रों का सहारा लिया था। फीडिअस के ही काम को आगे बढ़ाते हुए पंद्रहवी शताब्दी में इटली के लिओनार्दो दा विंची ने अपने शिल्पों और पेंटिंग्स के डायग्राम में इन्हीं सूत्रों के सहारे कई कालजयी चित्रों और डायग्राम बनाए जो आज भी आर्किटेक्ट की पढ़ाई करने वालों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। सैंकड़ों वर्षों से इस सूत्र की मदद से सुंदर भवनों और शिल्पों का निर्माण किया जाता रहा है। खैर, समझना यह है कि सुंदरता का गणित से क्या वास्ता? जो सुंदर है, वह बगैर किसी किंतु-परंतु के सुंदर है! इसाबेला के उदाहरण में ब्रिटिश प्लास्टिक सर्जन डॉ डी सिल्वा ने लिओनार्दो दा विंची और फीडिअस के अपनाए मानकों के आधार पर यह घोषणा की। दरअसल, मानव शरीर की बनावट में हरेक अंग को बाकी शरीर के एक अनुपात और बाकी अंगों से उसकी समरूपता को देखा जाता है। यही तत्त्व सुंदरता का निर्माण करता है और देखने वाले किसी व्यक्ति के मन में आकर्षण का भाव पैदा करता है। हिंदी और अंग्रेजी, दोनों ही साहित्य में सुंदरता, खासतौर पर स्त्री की सुंदरता पर अनगिनत काव्य, कहानियां और शोध ग्रंथ उपलब्ध हैं। कालिदास की शकुंतला, शेक्सपियर की

क्लिओपेट्रा, जायसी की पद्मावत, ग्रीक पुराणों की हेलेन ऑफ ट्रॉय, हमारे मुगल इतिहास की नूरजहां, अर्जुमंद बानो मुमताज महल, जहांआरा बेगम आदि की जादुई सुंदरता और आकर्षक व्यक्तित्व पर आज भी लिखा जा रहा है। मौजूदा दौर में दिवंगत महारानी गायत्री देवी को साठ के दशक में दुनिया की दस सुंदर महिलाओं में शामिल किया गया था। लगभग इसी दौर में मादकता का पर्याय बनी अभिनेत्री मधुबाला के सौंदर्य ने हॉलीवुड फिल्म निमार्ताओं को उन्हें अपनी फिल्म में लेने के लिए मुंबई आने पर बाध्य कर दिया था। लेकिन हाल के वर्षों में यह देखा गया है कि बदलते समय के साथ सुंदरता मापने के मापदंडो में भी परिवर्तन हुआ है। 'मिस यूनिवर्स', 'मिस वर्ल्ड', 'मिस एशिया', 'मिस इंडिया' से होता हुआ सिलसिला स्थानीय स्तर तक आ पहुंचा है। इन ांौदर्य स्पर्धाओं ने न केवल बाजार को प्रभावित करना शुरू कर दिया है, बल्कि सौंदर्य प्रसाधनों का एक अलग बाजार खड़ा कर दिया है। इन्हीं स्पर्धाओं से निकली ऐश्वर्या रॉय, सुष्मिता सेन, डायना हेडन आज अपने सौंदर्य की वजह से कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ब्रांड एंबेसडर बन कर अभिनय से अधिक धन कमा रही हैं। यह इसलिए संभव हो पा रहा है कि हमारे समाज में सौंदर्य के पैमाने जिस परिभाषा में बंधे रहे हैं, लोगों का नजरिया भी उसी के मुताबिक संचालित होता रहा है। यहां यह भी गौरतलब है कि सिनेमा ने सुंदरता को देखने के नजरिये को बुरी तरह प्रभावित किया है। नायिका को स्क्रीन पर प्रस्तुत करने के दौरान जितनी सावधानी बरती जाती है और उसे जिस कृत्रिमता से संवारा जाता है, उसे कभी न कभी दर्शक ताड़ ही जाता है। फिर भी बीते दो-तीन दशकों में नैसर्गिक सौंदर्य से उपकृत रेखा, श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित, मनीषा कोइराला जैसी नायिकाएं अभिनय के अलावा अपने रूप लावण्य से भी दर्शकों को आकर्षित करती रही हैं। कहने का आशय यह कि 'सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती हैं', इस वाक्यांश का पहला प्रयोग ईसा से तीन शताब्दी पूर्व ग्रीक में ही हुआ था। लेकिन इसके मंतव्य के बारे में लगभग सभी साहित्यकारों, लेखकों ने अपनी व्याख्या हर काल में लिखी है। इस कथन के अनुसार मनुष्य का सौंदर्य सिर्फ स्त्री सौंदर्य पर ही सीमित रह जाना सौंदर्य भाव का अपमान है। सुंदरता कई आकार और रूपों में हमारे सामने आती है। शिल्प, कविता, संगीत, गीत, भाषा, व्यवहार, रिश्ता, प्रेम, स्वस्थ तर्क,

कॉस्मेटिक सर्जरी को लेकर बोलीं रकुल प्रीत

रकुल प्रीत सिंह के एक्टिंग करियर को लगभग 15 साल हो चुके हैं। वह कई रोमांटिक फिल्मों का हिस्सा बन चुकी हैं। रकुल को फैंस उनके नेचुरल लुक के लिए भी काफी पसंद करते हैं। हाल ही में कॉस्मेटिक सर्जरी, प्रोसिजर को लेकर रकुल ने अपना नजरिया साझा किया।

भगवान ने मुझे ठीक-ठाक शक्ल दी

हाल ही में एक इवेंट में रकुल प्रीत सिंह को देखा गया। इंस्टेंट बॉलीवुड से की गई बातचीत में वह बताती हैं कि उन्हें कभी कॉस्मेटिक सर्जरी कराने का ख्याल नहीं आया। रकुल कहती हैं, 'भगवान ने मुझे ठीक-ठाक शक्ल दी है, इसलिए ऐसी बातों के बारे में सोचा नहीं है।' बताते चलें कि पिछले दिनों रकुल को पैपराजी ने मुंबई में एक गाड़ी से उतरते देखा तो उन्होंने अपने होंठों को छुपा लिया। यह वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था। इस वीडियो को देखकर यूजर्स ने कहा था कि रकुल ने होंठों पर कोई कॉस्मेटिक प्रोसिजर करवाया है या फिर फिलर (एक तरह का प्रोसिजर है, जिससे होंठ उभरे हुए नजर आते हैं) का यूज किया है।

कॉस्मेटिक प्रोसिजर को गलत नहीं मानती

आगे रकुल कहती हैं, 'हां, अगर कोई ऐसा करना चाहता है तो इसमें कुछ गलत नहीं है। देखिए पहले कई बीमारियों का इलाज नहीं था, अब है। ऐसे ही अगर कोई सुंदर दिखने के लिए कॉस्मेटिक प्रोसिजर करवाना चाहता है तो इसमें गलत कुछ नहीं है।'

इन फिल्मों में नजर आएंगी रकुल

रकुल के करियर फ्रंट की बात करें तो वह कुछ दिन पहले अर्जुन कपूर की फिल्म 'मेरे हसबैंड की बीवी' में नजर आईं। इस साल वह एक साउथ फिल्म 'इंडियन 3' कर रही हैं, साथ ही 'दे दे प्यार दे-2' में भी नजर आएंगी। इस फिल्म के पहले पार्ट में रकुल की जोड़ी अजय देवगन के साथ बनी थी।

मर्दानी 3 में रानी मुखर्जी के अलावा ये अभिनेत्री निभाएगी पुलिस का किरदार

साल 2014 में रिलीज हुई फिल्म मर्दानी में अभिनेत्री रानी मुखर्जी ने पुलिस का दमदार किरदार निभाया था। ये फिल्म काफी कामयाब रही थी। फिल्म की कामयाबी के बाद रानी मुखर्जी मर्दानी 2 में नजर आईं। यह फिल्म 2019 में रिलीज हुई। यह फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर काफी कामयाब रही। अब फैंस इसके तीसरे पार्ट का इंतजार कर रहे हैं। साल 2024 में खबर आई कि फिल्म निर्माता मर्दानी 3 पर काम कर रहे हैं। खबर के मुताबिक फिल्म मर्दानी 3 की शूटिंग इसी साल के शुरुआत में शुरू हो चुकी है। फिल्म अगले साल 2026 में होली के मौके पर रिलीज होगी।

जानकी बोदीवाला होंगी फिल्म का हिस्सा

वेबसाइट के मुताबिक अभिनेत्री जानकी बोदीवाला भी फिल्म मर्दानी 3 में अहम किरदार अदा करेंगी। जानकी बोडीवाला ने फिल्म शैतान में अच्छा रोल निभाया था। इससे रानी मुखर्जी और आदित्य चोपड़ा प्रभावित हुए हैं, इसलिए उन्होंने जानकी बोदीवाला को फिल्म में अहम किरदार दिया है। वह फिल्म में एक पुलिस का किरदार निभाएंगी। फिल्म की शूटिंग मुंबई में हो रही है। खबर है कि मर्दानी 3 दोनों फिल्मों से जबरदस्त होगी। पहले की फिल्में सामाजिक मुद्दों पर आधारित थीं। उसी तरह यह फिल्म भी जरूरी सामाजिक मुद्दों पर होगी।

जानकी बोदीवाला का बॉलीवुड में दमदार किरदार

जानकी बोदीवाला ने बॉलीवुड में शैतान फिल्म से डेब्यू किया था। इससे पहले वह गुजराती फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा थीं। अब वह बॉलीवुड में मर्दानी 3 में अहम रोल अदा करने वाली हैं।

मर्दानी 3 यशराज फिल्म्स के बैनर तले रिलीज होने वाली है। इस बैनर तले चार फिल्में रिलीज होने वाली हैं। सैयारा 18 जुलाई, वार 2 दो अगस्त, अल्फा 25 दिसंबर और मर्दानी 3 27 फरवरी 2026 को रिलीज होने वाली हैं।

करियर की शुरूआत में मुझे बदकिस्मत कहा जाता था

तमिल, तेलुगु और हिंदी फिल्मों में नजर आ चुकीं अभिनेत्री श्रुति हासन ने अपने करियर के शुरूआती दिनों को याद करते हुए बात की। फिल्मफेयर के साथ हालिया बातचीत में अभिनेत्री ने बताया कि कैसे उन्हें अपने करियर की शुरुआत में बदकिस्मत माना जाता था। क्योंकि उनकी पहली दो फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई थीं। अभिनेत्री ने कहा कि तेलुगु में यह मिथक था कि मैं बदकिस्मत हूं, क्योंकि मेरी पहली दो फिल्में नहीं चलीं। लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि उन दो फिल्मों में एक ही हीरो था। लेकिन लोग कहते थे कि उन्हें मैं नहीं चाहिए। श्रुति ने साल 2011 में सिद्धार्थ के साथ फिल्म 'अनागनागा ओ धीरुदु' और रोमांटिक ड्रामा 'ओह माय फ्रेंड' में काम किया था। ये उनकी पहली दो फिल्में थीं। दोनों फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रहीं। अभिनेत्री ने आगे बताया कि फिर पवन कल्याण सर ने मुझ पर भरोसा जताया और मेरा पूरा करियर बदल गया। अचानक बॉम्बे दिखने लगा, और तमिल दिखने लगा। एक्ट्रेस ने कहा कि यह सिर्फ लोगों की वजह से है और वे आप पर कितना भरोसा करते हैं। यह क्रिएटिव रूप से भी तब सामने आता है जब उन्हें लगता है कि आप कुछ कर सकते हैं। पवन कल्याण ने 2012 में आई 'गब्बर सिंह' में श्रुति हासन के साथ काम किया था।

साई को रिलेशनशिप में मिला धोखा

हालिया रिलीज 'ग्राउंड जीरो' में इमरान हाशमी के साथ नजर आईं अभिनेत्री साई तम्हणकर ने एक्टिंग से परे अपनी व्यक्तिगत जिंदगी, प्यार, विश्वासघात और धोखे को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने रोमांटिक रिलेशनशिप को प्रभावित करने वाले कुछ इमोशनल पैटर्न के बारे में भी अपने विचार रखे।

साई को मिला रिश्ते में धोखा

हॉटरफ्लाई के साथ हालिया बातचीत में अभिनेत्री साई तम्हणकर ने अपने एक रिलेशनशिप के बारे में बात करते हुए कहा, हां, बेशक मुझे धोखा मिला है। कम उम्र में धोखा दिया गया था। मुझे लगता है कि मेरे जीवन में बहुत पहले मेरे बहुत बुरे रिश्ते रहे हैं। मैंने इससे बहुत कुछ सीखा है। मुझे यह भी लगता है कि एक व्यक्ति के साथ रहना थोड़ा अप्राकृतिक है। मेरा मानना है कि चीट करने पर खुले तौर पर वापस आकर अपने पार्टनर को यह बताने की हिम्मत रखो कि मैंने यह किया है। आप दोनों इसके साथ शांति बनाए रखें।

साई ने बताया बहस के दौरान क्या करती हैं लड़कियां

बहस के दौरान अक्सर अनसुलझे मुद्दों के फिर से उभर आने पर साई का कहना है, तब लड़की को हर लड़ाई में यह करने की जरूरत नहीं है। लेकिन लड़कियां ऐसा करती हैं। हर लड़ाई में, अगर कोई पुरानी बात है तो। मैंने भी यह किया है, इसलिए मैं यह कह रही हूं। वह ऐसा करती है, इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए। कमिटेड रिलेशनशिप में चिंता बनी रहने और धोखे का डर सा लगा रहने पर अभिनेत्री ने कहा, जब कोई रिश्ता बनता है, तो वह बेचैनी या वह भावना अभी भी जीवित रहती है। लेकिन यह वाकई में दूरी नहीं होती है।

2013 में की शादी, दो साल बाद हो गईं अलग

साई तम्हणकर ने पहले विजुअल इफेक्ट आर्टिस्ट अमेय गोसावी से शादी की थी। दोनों ने 15 दिसंबर 2013 को शादी की, लेकिन 2015 में आपसी सहमति से अलग हो गए। हालांकि उन्होंने कभी भी अपने अलग होने का कारण सार्वजनिक रूप से नहीं बताया।

जयदीप ने बताया कैसे संभालते हैं फेम का प्रेशर

अपने अभिनय से इंडस्ट्री में एक अलग मुकाम हासिल करने वाले अभिनेता जयदीप अहलावत इन दिनों अपनी हालिया रिलीज 'ज्वेल थीफ' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म ओटीटी पर रिलीज हुई है और इसे लोगों के मिले-जुले रिस्पॉन्स मिल रहे हैं। इससे पहले अभिनेता को उनके शो पाताल लोक सीजन 2 के लिए काफी प्रशंसाएं मिलीं और उनके अभिनय को काफी सराहा गया। अब अभिनेता ने सीरीज के किरदार हाथी राम चौधरी को लेकर बात की है। साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे 'पाताल लोक' ने उनके जीवन में काफी बदलाव लाया है।

हाल ही में बातचीत में जयदीप अहलावत ने अपने सबसे मशहूर किरदार हाथी राम चौधरी को लेकर बात की। अभिनेता ने कहा, मुझे अपने आज तक निभाए गए सभी किरदार पसंद हैं। लेकिन बेशक जिसने मेरे करियर को सबसे अधिक प्रभावित किया, वह पाताल लोक था। हाथी राम ने मेरे लिए और लोगों के मुझे एक अभिनेता के रूप में देखने के तरीके में बहुत कुछ बदल दिया।

किरदार के प्रति रहना है ईमानदार

इस दौरान जयदीप अहलावत ने बैक-टू-बैक हिट परफॉर्मेंस देने के दबाव के बारे में भी बात की। अभिनेता ने कहा, यह दबाव हमेशा बना रहता है। इसलिए मैं खुद को यह याद दिलाता रहता हूं कि किरदार के साथ ईमानदार रहना है। बाकी सब सिर्फ शोर है।

हालिया रिलीज 'ज्वेल थीफ' में अपने किरदार राजन औलाख के बारे में बात करते हुए एक्टर ने कहा, इसमें स्वभाव, तड़क-भड़क और शरारत या खुराफात का एक संकेत है। यह स्टाइलिश है, लेकिन इसमें परतें भी हैं। इसकी अप्रत्याशिता और नयेपन ने मुझे सबसे अधिक उत्साहित किया। भले ही पहले भी मैंने इंटेंस और इस तरह के किरदार निभाए हों, लेकिन यह भूमिका निभाना मजेदार था।

'द फैमिली मैन सीजन 3' में दिखाई देंगे जयदीप अहलावत

वर्कफ्रंट की बात करें तो जयदीप अहलावत की हालिया रिलीज 'ज्वेल थीफ- द हीस्ट बिगिन्स' है। इसमें उनके साथ सैफ अली खान, कुणाल कपूर और निकिता दत्ता भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आई हैं। वो अब मनोज बाजपेयी की बहुप्रतीक्षित सीरीज 'द फैमिली मैन सीजन 3' में साथ नजर आएंगे।

दूल्हा बनने के अलावा राजकुमार राव ने इन फिल्मों में निभाया दमदार किरदार, खूब हुई तारीफ

राजकुमार राव की फिल्म भूल चूक माफ 9 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म में शादी में हो रही मुश्किलों को दिखाया गया है। फिल्म में राजकुमार राव की शादी होने में कई अड़चनें आती हैं। राजकुमार राव की कई फिल्में हैं जिनमें शादी के मुद्दे को दिखाया गया है। इन फिल्मों में शादी में जरूर आना, बधाई दो और विक्की विद्या का वो वाला वीडियो शामिल हैं। इस खबर में हम आपको राजकुमार राव की उन फिल्मों के बारे में बता रहे हैं जिनमें उन्होंने दूल्हे के अलावा दूसरे किरदार निभाए हैं।

भीड़

साल 2023 में रिलीज हुई फिल्म भीड़ में कोरोना महामारी के बाद उपजे हालात को दिखाया गया है। फिल्म में दिखाया गया है कि कोविड-19 महामारी के दौरान एक पुलिस अधिकारी को प्रवासी श्रमिकों को सीमा पार करने से रोकने का काम सौंपा गया है। पुलिस वाला जब लोगों की पीड़ा को देखता है तो वह लोगों की मदद करने लगता है। पुलिस अफसर के किरदार को राजकुमार राव ने अच्छे से निभाया है।

छलांग

साल 2020 में रिलीज हुई फिल्म छलांग एक स्पोर्ट्स कॉमेडी ड्रामा है। फिल्म में राजकुमार राव ने एक खेल अध्यापक की भूमिका निभाई है। फिल्म में वह एक आलसी प्रशिक्षक हैं, जो नौकरी में बने रहने के लिए न्यूनतम काम करते हैं। फिल्म में तब मजा आता है जब एक नया शिक्षक उनकी नौकरी और उनसे प्यार करने वाली महिला को छीनने की धमकी देता है। फिर राजकुमार राव एक्शन मोड में आते हैं।

न्यूटन

साल 2017 में रिलीज हुई फिल्म न्यूटन में राजकुमार राव ने रिटर्निंग ऑफीसर का किरदार निभाया है। फिल्म में राजकुमार राव को एक ऐसे इलाके में चुनाव की ड्यूटी के लिए भेजा जाता है जो राजनीतिक रूप से बहुत संवेदनशील है। राजकुमार राव अपनी ड्यूटी बखूबी निभाते हैं। फिल्म में पंकज त्रिपाठी ने अच्छी आदाकारी की है। फिल्म को फिल्मफेयर अवॉर्ड्स और नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स के अलावा कई दूसरे अवॉर्ड्स भी मिले थे।

अलीगढ़

साल 2016 में रिलीज हुई फिल्म अलीगढ़ एक प्रोफेसर पर आधारित थी। फिल्म में मनोज बाजपेयी अहम किरदार में थे। इस फिल्म में राजकुमार राव ने एक पत्रकार की भूमिका निभाई थी। यह फिल्म अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के मराठी भाषा के प्रोफेसर डॉ. श्रीनिवास रामचन्द्र सिरस पर आधारित थी। फिल्म में दिखाया गया है कि एक प्रोफेसर जिसकी फीलिंग दूसरे लोगों से अलग थी, उन्हें कितनी दिक्कतें हुईं। फिल्म में राजकुमार राव एक सच्चे पत्रकार की भूमिका निभाते हैं।

शाहिद

साल 2012 में रिलीज हुई फिल्म शाहिद एक वकील की कहानी पर आधारित थी। शाहिद आजमी जिन पर पूर्व आतंकवादी कार्यकर्ता का इल्जाम लगता है, वह बाद में एक वकील बन जाते हैं। वह उन लोगों के लिए न्याय पाने के लिए लड़ते हैं, जिन्हें आतंकवाद के झूठे आरोप में दोषी ठहराया गया है। इस किरदार को राजकुमार राव ने बखूबी निभाया है। फिल्म की खूब सराहना हुई थी।

वन फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट में सिद्धार्थ संग शामिल हुईं तमन्ना

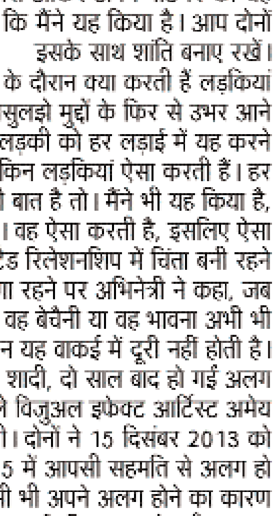

बॉलीवुड अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा की आगामी फिल्म वन फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट एक पौराणिक थ्रिलर फिल्म है, जिसको शॉर्ट में वीवन नाम दिया गया है। इस फिल्म में अब सिद्धार्थ संग एक साउथ अभिनेत्री की एंट्री हुई है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म की शूटिंग जून 2025 में शुरू होगी और यह फिल्म 2026 में जाकर रिलीज होगी। इस फिल्म में तमन्ना एक महत्वपूर्ण और दमदार किरदार निभाएंगी। वह सिद्धार्थ के साथ मिलकर मध्य भारत की पौराणिक कहानियों की दुनिया को पर्दे पर लाएंगी। इसके लिए दोनों कलाकार प्रशिक्षण भी लेंगे।

शिव-शम्भो एक शक्ति, एक मंत्र, एक विज्ञान

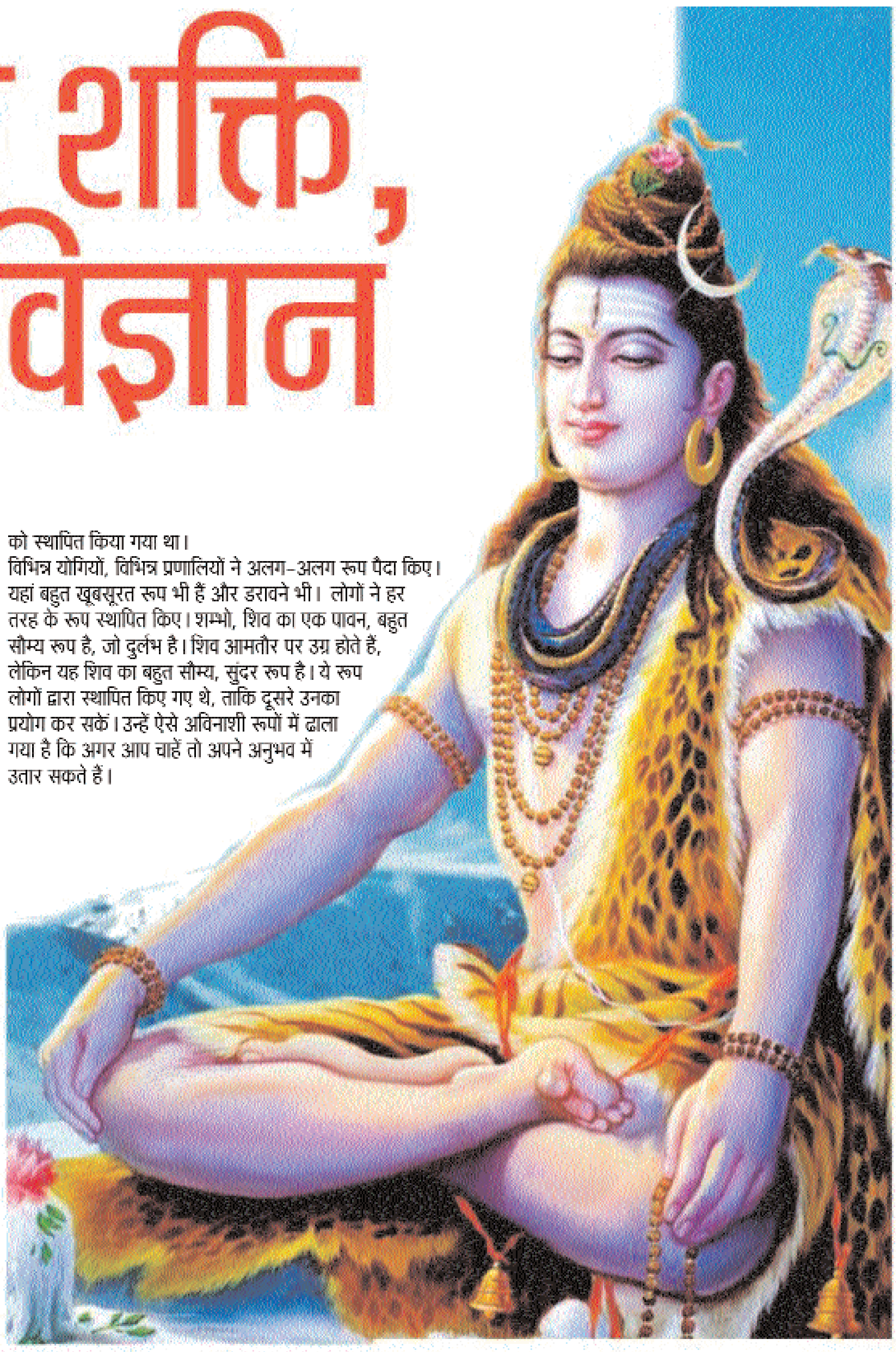

जीवन की बहुत गहन समझ के साथ हम उस ध्वनि या शब्द तक पहुंचे हैं, जिसे हम 'शिव' कहते हैं। शिव का मानवीकरण और इनकी कहानी सिर्फ आपको उनके कई आयामों के बारे में समझाने के लिए है। हम जानते हैं कि इस ध्वनि का आपके ऊपर असाधारण असर हो सकता है। यदि आप में किसी चीज को ग्रहण करने की अच्छी क्षमता है तो यह ध्वनि- शिव -आपके लिए विस्फोटक की तरह काम कर सकती है। सिर्फ एक उच्चरण आपके भीतर बहुत शक्तिशाली तरीके से विस्फोट कर सकता है। इस ध्वनि में इतनी शक्ति है। यह एक विज्ञान है, जिसे हमने बहुत गहन अनुभव से समझा है। हमने बहुत गहराई से उसे देखा है।

शिव में 'शि' ध्वनि का अर्थ मूल रूप से शक्ति या ऊर्जा होता है। भारतीय जीवनशैली में हमने हमेशा से स्त्री गुण को शक्ति के रूप में देखा है। मजेदार बात यह है कि अंग्रेजी में भी स्त्री के लिए 'शी' शब्द का ही इस्तेमाल किया जाता है। 'शि' का मूल अर्थ शक्ति या ऊर्जा जरूर है, लेकिन यदि आप सिर्फ 'शि' का बहुत अधिक जाप करेंगे तो वह आपको असंतुलित कर देगा। इसलिए इस मंत्र को मंद करने और संतुलन बनाए रखने के लिए उसमें 'व' जोड़ा गया। 'व' वाम से लिया गया है, जिसका अर्थ है प्रवीणता।

'शि-व' मंत्र में एक अंश उसे ऊर्जा देता है और दूसरा उसे संतुलित या नियंत्रित करता है। दिशाहीन ऊर्जा का कोई लाभ नहीं है, वह विनाशकारी हो सकती है। इसलिए जब हम 'शिव' कहते हैं तो हम ऊर्जा को एक खास तरीके से, एक खास दिशा में ले जाने की बात करते हैं।

महामंत्र- 'ऊं नमः शिवाय'

पूरी जागरूकता के साथ किसी मंत्र को बार-बार दोहराना दुनिया के अधिकतर आध्यात्मिक मार्गों की शुरुआती साधना रही है। अधिकतर लोग मंत्र का इस्तेमाल किए बिना अपने भीतर ऊर्जा के सही स्तर तक उठने में असमर्थ होते हैं। मैंने पाया है कि 90 फीसदी लोगों को प्रेरित होने के लिए हमेशा मंत्र की जरूरत पड़ती है। उसके बिना वे अपनी ऊर्जा कायम नहीं रख पाते।

'ऊं नम: शिवाय' वह मूल मंत्र है, जिसे कई सभ्यताओं में महामंत्र माना गया है। इस मंत्र का अभ्यास विभिन्न आयामों में किया जा सकता है। इन्हें पंचाक्षर कहा गया है। इसमें पांच मंत्र हैं। ये पंचाक्षर प्रकृति में मौजूद पांच तत्वों और शरीर के पांच मुख्य केंद्रों के प्रतीक हैं। इन पंचाक्षरों से इन पांच केंद्रों को जाग्रत किया जा सकता है। ये पूरे तंत्र यानी सिस्टम के शुद्धिकरण के लिए बहुत शक्तिशाली माध्यम हैं।

हम इस मंत्र को बहुत अलग-अलग आयामों में देख सकते हैं। फिलहाल, हम इस मंत्र को एक शुद्धिकरण की प्रक्रिया के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। साथ ही हम ध्यान की अवस्था को पाने के लिए इसे एक नींव, एक आधार के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। आप 'ऊं नमः शिवाय' का उच्चारण कर सकते हैं। सवाल बस यह है कि क्या आप इसके लिए तैयार हैं? यह किसी व्यक्ति के बारे में नहीं है। आप किसी का आह्वान नहीं कर रहे, बल्कि आप खुद को विलीन करना चाहते हैं।

अगर आपके अंदर एक खास तरह की तैयारी नहीं है तो बेहतर होगा कि आप इस मंत्रोच्चरण को खूब ध्यान से सुनें, खुद मंत्रोच्चरण न करें। शिव के एक महत्वपूर्ण पहलू को 'शम्भो' नाम से जाना जाता है। आमतौर पर शम्भो, जो मूल ऊर्जा का ही एक पहलू है, की आराधना आध्यात्मिक लोगों द्वारा की जाती है। शम्भो शब्द का अर्थ है- 'वह, जो पावन है'। आपके साथ जो सबसे पावन या शुभ बात घटित हो सकती है, वो है आपका आत्मबोध यानी अपने भीतर की चरम ऊंचाई को छू पाना।

दुर्भाग्यवश हम सोचते हैं कि शादी करना बहुत शुभ है, नौकरी में तरक्की पाना बहुत शुभ है, नया घर बनाना बहुत शुभ है। लेकिन आपके जीवन में आपके लिए सबसे शुभ बात तो यह हो सकती है कि आप अपने अंदर ऊंचाई के चरम को छुएं। शम्भो, शिव का वह रूप है, जिसमें हम उन्हें आसानी से यहां अपने पास बुला सकते हैं। उस रूप में वह किसी और रूप से अधिक बेहतर तरीके से हमें जवाब देते हैं।

कुछ खास प्रणालियों में लोग शक्तिशाली रूपों के सृजन में महारत हासिल कर लेते हैं। आपने इस तरह की बातें सुनी होंगी कि रामकृष्ण परमहंस काली को अपने हाथों से खाना खिलाते थे और वह खाती थीं। यह सौ फीसदी सच्चाई है। एक तार्किक और विचारवान दिमाग को यह पूरी तरह बकवास लग सकता है कि वह जरूर मतिभ्रम में रहे होंगे। यह मतिभ्रम नहीं था, बात सिर्फ इतनी है कि उनकी चेतनता इतनी सघन और दृढ़ थी कि वह जिस रूप में पूजा करते थे, उसका वहीं सृजन हो जाता था। आप काली को चाहते हैं, काली यहां हैं। आप जो भी चाहते हैं, वह यहीं पर पैदा हो जाएगा, क्योंकि काफी समय पहले साधना के लिए इन रूपों को स्थापित किया गया था।

विभिन्न योगियों, विभिन्न प्रणालियों ने अलग-अलग रूप पैदा किए। यहां बहुत खूबसूरत रूप भी हैं और डरावने भी। लोगों ने हर तरह के रूप स्थापित किए। शम्भो, शिव का एक पावन, बहुत सौम्य रूप है, जो दुर्लभ है। शिव आमतौर पर उग्र होते हैं, लेकिन यह शिव का बहुत सौम्य, सुंदर रूप है। ये रूप लोगों द्वारा स्थापित किए गए थे, ताकि दूसरे उनका प्रयोग कर सकें। उन्हें ऐसे अविनाशी रूपों में ढाला गया है कि अगर आप चाहें तो अपने अनुभव में उतार सकते हैं।

जहां कृष्ण ने की अनेक लीलाएं..

भगवान श्रीकृष्ण धन्य हैं, उनकी लीलाएं धन्य हैं और इसी प्रकार वह भूमि भी धन्य है, जहां वह त्रिभुवनपति मानस रूप में अवतरित हुए और ब्रजभूमि जहां उन्होंने वे परम पुनीत अनुपम अलौकिक लीलाएं कीं।

हिंदुस्थान में अनेक तीर्थ स्थान हैं, सबका महात्म्य है, भगवान के और-और भी जन्मस्थान हैं पर यहां की बात ही कुछ निराली है। यहां के नगर-ग्राम, मठ-मंदिर, वन-उपवन, लता-कुंज आदि की अनुपम शोभा भिन्न-भिन्न ऋतुओं में भिन्न-भिन्न प्रकार से देखने को मिलती है। अपनी जन्मभूमि से सभी को प्रेम होता है फिर वह चाहे खुला खंडहर हो और चाह सुरम्य स्थान, वह जन्मस्थान है, यह विचार ही उसके प्रति होने के लिए पर्याप्त है। इसी से सब प्रकार से सुंदर द्वारका में वास करते हुए भी भगवान श्रीकृष्ण जब ब्रज का स्मरण करते थे, तब उनकी कुछ विचित्र ही दशा हो जाती थी।

जब ब्रज भूमि के वियोग से स्वयं ब्रज के अधीश्वर भगवान श्रीकृष्ण का ही यह हाल हो जाता है, तब फिर उस पुण्यभूमि की रही-सही नैसर्गिक छटा के दर्शन के लिए, उस छटा के लिए जिसकी एक झांकी उस पुनीत युग का, उस जगद् गुरु का, उसकी लौकिक रूप में की गई अलौकिक लीलाओं का अद्भुत प्रकार से स्मरण कराती, अनुभव का आनंद देती और मलिन मन-मंदिर को सर्वथा स्वच्छ करने में सहायता प्रदान करती है, भावुक भक्त तरसा करते हैं। इसमें आश्चर्य ही क्या है? नैसर्गिक शोभा न भी होती, प्राचीन लीलाचिह्न भी न मिलते होते तो भी केवल साक्षात् परब्रह्म का यहां विग्रह होने के नाते ही यह स्थान आज हमारे लिए तीर्थ था, यह भूमि हमारे लिए तीर्थ थी, जहां की पावन रज को ब्रह्मज्ञ उद्धव ने अपने मस्तक पर धारण किया था।

वह ब्रजवासी भी दर्शनीय थे, जिनके पूर्वजों के भाग्य की सारहना करते-करते भक्त सूरदास के शब्दों में बड़े-बड़े देवता आकर उनकी जूठन खाते थे, क्योंकि उनके बीच में भगवान अवतरित हुए थे।

ब्रज-वासी-पटतर कोउ नाहिं।
ब्रम्ह सनक सिव ध्यान न पावत, इनकी जूठनि लै लै खाहिं॥
हलधर कह्यौ, छाक जेंवत संग, मीठो लगत सराहत जाहिं।
सूरदास प्रभु जो विश्वम्भर, सो ग्वालनके कौर अघाहिं॥

तब फिर यहां तो अनन्त दर्शनीय स्थान हैं, अनन्त सुंदर मठ-मंदिर, वन-उपवन, सर-सरोवर हैं, जो अपनी शोभा के लिए दर्शनीय हैं और पावनता के लिए भी दर्शनीय हैं। सबके साथ अपना-अपना इतिहास है। यद्यपि मुसलमानों के आक्रमण पर आक्रमण होने से ब्रज की सम्पदा नष्टप्राय हो गई है। कई प्रसिद्ध स्थानों का चिह्न तक मिट गया है, मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें खड़ी हैं, तथापि धर्मप्राण जनों की चेष्टा से कुछ स्थानों की रक्षा तथा जीर्णोद्धार होने से वहां की जो आज शोभा है, वह भी दर्शनीय ही है।

ब्रह्माजी का मोह और उनका मोहनाश

एक दिन भगवान श्रीकृष्ण और ग्वाल बाल गाय बछड़ों को चराने वन में गये। लीलाएं और क्रीडाएं करते बहुत दिन चढ़ गया। उन सब ग्वाल बालों ने गोला सा बनाया और बैठ गये और बीच में श्रीकृष्ण को बैठा कर भोजन करना शुरू कर दिया। गाय बछड़े हरी भरी घास चरते हुए दूर निकल गये। ब्रह्माजी आकाश में पहले से ही उपस्थित थे। उन्होंने सोचा कि भगवान श्रीकृष्ण की मनोहर लीला देखनी चाहिए। ब्रह्माजी ने गाय बछड़ों को ले जाकर एक गुप्त स्थान पर छिपा दिया। जब भगवान ने गाय बछड़ों को वहां नहीं पाया तो ग्वाल बालों को वहीं पर छोड़कर स्वयं ढूंढने के लिए निकले। श्रीकृष्ण के चले जाने पर ब्रह्माजी ने ग्वाल बालों को भी उसी स्थान पर छिपा दिया जहां पर गाय बछड़ों को छिपा कर रखा था। भगवान श्रीकृष्ण गाय बछड़े न मिलने पर यमुना जी के तट पर लौट आये। परंतु वहां पर उन्हें ग्वाल बाल भी नहीं दिखाई दिये। इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें चारों ओर ढूंढा परंतु वे कहीं नहीं दिखाई दिये।

उन्होंने अपने अंतरचक्षु से जान लिया कि यह सब ब्रह्माजी ने किया है। अब भगवान श्रीकृष्ण ने गाय बछड़ों और ग्वाल बालों की माताओं को तथा ब्रह्माजी को आनंदित करने के लिए स्वयं बछड़ों और ग्वाल बालों दोनों के रूप में परिवर्तित कर लिया। वे बालक और गाय बछड़े संख्या में जितने थे, उनके हाथ पैर जैसे थे, उनके पास जितनी और जैसी छड़ियां, सींग, बांसुरी, पते और छींके थे, जैसे और जितने वस्त्राभूषण थे, उनके शील, स्वभाव, गुण, नाम, रूप और अवस्थाएं जैसी थीं, जिस प्रकार वे ग्वाले खाते पीते और चलते थे, ठीक वैसे ही और उतने ही रूपों में प्रकट हो गये।

भगवान ने जिस ग्वाल बाल के जो गाय बछड़े थे उन्हें उसी ग्वाल बाल के रूप से अलग अलग ले जाकर उसके घर में घुसा दिया। ग्वाल बालों की माताएं बांसुरी की तान सुनते ही जल्दी से दौड़ आईं। ग्वाल बाल बने हुए परब्रह्म श्रीकृष्ण को अपने बच्चे समझकर हाथों में उठाक अपने हृदय से लगा लिया। इस प्रकार प्रतिदिन संध समय भगवान श्रीकृष्ण उन ग्वाल बालों के रूप में वन से लौट आते और अपनी बाल सुलभ लीलाओं से माताओं को आनंदित करते। वे माताएं उन्हें उबटन लगातीं, नहलातीं, चंदन का लेप करतीं। दूध पिलाकर लाड़ प्यार करतीं। इस तरह अंतर्यामी श्री कृष्ण गाय बछड़े और ग्वाल बालों के बहाने, गोपाल बनकर अपने बालक रूप में वत्स रूप का पालन करते हुए एक वर्ष तक वन में क्रीड़ा करते रहे।

जब एक वर्ष पूरा होने में पांच दिन शेष थे तब एक दिन भगवान श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ गाय बछड़ों को चराने वन में गये। उस समय गाय बछड़े गोवर्धन की चोटी पर घास चर रहे थे। वहां से उन्होंने ब्रज के पास ही घास चरते हुए बहुत दूर तक अपने गाय बछड़ों को देखा। बछड़ों को देखते ही गौओं को वात्सल्य प्रेम उमड़ आया। वे दौड़कर उन बछड़ों के पास आईं। वे बड़े चाव से बछड़ों के अंगों को चाटने लगीं। उन्होंने बछड़ों के साथ बालकों को भी देखा। बलराम जी ने पूछा- ये मायाजाल कहां से आ गया? तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि यह सब ब्रह्माजी ने किया है। तब तक ब्रह्माजी ब्रह्मलोक से ब्रज में लौट आये। वे विचार करने लगे कि गोकुल में जितने भी ग्वाल बाल और गाय बछड़े थे वे सब तो मेरी मायामयी शैय्या पर सो रहे हैं। ये उतनी ही संख्या में दूसरे बालक और बछड़े कहां से आ गये तथा भगवान के साथ एक वर्ष से खेल रहे हैं। इन दोनों में कौन से पहले और कौन से पीछे बना लिये गये? ब्रह्माजी जिन भगवान श्रीकृष्ण को अपनी माया से मोहित करने चले थे, किंतु उनको मोहित करना तो दूर रहा था, वे अजन्म होने पर भी अपनी माया में अपने आप मोहित हो गये।

ब्रह्माजी विचार कर ही रहे थे कि उसी क्षण सभी ग्वाल बाल और गाय बछड़े श्रीकृष्ण रूप में दिखाई देने लगे। सब के सब चतुर्भुज रूप में दिखाई देने लगे। इस प्रकार ब्रह्माजी ने सबको परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण के ही स्वरूप में देखा। वे भगवान के तेज से निस्तेज होकर मौन हो गये। उस समय ऐसे स्तब्ध होकर खड़े हो गये मानो कि ब्रज के अधिष्ठात्रा देवता के पास एक पुतली खड़ी हो। ब्रह्माजी ने भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति की। ब्रह्माजी ने भगवान की तीन परिक्रमाएं की और उनसे स्वीकृति लेकर अपने धाम को प्रस्थान कर गये।

कर्ज से जल्दी मुक्ति पाने के लिए अपनाएं यह उपाय

देश और दुनिया में हो रहे विकास से लोगो विलासिता का सुख भोगने से अपने आप को कभी दुर नही रख पाते। इन सुखों के लिए लोग कर्ज लेने से भी पीछे नही हटते। जबकि एक तरह से कर्ज मानव जीवन के लिए अभिशाप होता है। जिस व्यक्ति पर कर्ज है वो व्यक्ति जिन्दा रहते हुए भी चलती - फिरती लाश के समान है। लेकिन इन उपायों से आप कर्ज को जल्द से जल्द से चुकता कर सकते हैं-

१. अगर आप कर्ज की प्रथम किश्त शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारंभ करते है तो शीघ्र आप ऋ+ण से मुक्ति पा लेंगे।
२. घर का सारा कबाड़ अमावस्या या शनिवार को घर से बाहर करें।
३. मंगलवार को कभी क़र्ज न ले।
४. प्रतिदिन श्री सूक्त का पाठ स्फटिक श्री यंत्र के सामने करने से लक्ष्मी का आगमन होता है।
५. कभी भी बुधवार को क़र्ज न दें।
६. ५ मंगलवार हनुमान जी के मंदिर में ५-५ पीस मीठे देसी घी के रोट का भोग लगाए।
७. व्यवसाय, मकान बनवाने हेतु कर्ज जन्मकुंडली की विवेचना करवाने के पश्चात लें।
८. प्रत्येक मंगलवार ऋ+ण मोचक मंगल स्तोत्र का पाठ अवश्य करें।
९. सुबह उठते ही सबसे पहले एक मुट्ठी चावल पंक्षियों को चुगने के लिए डालिए।
१०. घर में कभी कोई भी मेहमान या अचानक कोई भी आए कुछ न कुछ अवश्य खिलाएं नही तो पानी तो अवश्य ही पिलाएं।
११. शराब, मांस, नशे की चीजों से पूरी तरह से दूर रहें।

जीवन में रंगों को महत्व

कई लोगो को सादा जीवन पसंद है तो कईयो को रंगीन। क्या कभी आपने सोचा है कि इन रंग-बिरंगे रंगों को हमारे जीवन में क्या महत्व है। रंगों का हमारे जीवन व स्वास्थ्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। कहा जाता है कि रंग नेत्रों के माध्यम से हमारे मानस में प्रविष्ट होते हैं एवं हमारे स्वास्थ्य, चिंतन, आचार-विचार आदि पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है। अत: उचित रंगों का प्रयोग कर हम वांछित लाभ पा सकते हैं। किसी जातक की सफलता उसके कर्मों और कुछ हद तक लाइफस्टाइल पर भी निर्भर करती है। वैसे तो प्रत्येक दिन का अपना अपना महत्व होता है लेकिन ज्योतिष के अनुसार सप्ताह के दिनों का संबंध ग्रहों की स्थिति पर आधारित होता है। प्रत्येक दिन का एक नंबर होता है। उन रंगों का चयन करके अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। रंग हमारे विचारों को प्रभावित करते हैं तथा हमारी सफलता व असफलता के कारक भी बनते हैं। शुभ रंग भाग्योदय कारक होते हैं और अशुभ रंग भाग्य में कमी करते हैं।

सोमवार : सफेद — मंगलवार : लाल
बुधवार : हरा — गुरुवार : पीला
शुक्रवार : सफेद — शनिवार : काला
रविवार : नारंगी

ऐसे लोगों को मिलती है कैरियर में कामयाबी

आज हर व्यक्ति पैसा कमाने के लिए निरंतर प्रयोग करता रहता है। अच्छा कैरियर किसे पसंद नही होता। अच्छे कैरियर के लिए युवा तरह-तरह कि जतन किया करते हैं। लेकिन जीवन में सफलता के लिए सबसे जरूरी है सही कैरियर का चुनाव। क्योंकि अक्सर कैरियर का सही चुनाव नही कर पाने के कारण ही व्यक्ति को जीवन में बड़ी कामयाबी नही मिल पाती है। अंक ज्योतिष में कैरियर के चुनाव के लिए एक बहुत ही आसान तरीका बताया गया है। इस तरीके को आजमाएं तो आप खुद ही अपने लिए सही कैरियर का चुनाव कर पाएंगे और अपने क्षेत्र में कामयाब व्यक्ति कहलाएंगे।

अंक ज्योतिष अनुसार हर व्यक्ति का एक मूलांक होता है। इस अंक को ज्ञात करके व्यक्ति अपने लिए सही कैरियर का चुनाव करे तो कामयाबी उसके कदम चूमती हैं क्योंकि मूलांक जिस क्षेत्र में कैरियर का संकेत देता है उस क्षेत्र में सफलता के लिए जो गुण चाहिए वह व्यक्ति में मौजूद होता है। जैसे किसी व्यक्ति का मूलांक १ होता है तो उनमें नेतृत्व की योग्यता होती है। ऐसे व्यक्ति राजनीति एवं प्रबंधन के क्षेत्र में कामयाब होते हैं। वकालत के अलावा जिन क्षेत्रों में अधिक जोश और उत्साह की जरूरत होती है जैसे सेना, पुलिस के क्षेत्र में इन्हें सफलता मिल ही जाती है। फोटोग्राफी, ग्राफिक डिजाईनर, नाविक, नौसेना, ठेकेदारी, व्यवसाय एवं शिल्पकला के क्षेत्र में भी यह कामयाब होते हैं।

सुविधाओं के लिए बनाई डबल इंजन सरकार- -अब सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं आमजन

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। आमजन को सरकार से अनवरत विद्युत आपूर्ति, पर्याप्त जलापूर्ति, अच्छी सड़क, समुचित चिकित्सा व्यवस्था सहित शिक्षा आदि की नितांत आवश्यकता होती है। भीषण गर्मी में जलापूर्ति न के बराबर हो ओर असमय पर विद्युत कटौती हो तो आमजन को अपने द्वारा चुनी गई सरकार की व्यवस्थाओं पर गुस्सा आना स्वाभाविक है। हम बात कर रहे हैं नरैना नगरपालिका क्षेत्र की, जहां गत कुछ दिनों से रात्रि के नौ बजे के लगभग भीषण गर्मी में विद्युत विभाग द्वारा विद्युत कटौती कर आमजन को परेशान किया जा रहा है। इस संदर्भ में बस स्टैंड व्यापार मंडल अध्यक्ष अनिल जैन ने व्यापारियों के साथ विद्युत विभाग के कनिष्ठ अभियंता को ज्ञापन देकर असमय विद्युत कटौती को रोककर सुचारू विद्युत आपूर्ति करने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया कि असमय विद्युत कटौती होने से आमजन में भारी आक्रोश व्याप्त है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार बने लगभग 16 माह हो गये लेकिन नरैना से दूदू जाने वाली रोड़ की हालत बेहद खराब है लेकिन कुंभकर्णी नींद में सो रही सरकार का ध्यान दूदू नरैना रोड़ को सही करवाने पर नहीं है। वहीं कस्बे में स्थित संत दादूदयाल राजकीय चिकित्सालय भी सुविधाओं के अभाव में अपना समय व्यतीत कर रहा है। सुभाष चौक स्थित उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय जीर्ण-शीर्ण अवस्था में अपने जीर्णोद्धार की राह देख रही है लेकिन सरकार के किसी जिम्मेदार अधिकारी व जनप्रतिनिधियों को आमजन की आवश्यक मूल-भूत सुविधाओं से कोई सरोकार नहीं है।

क्या सिर्फ औपचारिकता बनकर रह गए हैं "समस्या समाधान शिविर"?

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। गर्मी अपने चरम पर है और फुलेरा जैसे कस्बे में पेयजल संकट लोगों की रोज़मर्रा की बड़ी समस्या बन चुका है। जिला कलेक्टर के निर्देश पर इसी समस्या के समाधान के लिए फुलेरा नगरपालिका सभागार में शुक्रवार को एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। उपखण्ड अधिकारी अंजू वर्मा की मौजूदगी में यह शिविर संपन्न हुआ। लेकिन एक बड़ा सवाल यह है – क्या यह शिविर जनता के लिए था या केवल खानापूर्ति के लिए?

सूचना से वंचित रहे पत्रकार और आमजन - क्यों?

शिविर की कोई पूर्व सूचना न तो पत्रकारों को दी गई और न ही आम नागरिकों को। यह एक ऐसा कार्यक्रम रहा, जो "समस्या समाधान" के नाम पर बिना समस्या सुने ही सिमट गया। सवाल यह भी उठता है कि जब जनता को ही आमंत्रित नहीं किया गया, तो फिर अधिकारी किन समस्याओं का समाधान कर रहे थे?

हाजिरी में अधिकारी, गैरहाजिरी में जिम्मेदार!

शिविर में जलदाय विभाग के एईएन संजय शर्मा और कुछ पार्षद तो उपस्थित रहे, लेकिन ना तो पालिका अध्यक्ष दिखाई दीं और ना ही अधिशाषी अधिकारी। जनता की समस्याओं से जुड़े ऐसे अहम मौके पर जनप्रतिनिधियों की अनुपस्थिति केवल लापरवाही नहीं, बल्कि एक गहरी उदासीनता की ओर इशारा करती है।

पार्षद आशा सैनी का तंज

भाजपा पार्षद आशा सैनी ने इस आयोजन पर सवाल उठाते हुए कहा, "जब जनता ही नहीं बुलाई गई, तो समाधान किसका किया गया? यह तो महज औपचारिकता थी, जिसका जनता से कोई वास्ता नहीं रहा।" उनकी नाराजगी जायज़ भी लगती है, क्योंकि समस्याएं जनता की होती हैं और समाधान भी उन्हीं से संवाद के बाद निकलते हैं।

उपखण्ड अधिकारी का बचाव

वहीं उपखण्ड अधिकारी अंजू वर्मा ने कहा कि "यह एक प्रारंभिक शिविर था। अगली बार सूचना व्यापक रूप से दी जाएगी और जन सहभागिता बढ़ाई जाएगी।" हालांकि, यह सफाई तब असरदार होती जब इस बार की चूक नहीं होती। यह शिविर एक आईना है उस सरकारी तंत्र का, जो समस्या सुलझाने के नाम पर केवल प्रक्रिया पूरी कर आगे बढ़ जाता है। अगर समाधान केवल बंद दरवाजों में बैठकर किए जाएंगे, तो फुलेरा की गलियों में पानी की तलाश में भटकती जनता को कब राहत मिलेगी? अब वक्त है कि 'शिविर' नहीं, 'सरोकार' बनें।

अतिक्रमण के खिलाफ कुचामन नगर परिषद का हल्ला बोल

शहर के पुराने बस स्टैंड बालाजी बाजार अंबेडकर सर्किल गोल प्याऊ सहित कई जगह पर कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.)। शुक्रवार को नगर परिषद कुचामन सिटी द्वारा अतिक्रमण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की गई यह कार्रवाई कुचामन के बालाजी बाजार अंबेडकर सर्किल पुराना बस स्टैंड पर की गई नगर परिषद के सी आई राजेंद्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि बार-बार शहर के मुख्य मार्ग पर अतिक्रमण कर रहे लोगों को समझाने के बावजूद वह लोग अतिक्रमण नहीं हटा रहे थे आज नगर परिषद की द्वारा बड़ी कार्रवाई की गई अतिक्रमण के खिलाफ एस आई ने बताया कि आगे भी निरंतर कुचामन शहर को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए निरंतर यह कार्रवाई चलती रहेगी। जैसे ही नगर परिषद ने अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई की एक समय अफरा तफरी मच गई दुकानदार जो अपना सामान सड़क पर डालकर सड़क को रोक के रखे थे जल-जल्दी अपना सामान समेटने लग गए।

लिखामसर ग्राम वासियों ने पंचायत समिति परिसीमन के विरुद्ध उपखंड अधिकारी को सोपा ज्ञापन

कुचामन सिटी (निसं.)। गांव लिखामसर के ग्राम वासियों ने कुचामन उपखंड कार्यालय में उपखंड अधिकारी सुनील कुमार चौधरी को पंचायत परमिशन के विरोध में ज्ञापन सोपा मांगे नहीं माने जाने पर आने वाले समय में पंचायत चुनाव विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनाव सहित संपूर्ण चुनाव का ग्रामवासी करेंगे बहिष्कार ग्राम पँचायत आनेन्दपुरा जिसमेंग्रामआनन्दपुरा,राणासर व लिखमासर पंचायतों के परिसीमन में प, सं. कुचामन का पूनर्गठन कर ग्राम राणासर को नई प्रस्तावित ग्राम पंचायत बनाया गया है। जिसम ग्रमराणासर और लिखमासर को मिलाकर नई ग्राम पंचायत राणासर बनाई जा सकती थी लीकिन प्रस्तावित ग्राम पंचायत राणासर में आसनपरा को मिलाया गया है।

कार्यालय ग्राम पंचायत अमरसर
पंचायत समिति, बीदासर (चूरू)

क्रमांक- AMARSAR/2025-26/E-TENDER/18-24 दिनांक- 28.04.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 01/2025-26

ग्राम पंचायत अमरसर में वर्ष 2025-26 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज की योजनाओं के लिये निर्माण सामग्री क्रय हेतु ई-निविदायें आंमत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित अन्य विवरण तथा समस्त निविदा शर्त www.eproc.rajasthan.gov.in पर व www.sppp.rajasthan.gov.in पर NIB No.- ZCR2526A0151 तथा UBN No.- ZCR2526GLOB0290 देखी एवं डाउनलोड कर प्राप्त की जा सकती है।

प्रशासक
ग्राम पंचायत अमरसर
पंचायत समिति, बीदासर (चूरू)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत अमरसर
पंचायत समिति, बीदासर (चूरू)

Gram Panchayat Rulyana mali Panchayat Samiti Nechhwa (Sikar)

S.No. 37 Date -02-05-2025

NOTICE INVITING BID

Bids for Material Supply in GP for FY 2025-26 in Gram Panchayat Rulyana mali are invited from interested bidders Upto date 12.05.2025 Time 06.00 P.M. Other particulars of the BID may be visited on the Procurement Portal (http://eproc.rajasthan.gov.in) and Procurement Portal (https://sppp.raj.nic.in) of the State UBN No. PNS2526GLRC00023 EPROC Tender ID 2025_PRD_464731-1

प्रशासक
ग्राम पंचायत रुल्याणा माली

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत, रुल्याणा माली

Office of Chief Medical and Health Officer, Khairthal-Tijara

S.No./NHM/2025-26/334 Dated 02.05.2025

Notice Inviting E-Bid

Bids for Human Resources on basis under CMHO Khairthal-Tijara of are invited from interested bidders up to dated 23-05-2025 11.00 AM Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in)of the state website. Approximate value of the procurement is Rs.108 lakh.

NIB NO.- MHS2526A0362
UBN NO.- MHS2526SLRC00712

Chief Medical and Health officer
Khairthal-Tijara

कार्यालय ग्राम पंचायत बल्लुपुरा
पं.स. पाटन (सीकर)

ई-निविदा / खुली बोली सूचना /01/2025-26 दिनांक- 02.05.2025

ग्राम पंचायत के अधीनस्थ ग्रामों में वित्तिय वर्ष 2025-26 में घर-घर कचरा एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानो से कचरा संग्रहण एवं प्रथक्करण, गांवो की सडक एवं नाली सफाई कार्य की सेवाओं हेतु राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 व ग्रामीण विकास एवं पचायतीराज विभाग (अनुभाग - 5) की गाईडलाईन अनुसार इच्छुक बोलीदाता / संवेदक / फर्म जो कि वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हो, से दिनांक 13.05.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक खुली बोली / ई निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत सूचनाएं एवं शर्ते वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in & https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN No. PKP2526WSRC00017

ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा.पं. बल्लुपुरा

कार्यालय ग्राम पंचायत चाडवास,
पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

क्रमांक -G.P. CHADWAS /2025-26/E-TENDER/161-167 दिनांक- 20-04-2025

ई-निविदा सूचना संख्या 01/2025-26

ग्राम पंचायत चाडवास में वर्ष 2025-26 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज की योजनाओं के लिये निर्माण सामग्री क्रय हेतु ई- निविदायें आंमत्रित की जाती है । निविदा से संबंधित अन्य विवरण तथा समस्त निविदा शर्तें www.eproc.rajasthan.gov.in पर www.sppp.rajasthan.gov.in पर NIBNo.- ZCR2526A0097. UBN No. - ZC2526GLOB00230 देखी एवं डाउनलोड कर प्राप्त की जा सकती है।

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत चाडवास
पं. स. बीदासर (चूरू)

प्रशासक
ग्राम पंचायत चाडवास
पं. स. बीदासर (चूरू)

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान
E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/स्थापना शाखा/2025/574 दिनांक :– 22.04.2025

:–ई–निविदा सूचना–2025–26:–

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से निविदा दिनांक 08.05.2025 तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड कि जा सकता है एवं निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक (DLB2526SLOB02660) है। कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/1620

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

कार्यालय नगरपालिका तारानगर (चूरू) राज.
Office Telephone No. 01561-240245, E-mail- eotrn2009@gmail.com

क्रमांक :/न.पा.ता./2025–26/315–318 दिनांक :–25.04.2025

ई–निविदा सूचना 04/2025–26

सर्व साधारण एवं पंजीकृत ठेकेदारो/फर्मो की जानकारी हेतु प्रसारित किया जाता है कि तारानगर नगरपालिका क्षैत्र में नगरपालिका तारानगर द्वारा स्वीकृत कार्य ऑनलाईन निविदाऐ आंमत्रित की जाती है। नगरपालिका तारानगर द्वारा नगरपालिका, राज्य व केन्द्र सरकार के सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारो को कार्य हेतु पंजीकृत संवेदको से टेण्डर के माध्यम से दिनाक 25.04.2025 से दिनाक 07.05.2025 को निविदा ऑनलाईन आमंत्रित की जायेगी। जिसकी निविदा से सम्बन्धित अन्य विवरण व शर्ते वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in & https://sppp.rajasthan.gov.in/ पर देखी जा सकती है।

NIB CODE	UBN NO.
DLB2526A0837	DLB2526GLOB03189

राज.संवाद/सी/25/1602

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका तारानगर

कार्यालय नगरपालिका रतननगर (चूरू)
फोन नं. - 01562-281224, ईमेल - mun_rnagar@yahoo.in

Date :- 02/05/2025

Notice Inviting Bid

Bids for of Annual works invited from interested bidders up to 11:30 AM 15/05/2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (**http://sppp.raj.nic.in**) of the state official website. **UBN : DLB2526WSRC03444, 03445, 03446, 03447, DLB2526SLRC03448, 03449**

Raj.Samwad/C/25/1685 Executive Officer

कार्यालय नगरपालिका रतननगर (चूरू)
फोन नं. - 01562-281224, ईमेल - mun_rnagar@yahoo.in

Date :- 02/05/2025

Notice Inviting Bid

Bids for of Annual works invited from interested bidders up to 11:30 AM 15/05/2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (**http://sppp.raj.nic.in**) of the state official website. **UBN : DLB2526SSRC03450, DLB2526SLRC03451, DLB2526SLRC03453**

Raj.Samwad/C/25/1684 Executive Officer

कार्यालय नगर परिषद् कोटपूतली (कोटपूतली - बहरोड)

क्रमाक- न.प. कोट. / भूमि / 2025 / 198 दिनांक- 02/05/25

आपत्ति आमंत्रण सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रकरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह 7 दिवस में मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें अन्यथा बाद मियाद किसी प्रकार की आपत्ति स्वीकृत नही की जावेगी ।

1	श्री संजय यादव पुत्र श्री कैलाश चन्द यादव	राजस्व ग्राम बूचाहेडा के खसरा नं. 1304/0.14 रकबा में 129.00 वर्गगज	पट्टा हस्तानान्तरण करवाने बाबत

आयुक नगरपरिषद,
कोटपूतली नगर परिषद् बहरोड

कार्यालय ग्राम पंचायत धांधेला पं.स. पाटन (सीकर)

क्रमांक- ग्रापंधा / 2025/15-16 दिनांक- 02/05/2025

ई-निविदा / खुली बोली सूचना /02 /2025-26

ग्राम पंचायत के अधीनस्थ ग्रामों में वित्तिय वर्ष 2025-26 में घर-घर कचरा एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानो से कचरा संग्रहण एवं प्रथक्करण, गांवो की सडक एवं नाली सफाई कार्य की सेवाओं हेतु राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 व ग्रामीण विकास एवं पचांयतीराज विभाग (अनुभाग - 5) की गाईडलाईन अनुसार इच्छुक बोलीदाता / संवेदक / फर्म जो कि वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हो, से दिनांक 09.05.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक खुली बोली / ई निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत सूचनाएं एवं शर्ते वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in & https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है ।

UBN No. PKP2526WSRC00016

प्रशासक
ग्राम पंचायत धाँधेला
प. स. पाटन (सीकर)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत धाँधेला
प. स. पाटन (सीकर

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत खण्ड, बीकानेर

क्रमांक- अअ / वि. खण्ड / बी. / निविदा/2025-26/50 दिनांक- 23.04.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 03 / वर्ष 2025-26 (NIB Code No. PWD25260246)

निम्न हस्ताक्षर कर्ता द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युतीकरण कार्यो के लिए मोहरबन्द निविदाएं सा.नि.वि., राज मे सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों की प्रति अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निविदा आवेदन / डाउनलोड करने की दिनांक 24.04.2025 से 06.05.2025 तक सांय 6.00 बजे तक जमा कराई जा सकती है। तकनीकी निविदा दिनांक 07.05.2025 को दोपहर 15.00 बजे खोली जायेंगी। प्री-बिड मिटिंग की दिनांक 28.04.2025 दोपहर 01.00 बजे है। निविदा की अन्य शर्ते एवं स्वीकृत तकमीना आदि का विवरण किसी भी कार्य दिवस के दौरान इस कार्यालय में उपस्थित होकर देखा जा सकता है। अन्य शर्ते व विवरण इस कार्यालय में व डीपीआर की वेबसाईट www.dipronline.org, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता । कुल कार्यो की संख्या 02 कुल लागत 41.78 लाख ।

UBN No. 1. PWD2526WSOB00767
2. PWD2526WSOB00768

DIPR/C/5748/2025

(शैलेश कुमार पाठक)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. विद्युत खण्ड, बीकानेर

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड -सुजानगढ़

E-Mail: eesuj.chu.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक- अअ/जनस्वा/निविदा/2025-26 / 185-200 दिनांक- 21/04/2025

'ई' निविदा सूचना संख्या 02 से 08 / 2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पी.डब्ल्यू. एफ. एण्ड ए. आर. पार्ट - अपेडिक्स दिनांक 01.07.1999 से लागू एवं समय-समय पर वित्त विभाग द्वारा जारी संशोधित परिपत्रों (आज तक) के अनुरूप विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के विभागों में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों एवं संबंधित कार्यों में अनुभव रखने वाली फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

निविदा फर्म ऑनलाईन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in से कॉलम संख्या 06 में अंकित तिथि तक सांय 6.00 बजे तक डाउनलोड / अपलोड किये जा सकते है। वैब साईट पर तकनिकी बिड कॉलम संख्या 08 में अंकित तिथि को इस कार्यालय में प्रातः 11.30 बजे खोली जावेगी। यदि किसी कारणवंश उस दिन अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर तकनिकी बिड़ खोली जावेगी ।

निविदा शुल्क / धरोहर राशि ई-ग्रास के माध्यम से जो कि अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड- सुजानगढ़ (डी.डी.ओ. कोड़ 13128) के नाम देय हो एवं ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया शुल्क रू0 50.00 लाख तक 500 /- रूपये तथा 50.00 लाख से अधिक 1000 /- रूपये ई-ग्रास के माध्यम से जो कि MD, RISL Payable At Jaipur के नाम से देय हो इस कार्यालय में कॉलम संख्या 07 में अंकित तिथि एवं समय सांय 6.00 बजे तक जमा करवाना आवश्यक है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल (MSC) हस्ताक्षर के माध्यम से वैब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB No.	UBN No.
02/2025-26	PHE2526WSRC01543
03/2025-26	PHE2526WSRC01546
04/2025-26	PHE2526WSRC01547
05/2025-26	PHE2526WSRC01548
06/2025-26	PHE2526WSRC01552
07/2025-26	PHE2526WSRC01553
08/2025-26	PHE2526WSRC01554

DIPR/C/5691/2025

(कैलाशचन्द माली)
अधिशाषी अभियन्ता,
जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड-सुजानगढ़

झुंझुनूं में कलेक्ट्रेट से मंडावा मोड़ तक सीवरेज लाइनें बदहाल

मुख्य मार्ग बना गंदगी का तालाब; राहगीर-स्थानीय निवासी परेशान

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं शहर में सीवरेज व्यवस्था की बदहाली अब एक गंभीर संकट का रूप ले चुकी है। शहर के मुख्य मार्ग, कलेक्ट्रेट से मंडावा मोड़ तक की सड़क पर जगह-जगह सीवरेज लाइनें लीक होने से सड़कों पर गंदा पानी बह रहा है। यह दूषित पानी न केवल राहगीरों के लिए मुसीबत बन गया है, बल्कि आसपास रहने वाले स्थानीय निवासियों के लिए भी एक बड़ी समस्या खड़ी कर रहा है।

एलआईसी कार्यालय के सामने ओवरफ्लो, कलेक्टर आवास तक जमा गंदा पानी

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) कार्यालय के ठीक सामने सीवरेज का ढक्कन बुरी तरह से ओवरफ्लो हो चुका है। यहां से लगातार बह रहा गंदा पानी डाक बंगले और नेहरू पार्क के पास से होता हुआ सीधे जिला कलेक्टर के आवास के सामने तक जमा हो गया है। इस व्यस्त मार्ग से गुजरने वाले लोगों को इस गंदगी और बदबू के कारण भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हालात इतने खराब हैं कि गंदे पानी और फिसलन के कारण कई बार वाहन चालक अपना संतुलन खोकर गिर भी चुके हैं। इस क्षेत्र में फैली असहनीय दुर्गंध ने आसपास के स्थानीय नागरिकों का जीना मुहाल कर दिया है। नेहरू पार्क जैसे सार्वजनिक स्थल के आसपास इस तरह का दूषित वातावरण न केवल लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि यह शहर की छवि को भी बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। लोग सुबह-शाम पार्क में घूमने और ताजा हवा लेने से भी कतरा रहे हैं।

नगरपरिषद की कार्यशैली पर सवाल, शिकायतों पर नहीं हो रही सुनवाई

शहर के मुख्य मार्गों पर इस तरह की दयनीय स्थिति तब है, जब नगरपरिषद कार्यालय भी इसी क्षेत्र में स्थित है। इसके बावजूद नगरपरिषद कर्मचारियों की ओर से इस गंभीर समस्या की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि उन्होंने बार-बार इस समस्या के बारे में शिकायत दर्ज कराई है, लेकिन परिषद की ओर से इसका कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला गया है। लोगों में नगरपरिषद की इस उदासीनता को लेकर गहरा रोष व्याप्त है। तत्काल मरम्मत और नियमित सफाई की मांग की गई है।

रास्ता खोलो अभियान पहले दिन झुंझुनूं में खोले गए एक दर्जन रास्ता

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। प्रदेश में पहली बार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बंद रास्तों को खोलकर आमजन को राहत देने के लिए "नया रास्ता" दिखाया है। दरअसल पूरे प्रदेश में 1 मई से 'रास्ता खोलो अभियान' शुरू किया गया है। जिसके तहत झुंझुनूं में भी पहले दिन एक दर्जन के करीब बंद रास्तों को अधिकारियों ने खुलवाया है। जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने बताया कि जो परिवाद उपखंड स्तर, जिला स्तर या फिर राज्य सरकार पर रास्तों के विवाद के प्राप्त हुए हैं। उन सभी को सूचीबद्ध करके संबंधित अधिकारियों को सौंपे गए हैं। ताकि अधिकारी आपसी समझाईश और कानून सम्मत कार्रवाई करते हुए इन रास्तों को खुलवाकर आमजन को राहत प्रदान करें। उन्होंने बताया कि इस अभियान में राजस्व रिकार्ड में दर्ज वे सार्वजनिक रास्ते, जिनके बंद होने से बड़ी संख्या में काश्तकार या ग्रामवासी प्रभावित हैं, ऐसे प्रचलित रास्ते, जिनका उपयोग ढाणियों में रहने वाले लोग करते हैं और जो अवरुद्ध हो चुके हैं व ऐसे रास्ते जो राजस्व रिकॉर्ड में चौड़े दर्ज रास्ते, जो मौके पर केवल पगडंडी के रूप में अस्तित्व में हैं,उन्हें वास्तविक चौड़ाई में पुन: निर्मित करवाने, राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251 के तहत निर्णीत रास्ते, जिनका क्रियान्वयन अभी तक नहीं हुआ है और साथ ही जिन रास्तों का रिकॉर्ड में अंकन नहीं हुआ है, उनका भी अभियान के दौरान सर्वेक्षण कर रिकॉर्ड में दर्ज करने की कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अभियान से झुंझुनूं में सैंकड़ों की संख्या में रास्तों का विवाद निपटेगा और बंद पड़े रास्ते भी खुलेंगे।

जिले में मेघगर्जन और वज्रपात के साथ 50-60 किमी प्रतिघंटे हवाओं की चेतावनी

बदलेगा मौसम झुंझुनूं जिले में येलो अलर्ट जारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिले में देर रात तेज झोंकेदार हवाओं के साथ बारिश हुई। मौसम विभाग ने झुंझुनूं जिले के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने मेघगर्जन, वज्रपात और 50-60 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की संभावना जताते हुए चेतावनी जारी की है। साथ ही, तीन मई से 5 मई तक येलो अलर्ट भी घोषित किया गया है। मौसम के इस बदले मिजाज के चलते जनजीवन प्रभावित हुआ, लेकिन जिला प्रशासन तुरंत हरकत में आया। जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने रात्रि में तेज अंधड़ से हुए प्रारंभिक नुकसान का तुरंत आंकलन करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए हैं। इस संबंध में उन्होंने सभी उपखंड अधिकारियों, सभी तहसीलदारों और एवीवीएनएल और जलदाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं।

सर्पदंश से किसान की मौत

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। नाटास निवासी मदन लाल की खेत में गेहूं की पूली इकट्ठी करते सर्प के काटने से मौत हो गई। अचेत अवस्था में परिजन उसे झुंझुनू अस्पताल बीडीके में उपचार के लिए ले गए जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास के निधन पर शोक

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पूर्व पीसीसी चीफ डॉ. गिरिजा व्यास के निधन पर कांग्रेस सहित संपूर्ण राजनीतिक जगत में शोक की लहर फैल गई है। कांग्रेस प्रदेश महासचिव व मण्डावा विधायक रीटा चौधरी, कांग्रेस नेता शिशुपाल सिंह दूलड़, मण्डावा के पूर्व चेयरमैन सज्जन मिश्रा, पालिकाध्यक्ष नरेश सोनी समेत अनेक नेताओं ने गहरा दुख व्यक्त किया है। मण्डावा विधायक रीटा चौधरी ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व केंद्रीय मंत्री वं पूर्व कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास का निधन हम सबके लिए एक अपूरणीय क्षति है। शिक्षा, राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में उनका बड़ा योगदान रहा है। उनका असमय और इस तरह एक हादसे का शिकार होकर जाना हम सभी के लिए गहरा आघात है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। कांग्रेस नेता शिशुपाल सिंह दूलड़ने कहा कि केंद्रीय मंत्री रहीं वरिष्ठ कांग्रेस नेता व पूर्व पीसीसी अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास के निधन का समाचार अत्यंत दु:खद है। गिरिजा का निधन कांग्रेस परिवार के अपूरणीय क्षति है, कांग्रेस पार्टी और प्रदेश की प्रगति में उनका योगदान सदैव याद रखा जाएगा।

शिव पुराण कथा पोस्टर का किया विमोचन

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। शहर के निकटवर्ती ढोलास गांव में संचालित कामधेनु गौशाला में आगामी 9 मई से आयोजित होने वाली शिव पुराण व नानी बाई का मायरा की तैयारी बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बुधगिरी मंडी पीठाधीश्वर दिनेश गिरी जी महाराज ने कथा के पोस्टर का विमोचन किया। व्यासपीठ से पंडित परमेश्वर गुरुकृपा कथा का रसास्वादन करवाएंगे। आयोजन समिति के एडवोकेट उम्मेद सिंह ने बताया कि आयोजन समिति का गठन कर सबको अलग अलग जिम्मेदारी सौंपी गई। साधु संतों को न्यौता देने की जिम्मेदारी एडवोकेट बलदेव सिंह व प्रदीप दाधीच, मंच सज्जा नादान सिंह,पंडाल व्यवस्था सुशील दाधीच, मंच संचालन प्रदीप दाधीच, कलश यात्रा प्रभारी सरोज शर्मा को बनाया गया। इस अवसर पर शिलांग के भामाशाह अजय अग्रवाल की ओर से निर्मित भव्य प्रवेश द्वार का लोकार्पण किया जाएगा।

सूचना केंद्र में शाह जल मंदिर व जलकूप का कलेक्टर ने किया लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिला मुख्यालय के सूचना केंद्र परिसर में शुक्रवार को मदनलाल शाह एज्युकेशन सोसायटी की ओर से स्थापित शाह जल मंदिर और जलकूप का लोकार्पण जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने किया। इस मौके पर सोसायटी के कोलकाता प्रवासी ट्रस्टी राकेश शाह, सोसायटी सचिव राजकुमार मोरवाल, पीआरओ हिमांशु सिंह और जेबी शाह गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. योगिता शर्मा आदि मौजूद रहे। अतिथियों ने नारियल फोड़कर और नामकरण पट्टिका का अनावरण कर जल मंदिर का लोकार्पण किया। उद्योगपति राकेश शाह ने बताया कि उनका जन्म झुंझुनूं में हुआ है। उनके दादा एडवोकेट मदनलाल शाह ने झुंझुनूं के इसी कोर्ट में वकालत की। आज दादा मदनलाल शाह, दादी मालतीदेवी शाह और पिता स्व. घनश्यामदास शाह की प्रेरणा से उन्हें एक और मौका झुंझुनूं से जुड़ने का मौका मिला है। जिसके लिए वे सभी को शुक्रिया अदा करते हैं। उन्होंने कहा कि झुंझुनूं में पानी और नारी शिक्षा की महत्ती आवश्यकता है। हमारा परिवार और संस्था भी इसी दिशा में लगातार काम कर रही है। हम 42 सालों से गर्ल्स कॉलेज का संचालन कर नारी शिक्षा के संकल्प को पूरा कर रहे है। तो वहीं जलकूप और जल मंदिर का निर्माण करवाकर पीने के पानी सभी को मुहैया करवाने की दिशा में भी कदम बढाया है। इस जल मंदिर के निर्माण से ना केवल सूचना केंद्र, बल्कि कलेक्ट्रेट और न्यायालयों में आने वाले लोगों को इस भीषण गर्मी में पीने के लिए ठंडा पानी हर वक्त मिलेगा। इस मौके पर जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने भी प्रवासी राकेश शाह की ओर से करवाए गए कार्य को लेकर आभार जताया और कहा कि झुंझुनूं में प्रवासियों के सहयोग से काफी काम हो रहे है।

भागवत कथा में छठे दिन श्रीकृष्ण- रुक्मिणी विवाह

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। कस्बे के वार्ड 18 स्थित पटवार घर के निकट श्रीबालाजी मन्दिर प्रांगण में पिछले 6 दिनों से चल रही श्रीमद् भागवत कथा के छठवें दिन शुक्रवार को श्रीकृष्ण-रुक्मिणी विवाह का हुआ। भागवत कथा के व्यास पीठ पर कथावाचक वृंदावन की संत आचार्या रजनीश्वरी मिश्रा ने पंच अध्याय का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि महारास में पांच अध्याय हैं। उनमें गाये जाने वाले पंच गीत, भागवत के पंच प्राण हैं, जो भी ठाकुरजी के इन पांच गीतों को भाव से गाता है। वह भव पार हो जाता है। उसे वृंदावन की भक्ति सहज प्राप्त हो जाती हैं। आचार्या मिश्रा ने कथा में भगवान का मथुरा प्रस्थान, कंस वध, महर्षि संदीपनी के आश्रम में विद्या ग्रहण करना, उद्धव-गोपी संवाद, द्वारका की स्थापना, रुक्मणी विवाह के प्रसंग का संगीतमय भावपूर्ण पाठ किया। आस्था और विश्वास के साथ भगवत प्राप्ति आवश्यक हैं। भगवत प्राप्ति के लिए निश्चय और परिश्रम भी जरूरी हैं। भगवान श्रीकृष्ण रुक्मणी के विवाह की झांकी ने सभी को खूब आनंदित किया। कथा के दौरान भक्तिमय संगीत ने श्रोताओं को आनंद से परिपूर्ण किया। उन्होंने कहा कि जो भक्त प्रेमी कृष्ण रुक्मणी के विवाह उत्सव में शामिल होते हैं उनकी वैवाहिक समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है। कथावाचक ने भागवत कथा के महत्व को बताते हुए

कहा कि जो भक्त प्रेमी कृष्ण-रुक्मणी के विवाह उत्सव में शामिल होते हैं उनकी वैवाहिक समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जाती हैं। कथा वाचक ने कहा कि जीव परमात्मा का अंश हैं। इस धार्मिक कार्यक्रम में अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे

शीतलदास महाराज की पुण्य स्मृति में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मुकुन्दगढ़ मार्ग स्थित गोकुल आश्रम के दुर्गा माता मन्दिर प्रांगण में शुक्रवार को शीतलदास महाराज की चतुर्थ पुण्य स्मृति में हवन, यज्ञ कन्या भोज, भजन किर्तन सहित धार्मिक कार्यक्रम हुए। आरम्भ में मण्डावा कॉलेज के ट्रस्टी शीवचरण गाड़ोदिया की अगुवाई में शीतल दास महाराज की प्रतिमा पर पुष्पार्जलि कार्यकम हुआ जिसमें अनेक श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। आश्रम के महंत पण्डित कृष्ण मुरारी, राजेश स्वामी, सांवरमल राठी, राजेन्द्र फोजी सहित अनेक भक्त मौ मौजूद रहे। अन्त में अरूण दूलड़ ने सभी भक्तों को प्रसाद वितरण कर आभार जताया।

विधायक बालमुकुंदाचार्य का लक्ष्मणगढ़ में जोरदार स्वागत

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट की ओर से शुक्रवार को हाथोज धाम के महंत व विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज का स्नेहिल स्वागत किया। जयपुर से बीकानेर की तरफ जा रहे विधायक बालमुकुंदाचार्य का लक्ष्मणगढ़ बाईपास स्थित दिलसुख चौधरी पेट्रोल पंप जोरदार अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट प्रभारी राजेन्द्र कुमार शर्मा ने श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप उन्हें ट्रस्ट का दुपट्टा ओढ़ाकर, श्रीराम चरितमानस व सरल गीता भेंट की। इस मौके पर ट्रस्ट के संरक्षक प्रकाश पासोरिया, दीनदयाल जोशी, प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा, दिव्यांग प्रकोष्ठ प्रभारी कमल कुमावत, पिंटू सुरेका, सोनू भंडारी, भाजपा नेता अरुण चौधरी, पार्षद विष्णु शर्मा, खुड़ी मंडल पूर्व अध्यक्ष प्यारेलाल कटारिया, महेश पालड़ी, रतन गोदारा, गणेश ख्यालिया, राजू चौधरी, लालचंद माणासिया, रघुनाथ कुमावत सहित ट्रस्ट के संरक्षक पदाधिकारी कार्यकर्ता व भाजपा के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दम्पति ने सरकारी अध्यापक को ब्लैकमेल कर मागे 15 लाख

श्रीगंगानगर(निस)। श्रीगंगानगर जिले में पुरानी आबादी थाना इलाके में एक सरकारी अध्यापक को ब्लैकमेल करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने ब्लैकमेल करने वाले आरोपी पति-पत्नी को गिरफ्तार किया है। पुरानी आबादी थाना इलाका निवासी एक अध्यापक ने पुरानी आबादी थाने में एक महिला व उसके पति के खिलाफ गुरुवार को ब्लैकमेल करने का मामला दर्ज करवाया था। थाना प्रभारी ज्योति नायक ने मामले की जांच शुरू की। पुलिस ने इमरती उर्फ भावना पत्नी

जालूराम उम्र 35 साल निवासी वार्ड नं 10 पुरानी आबादी व जालूराम पुत्र बिजनाराम उम्र 40 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक पति-पत्नी पुरानी आबादी कुंज विहार में किराए के मकान पर रहते हैं। वहीं आरोपी जालूराम बॉर्डर होमगार्ड में भी तैनात था, लेकिन पिछले कुछ सालों से वह रंग रोगन का कार्य करता है। पत्नी इमरती घरेलू कार्य करती है। जानकारी के मुताबिक आरोपी पति-पत्नी ने अध्यापक को अपने घर बुलाकर उसके फोटो-वीडियो बना लिए और फिर झूठा मुकदमा दर्ज करवाने की धमकी देकर 15 लाख रुपए की मांग करने लगे। अध्यापक ने आरोपियों के दबाब में आकर 20000 रुपए आरोपियों को फोन पे भी कर दिए, लेकिन उसके बाद आरोपियों ने 15 लाख रुपए की मांग कर डाली जिस पर अध्यापक ने पुरानी आबादी थाना में दोनों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुरानी आबादी थाना में एक सरकारी अध्यापक ने दम्पति के खिलाफ ब्लैकमेल कर 15 लाख रुपए की मांग करने का मामला दर्ज करवाया था

ब्लॉक निष्पादन मीटिंग संपन्न

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के पंचायत समिति सभागार में उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में शुक्रवार को ब्लॉक में शिक्षा से संबंधित ब्लॉक निष्पादन समिति की बैठक का आयोजन किया गया उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार ने विद्यालय भवन की सुरक्षा, राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में शिक्षकों की प्रभावी भूमिका निभाने विद्यालयों की वेबसाइट निर्माण, ब्लॉक रैंकिंग, बेरोजगारी इन्टरनशिप करने वालों का विद्यालय हित में अधिकाधिक सहयोग लेने पर जोर दिया। सीबीइओ डॉ. सुमन जाखड़ ने प्रवेशोत्सव के दौरान नामांकन बढ़ाने, शिक्षकों से नवाचार अपनाने और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने, शिक्षण में नई तकनीक के इस्तेमाल और इसके सकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की। मीटिंग के अंत में सभी अधिकारियों व प्रधानाचार्यों ने मिलकर शिक्षा सुधार के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया। इस बैठक में एसीबीइओ बाबूलाल बुनकर व भागचंद सहित ब्लॉक के सभी प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। बैठक का संचालन आरपी राम निवास घेतरवाल ने किया।

केबल चोरों को पकड़ने की मांग, एसपी को ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील क्षेत्र में बने कृषि कुओं पर पिछले कई महीनों से कॉपर की केबल चोरी के मामले बढ़ते जा रहे हैं। पुलिस थाने में किसानों की ओर से कई बार शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की गई लेकिन पुलिस की ओर से अभी तक एक भी कार्रवाई नहीं करने से चोरों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। भारतीय किसान संघ के श्रीचंद सिद्ध ने चूरू एसपी को ज्ञापन प्रेषित कर कृषि कुंओं पर बढ़ती केबल चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया कि सरदारशहर तहसील क्षेत्र में कृषि कुंओं पर लगी कॉपर की केबल चुराने वाला गिरोह सक्रिय रूप से केबल चोरी की वारदात को अंजाम देता जा रहा है। लेकिन पुलिस की ओर से उन पर कोई कार्रवाई नहीं होने से केबल चोरी की वारदातें बढ़ती जा रही है और चोरों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। किसानों की ओर से पुलिस थाने में कई बार शिकायत लिख कर दी गई लेकिन पुलिस की ओर से न तो मामला दर्ज किया गया और न ही कोई कार्रवाई अभी तक की गई है। किसान ऐसे ही परेशान रहता है और लाखों रुपए की कृषि कुंओं पर लगी केबल को रात्रि के समय चोर काट कर ले जाते हैं। जिससे किसान और ज्यादा परेशान हो रहा है। ज्ञापन में बताया गया कि शीघ्र ही चोरों के इस गिरोह को पकड़कर किसानों को राहत दी जाए अन्यथा किसान आंदोलन करने को मजबूर होगा।

तीन आरोपियों के जमानत आवेदन खारिज

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। चोरी के तीन आरोपियों का जमानत आवेदन स्थानीय एडीजे न्यायालय ने खारिज कर दिया है। अपर लोक अभियोजक श्याम सुंदर खंडेलवाल ने बताया कि बीदासर क्षेत्र में हुई चोरियों के मामलों में पुलिस की ओर से गिरफ्तार किए गए जोधपुर के निवासी तीन आरोपियों ने न्यायालय में जमानत आवेदन लगाया था। आरोपी सद्दाम हुसैन, शाहरूख खान, मोहम्मद नदीम का जमानत आवेदन न्यायालय की ओर से खारिज किया गया है। सरकार की ओर से पैरवी अपर लोक अभियोजक श्याम सुंदर खंडेलवाल ने की।

भामाशाह का किया स्कूल में सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय श्री गणेशीराम झंवर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में हैदराबाद प्रवासी व्यवसायी व भामाशाह संदीप चौधरी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य कुसुम शर्मा शर्मा, प्राध्यापक बलदेव ढाका, हरिप्रसाद टेलर, स्वनंदा मैहन, विकास शर्मा, सीताराम मीणा, रामलाल गुलेरिया, आशुराम खटीक, राजकंवर मीणा सहित स्टाफ के सभी सदस्य मौजूद रहे।

चलती कार में आया हार्ट अटैक, मौत, बैलेंस बिगड़ने के बाद सड़क से 100 फीट नीचे उतरी गाड़ी

भीलवाड़ा

(निस) शादी समारोह में चाय-कॉफी की स्टाल लगाने वाले एक व्यक्ति की चलती कार में मौत हो गई। मौत ऐसी कि उसे संभलने का मौका तक नहीं मिला। राहगीरों ने पुलिस और उसके परिजनों को सूचना दी। कोतवाली थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मुआयना किया। प्रथम दृष्टया मौत का कारण हार्ट अटैक माना जा रहा है । घटना कोतवाली थाना क्षेत्र में भीलवाड़ा-हरणी महादेव बायपास की है। पुलिस के अनुसार बापू नगर निवासी 54 साल का रमेश असनानी पुत्र नत्थू मल असनानी को चलती वैन में अटैक आ गया, जिससे उनकी कार असंतुलित होकर सड़क से करीब 100 फीट रॉन्ग साइड में नीचे उतर गई। कार गिरती देख राहगीर दौड़कर पास गए तब तक रमेश की मौत हो चुकी थी। प्रथम दृष्टया हार्ट अटैक से मौत होना सामने आया है। मंगरोप निवासी लोकेश खटीक ने कार में मोबाइल पड़ा देखा। जिसमें मृतक ने लास्ट कॉल छोटे भाई को की थी। लोकेश ने उस नंबर पर फोन लगाकर परिजनों को हादसे की सूचना दी। परिजनों के साथ मृतक का बेटा मौके पर पहुंचा। उन्होंने कोतवाली पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंचे हरीश मनवानी ने बताया कि मृतक रमेश शादी समारोह में चाय कॉफी की स्टॉल लगाता था। वह पिछले 28 सालों से यह व्यवसाय कर रहा था। गुरुवार रात को रमेश ने एक होटल में शादी समारोह में चाय कॉफी की स्टॉल लगाई थी। वह दोपहर करीब 12.30 बजे अपना हिसाब करवाकर वैन में सामान लादकर बापूनगर स्थित अपने घर लौट रहा था।

आपसी रजामंदी से सड़कों को चौड़ा करने का कार्य युद्धस्तर पर जारी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में अतिक्रमण हटाओ अभियान नगर परिषद की ओर से शुरू किया गया था जो निरंतर युद्ध स्तर पर जारी है। रोडवेज बस स्टैंड से अर्जुन क्लब व वनवे की तरफ आने वाली सड़क को चौड़ा करने के लिए सभापति राजकरण चौधरी व उनकी टीम की ओर से समझाइश करते हुए सड़क को चौड़ा करने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। वहीं सभापति की ओर से सड़क पर आने वाले घरों के मालिकों से मिलकर उनसे आग्रह करते हुए प्रशासन का सहयोग करने की अपील की जा रही है। जिसका बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस सड़क को चौड़ा करने के लिए वर्षों से लोगों का एक सपना था कि कभी भी सड़क की चौड़ाई नहीं बढ़ सकती। लेकिन लोगों के उस सपने को नगर परिषद के सभापति राजकरण चौधरी व उनकी टीम ने पूरा कर दिया। जिससे सभापति राजकरण चौधरी के एक्शन की जनता मुरीद होती हुई दिखाई दे रही है। सोशल मीडिया पर सभापति के एक्शन व आपसी समझाइश से सड़क की चौड़ाई बढ़ाने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। उसकी जमकर प्रशंसा की जा रही है। सभापति राजकरण चौधरी ने जानकारी देते हुए बताया कि रोडवेज बस स्टैंड से आगे अर्जुन क्लब व वनवे से राजवाला कुंआ पर आने वाली सड़क की चौड़ाई को बढ़ाने के लिए आपसी समझाइश करके इस सड़क को चोड़ा करने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। मैं धन्यवाद देता हूं उन घरों के मालिकों को जिसने अपनी सहमति से नगर परिषद के इस कार्य को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया है। नगर परिषद उनके इस भूमि के दान को हमेशा याद करेगा। वहीं सड़क पर आने वाले कुछ घरों के मालिक की ओर से भी सभापति राजकरण चौधरी को अपनी सहमति प्रदान की है। जिस पर इस सड़क का पूरा कार्य होने के बाद नया लुक शहर में देखने को मिलेगा। नगर परिषद की ओर से शहर में अतिक्रमण हटाओ अभियान आगे भी जारी रखते हुए अन्य सड़कों की चौड़ाई बढ़ाने का भी कार्य को आतुर नजर आ रहे हैं।

जिले की वुडन उत्पाद विनिर्माता इकाईयों से आवेदन आमंत्रित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। एक जिला एक उत्पाद नीति-2024 अन्तर्गत देय परिलाभों के लिए जिले की वुडन उत्पाद विनिर्माता इकाईयों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उद्योग महाप्रबंधक उजाला ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद के रूप में चयनित उत्पादों को बढ़ावा देने, स्थानीय निवेश, निर्यात व रोजगार के अवसरों में वृद्धि और उत्पाद से संबंधित कामगारों की आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से एक जिला एक उत्पाद नीति-2024 लागू की गई है। जिले में एक जिला एक उत्पाद के रूप में वुडन उत्पाद का चयन किया गया है। एक जिला एक उत्पाद नीति-2024 के प्रावधानों के अनुसार नवीन सूक्ष्म उद्यमों को परियोजना लागत का 25 प्रतिशत (अधिकतम 15 लाख रुपए) व लघु उद्यमों को परियोजना लागत का 15 प्रतिशत (अधिकतम 20 लाख रुपए) मार्जिन मनी अनुदान निर्धारित किया गया है। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त उत्पाद के विपणन के लिए देश-विदेश में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मेले अथवा प्रदर्शनी में भाग लेने पर स्टॉल रेन्ट अनुदान व आवागमन के लिए अधिकतम 2 लाख रुपए तक की सहायता, केन्द्र अथवा राज्य सरकार की ओर से स्थापित प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों से उन्नत प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर अधिग्रहण के लिए किए गए व्यय पर 50 प्रतिशत (अधिकतम 5 लाख रुपए) तक सहायता, राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय मानक प्रमाणन प्राप्ति और बौद्धिक संपदा अधिकार के लिए व्यय पर 75 प्रतिशत (अधिकतम 3 लाख रुपए) तक की पुनर्भरण सहायता, ई-कॉमर्स के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए 2 वर्ष तक प्लेटफॉर्म फीस का 75 प्रतिशत (अधिकतम 1 लाख रुपए प्रतिवर्ष) तक पुनर्भरण, कैटलॉग सेवाओं के लिए और पूरी तरह कार्यात्मक लेन-देन वाली ई-कॉमर्स वेबसाइट के विकास के लिए कुल व्यय पर 60 प्रतिशत (अधिकतम 75 हजार रुपए) तक की एकमुश्त सहायता जैसी सुविधाएं प्रदान की जानी है। उन्होंने बताया कि जिले के वुडन उत्पाद विनिर्माता इकाईयां लाभ हेतु एसएसओ के माध्यम से वन डिस्ट्रीक्ट वन प्रोडक्ट पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन उपरांत कार्यालय जिला उद्योग व वाणिज्य केन्द्र, चूरू में संपर्क करें व ऑफलाईन माध्यम से आवेदन प्रस्तुत कराएं। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय के दूरभाष नम्बर 01562-250936 पर सम्पर्क करें।

एसडीएम के आश्वासन के बाद धरना प्रदर्शन समाप्त

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। तहसील कार्यालय के बाहर चल रहा धरना 17 दिन उपखण्ड अधिकारी रामकुमार वर्मा से वार्ता के बाद समाप्त हो गया। संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले पंचायत समिति और कृषि उपज मण्डी बनाने की मांग को लेकर दिया जा रहे धरने में राजलदेसर बन्द और एन एच 11 पर चक्काजाम की घोषणा की थी। बाजार का मिला जुला असर देखने को मिला।संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले सैकड़ों लोगों ने धरना स्थल से कस्बे में रैली निकालकर नारेबाजी की। सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। स्थानीय सुभाष चौक बस स्टेण्ड पर मुख्यमंत्री का पुतला फुका। जिसके बाद तहसील कार्यालय के बहार पहुंचा। मुख्यमंत्री के नाम उपखण्ड अधिकारी रामकुमार वर्मा को ज्ञापन सौंपा। जिसमें पंचायत समिति और कृषी मण्डी बनाने की मांग थी।प्रशासन के साथ वार्ता का दौर चला। उपखण्ड अधिकारी रामकुमार वर्मा की समझाइश के बाद संयुक्त किसान मोर्चा ने धरना स्थगित कर दिया। तहसील अध्यक्ष कामरेड भादर भाम्भू ने बताया कि हमारी मुख्य दो मांग थी। क्रृषि उपज मण्डी पर प्रशासन का सकारात्मक जबाब मिला है। पंचायत समिति की मांग पर प्रशासन की ओर से हमारी मांग को सरकार तक पहुंचाने की बात कही जिस पर हमने 12 मई तक धरना स्थगित कर दिया। पंचायत समिति बनाने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे। 12 तारीख तक सकारात्मक जबाब नहीं आता तो उपखण्ड कार्यालय पर धरना दिया जाएगा। उपखण्ड अधिकारी रामकुमार वर्मा ने बताया धरनार्थियों के प्रतिनिधि मंडल से वार्ता कर समझाइश की जिस पर दर्शनार्थियों की ओर से धरना उठा दिया गया है। इनकी मांगों को सरकार तक भिजवा दिया जावेगा। प्रशासन की तरफ से तहसीलदार जितेन्द्र सिंह थानाधिकारी कमलेश कुमार वार्ता में मौजूद रहे। थानाधिकारी कमलेश कुमार मय जाब्ता तैनात रहे।धरना स्थल पर सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

जानलेवा बीमारियां नशीले पदार्थों के सेवन से ही होती हैंः डॉ. मुमताज

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। इंसानियत एकता सेवा समिति के छठे स्थापना दिवस पर समिति संस्थापक करामत खान उर्दू अदीब के नेतृत्व में जिला मुख्यालय पर एक दिवसीय नशा मुक्ति जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के तहत शहर में जगह-जगह नुक्कड़ सभाएं कर लोगों को नशे के खिलाफ जागरूक किया गया। इस अवसर पर पीडीयू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. महेश मोहन पुकार ने अभियान के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर डॉ. मुमताज अली ने कहा कि जानलेवा बीमारियां प्रायः नशीले पदार्थों के सेवन करने से ही होती हैं। डॉ. शहनवाज खान ने कहा कि वर्तमान में दिन-प्रतिदिन युवाओं में नशे की लत बढ़ती जा रही है, जिससे उनका जीवन बर्बाद हो रहा है। समिति के मीडिया प्रभारी मोहम्मद अली पठान ने बताया कि अधिकांशतया पारिवारिक झगड़े, सड़क हादसे और सामाजिक बुराइयां नशे के कारण होते हैं। डॉ. अख्तर खान ने कहा कि लोगों को नशे के खिलाफ जागरूक करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। संस्थापक करामत खान उर्दू अदीब ने कहा कि हमारा मुख्य उद्देश्य क्षेत्र को पूर्णतया नशे से मुक्त करना है और वर्तमान में आमजन में नशे के प्रति बढ़ते लगाव को कम करना। इस दौरान प्रदीप सेन और आवेश कुरैशी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में राजकीय डीबी अस्पताल अधीक्षक डॉ. दीपक चौधरी, उप अधीक्षक डॉ. इद्रीस खान, समिति व्यवस्थापक जाफर खान, अयूब खान चायल, जाकिर खान, सुलेमान मनिहार, सलीम खान दिलावरखानी, मुख्तार खान, हारून चौहान, मुश्ताक खान मोयल, महबूब खान, सलीम टीआरए, सलीम चौहान, मौलाना जमील, लियाकत अली सहित समिति के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सरस डेयरी में 22 वीं वार्षिक आम सभा की बैठक, 3.57 करोड़ का बजट पेश

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में चूरू जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड की 22 वीं वार्षिक आमसभा शुक्रवार को डेयरी चेयरमैन लालचंद मुंड की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रबंधक संचालक जितेंद्र सिंह, आरसीडीएफ के प्रतिनिधि अशोक भाटी और संचालक मंडल के सदस्यों ने हिस्सा लिया। डेयरी चेयरमैन लालचंद मुंड ने बताया कि मार्च 2025 तक 388 पंजीकृत समितियां डेयरी से जुड़ी हैं। इनमें 14 हजार 789 दुग्ध उत्पादक सदस्य हैं। इन सदस्यों में 2 हजार 875 महिलाएं शामिल हैं। डेयरी में प्रतिदिन औसतन 29 हजार लीटर दूध का संग्रह होता है। डेयरी में नई होमोजिनाइजर मशीन और पनीर पैकिंग मशीन लगाई गई है। इससे उपभोक्ताओं की मांग को बेहतर तरीके से पूरा किया जा सकेगा। डेयरी प्रबंधक जितेन्द्र सिंह ने पिछले साल के विकास कार्यों का ब्योरा प्रस्तुत किया। वर्ष 2024-25 के लिए करोड़ों रुपये का बजट सर्वसम्मति से पारित किया गया। आमसभा में उत्कृष्ट दूध आपूर्ति और पशु आहार वितरण करने वाली समितियों को सम्मानित किया गया। राज्य सरकार, आरसीडीएफ प्रतिनिधि, प्रबंध संचालक और विभिन्न समितियों के प्रतिनिधियों ने भी सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर डेयरी चेयरमैन लालचंद मुंड की ओर से दूध खरीद पर डेढ़ से 2 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की घोषणा की गई ताकि दुग्ध उत्पादकों को उनके दूध का उचित मूल्य मिल सके।

देवी जगदम्बा ने महिषासुर दैत्य का वध कर संसार को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के गांव बुकनसर छोटा में जमना देवी ब्रह्मानंद जोशी परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् देवी भागवत कथा के पांचवें दिन की कथा में कथावाचक दंडी स्वामी शिवेद्राश्रमजी महाराज ने कथा का वाचन करते हुए देवी जगदम्बा के अवतार और महिषासुर वध की कथा का प्रसंग सुनाकर व्यासजी की ओर से जन्मेजय को मां की महिमा का वर्णन करते हुए कैसे देवी ने महिषासुर नामक दैत्य का वध करके संसार को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। जब महिषासुर ने तीनों लोकों पर अपना अत्याचार फैला दिया। तब देवी ने उसे परास्त करने के लिए अवतार लिया। महिषासुर ने अपने बल और शक्ति से देवताओं को भी परास्त कर दिया था और वह तीनों लोकों पर अत्याचार कर रहा था। देवी और महिषासुर के बीच एक लंबा और कठिन युद्ध हुआ। जिसमें देवी ने अपनी शक्ति और बुद्धि से महिषासुर का वध करके संसार को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई और अपने भक्तों को सुख और शांति प्रदान की। कथा देवी की शक्ति, महिमा और कृपा का वर्णन करती है। कथा हमें ईश्वर में विश्वास और समर्पण की आवश्यकता पर बल देती है। कथा में सत्यनारायण जोशी, ब्रह्मानंद जोशी, हीरालाल जोशी, अशोक कुमार जोशी, बजरंग जोशी, भवानीसिंह, प्रभुसिंह, शायरसिंह, तुलसीराम, भंवरलाल, रौनक कंदोई, राजेंद्र जोशी, भरत गौड सहित सैकड़ों भक्त मौजूद रहे।

उपजिला अस्पताल में सक्रिय लपका गिरोह पर रोक लगाने की मांग

केमिस्ट एसोशिएशन ने उपखण्ड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के ताल मैदान स्थित राजकीय उपजिला चिकित्सालय परिसर में सक्रिय लपका गिरोह की बढ़ती गतिविधियों और अस्पताल की अव्यवस्थाओं को लेकर समस्त केमिस्ट एसोसियेशन की ओर से उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में एसोसिएशन के अध्यक्ष नरपतिचंद्र पारीक व सचिव कन्हैयालाल सैनी ने बताया कि अस्पताल में लपका गिरोह खुलेआम सक्रिय है जो मरीजों को चिकित्सकों के चैम्बर के आगे से जांच के लिए प्राईवेट लेबो में ले जाते हैं। जबकि अस्पताल में लगभग जांचे निशुल्क होती है और उन्हें सस्ती दवाइयों का झांसा देकर अपनी तयशुदा दुकानों पर ले जाकर आर्थिक लाभ कमा रहा है। ज्ञापन में यह भी आरोप लगाया गया कि चिकित्सालय में कार्यरत कुछ डॉक्टर अपने सरकारी क्वार्टरों में मरीजों को भर्ती कर रहे हैं। जहां अप्रशिक्षित व्यक्तियों से इन्जेक्शन और ग्लूकोज जैसी चिकित्सकीय प्रक्रिया करवाई जा रही है। इतना ही नहीं मरीजों को घर पर इलाज जारी रखने के नाम पर एण्टीबायोटिक्स व अन्य महंगी दवाइयां भारी मात्रा में देकर उनका आर्थिक शोषण किया जा रहा है। एसोसिएशन ने इन सभी गतिविधियों पर तत्काल रोक लगाने और जिम्मेदारों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की है। ज्ञापन सौंपने वालों में एसोसियेशन के अध्यक्ष नरपतिचंद्र पारीक, रघुवीर पारीक, रामवतार बोहरा, नरेंद्रसिंह राजपुरोहित सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ गिरिजा व्यास के निधन पर श्रद्धांजलि सभा

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की पूर्व अध्यक्ष व पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ गिरजा व्यास के असामायिक निधन पर शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कार्यालय मंडेलिया हाउस में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया और कांग्रेस पार्टी के प्रति गिरजा व्यास के अद्वितीय योगदान को याद किया गया और गिरजा व्यास के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर व दो मिनट का मौन

रखकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया ने कहा कि डॉ गिरजा व्यास राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेषाध्यक्ष पद पर रहते हुए पूरे प्रदेश में कांग्रेस पार्टी को सशक्त व मजबूत प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया और केन्द्रिय मंत्री के पद पर रहते हुए तत्कालिन केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का अधिकाधिक प्रचार प्रसार कर देष के आमजन को उन कल्याणकारी योजनाओं से आमजन को लाभान्वित करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया था जो आज भी हम सबके लिए प्रेरणाश्रोत है। इस अवसर पर पंचायत समिति प्रतिपक्ष नेता धर्मेन्द्र बुडानिया, चूरू शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, देहता ब्लॉक अध्यक्ष किषोर धान्धू, गोविन्द महनसरिया, आदूराम न्यौल, मोहम्मद हुसैन निर्वाण, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष जमील चौहान, कमला पुनियां, रमजान खान, नारायण बालाण, रामेष्वर प्रजापत, रामप्रताप कांटिवाल, लालचंद सैनी, षिवकुमार शर्मा, विधाधर मेघवाल, विमल शर्मा, सोहनलाल मेघवाल, निसार खान, विनोद खटीक, आरिफ रिसालदार, बजरंग बजाड, प्यारेलाल दानोदिया, चंदन मेघवाल, अनीस खां, तोफिक खान, बाबू खान, रामेष्वर नायक, जाफर खान, गोपाल शर्मा, अब्बास खां, तारीख नागौरी, असलम खां मोयल, समीउल्लाह गौरी, अजू लुहार, मुस्लिम लुहार, आसिफ निर्माण, सहित सैकडो कांग्रेस कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहें। कार्यक्रम का संचालन कांग्रेस प्रवक्ता एडवोकेट सद्दाम हुसैन ने किया।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, शनिवार
03 मई, 2025

स्वाति दूधवाल ने हासिल की 10 वीं रैंक

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। तीसरी एनटीपीसी खेलो इंडिया वूमन नेशनल रैंकिंग तीरंदाजी चैम्पीयनशिप मध्यप्रदेश के भोपाल में आयोजित हो रही है। जिसमें राजस्थान के सुजानगढ़ की स्वाति दूधवाल ने सीनियर वर्ग में रैंकिंग राउण्ड में 681 के स्कोर के साथ 10वीं रैंक हासिल की है। उसके बाद व्यक्तिगत स्पर्धा में पहला मैच जसप्रीत रेलवे ने 148-145 से जीता। क्वार्टर फाइनल मैच प्रभजोत कौर (पंजाब) 147-143 से जीता। सेमीफाइनल में अक्षिता (दिल्ली) 145-146 से हार का सामना करना पड़ा। ब्रोंज मेडल मैच में सृष्टि (मध्य प्रदेश) 146-143 से जीता और राजस्थान के लिए ब्रोंज मेडल जीता। स्वाति दूधवाल शासन सचिवालय जयपुर (आयोजना विभाग) में कार्यरत है। मध्यप्रदेश आर्चरी एसोसिएशन की ओर से यह आयोजन किया गया।

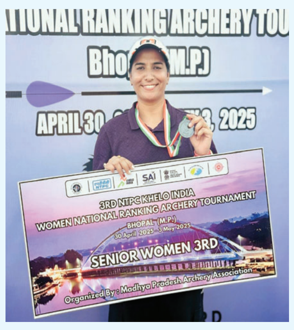

रायपुर मोड़ पर सड़क हादसाः ट्रोले की टक्कर से बाइक सवार की मौत

जयपुर टाइम्स

पाटन/नीमकाथाना (निंस.) पाटन क्षेत्र के रायपुर मोड़ पर शुक्रवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया, जिसमें एक बाइक सवार की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, एक अनियंत्रित ट्रोले ने बाइक को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार जयपाल की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान जयपाल पुत्र बिरजू सिंह के रूप में हुई है, जो कारौली गांव, तहसील कोटपूतली का निवासी था। हादसे के बाद सड़क पर अफरा-तफरी मच गई और दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। सूचना मिलते ही पाटन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है और ट्रोले चालक की तलाश की जा रही है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि रायपुर मोड़ पर ट्रैफिक नियंत्रण के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं ताकि इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

प्रत्येक टैम्पो पर लगेगी ऑटो किराया सूची- वर्मा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ(नि.सं.)। नए बस स्टेंड के शुरू होने के बाद टैम्पो किराये के निर्धारण के लिए उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने ऑटो यूनियन के अध्यक्ष सत्यनारायण सांखला व अन्य अधिकारियों के साथ बैठक ली है। बैठक में उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने कहा कि नए बस स्टेंड से पुराने बस स्टेंड का भाड़ा 10 रूपए किया जावे, ताकि लोगों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। जिस पर सत्यनारायण सांखला ने कहा कि इस पर संगठन विचार करेगा। एसडीएम ने ऑटो यूनियन के अध्यक्ष को निर्देशित किया कि सभी टैक्सियों पर किराया सूची चस्पा की जाए और रात में चलने वाले ऑटो का रजिस्टर संधारित किया जाए, ताकि आम जनता से ज्यादा किराया वसूल नहीं किया जा सके। इसी प्रकार नगरपरिषद के कनिष्ठ अभियंता कमलेश कुमार को निर्देशित किया कि बीडीएस तिराहा, नया बस स्टेंड, सब्जी मंडी, डीएसपी कार्यालय, पुराना बस स्टेंड, भोजलाई चौराहा पर ऑटो स्टेंड के बोर्ड लगवाये जाए। डीटीओ इंस्पेक्टर राजेश स्वामी से उपखंड अधिकारी ने कहा कि हर हाल में सुजानगढ़ शहर में बोबासर पुलिया के बाद भारी वाहनों का प्रवेश 24 घंटो के लिए बंद ही रहना चाहिए। सीआई बैगाराम मीणा ने कहा कि जो भी भारी वाहन सुजानगढ़ में आएगा, उसका चालान किया जाएगा। साथ ही ओवरवेट मिलने पर भारी जुर्माना होगा। बैठक में पुरूषोतम चौहान भी मौजूद रहे।

रतनगढ़ विधायक गोदारा ने किया नेक्सा शोरूम का उदघाटन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। छापर रोड़ पर आबकारी थाने से आगे मारूति सुजुकी के नेक्सा शोरूम का उद्घाटन रतनगढ़ विधायक पूसाराम गोदारा ने फीता काट कर किया।

इस अवसर पर जिला परिवहन अधिकारी बजरंग लाल, पार्षद आसिफ नसवाण, पार्षद प्रति. अमजद खान, कंपनी के सेल्स जीएम अजय सोनी, एयू बैंक के महेन्द्रसिंह, अमित कुमार, धर्मपाल, बाबूसिंह, एसबीआई शाखा प्रबंधक भवानी सिंह, केनरा बैंक के प्रतिनिधि मौजूद रहे। अतिथियों का स्वागत मारूति सुजुकी के ब्रांच मैनेजर सोहन नाथ सिद्ध, चूरू ब्रांच मैनेजर विजय कुमार, जितेन्द्र सोनी, गोपाल जोशी ने पुष्पहार एवं साफा पहना कर किया। इस मौके पर सेल्स जीएम अजय सोनी ने मारूति सुजुकी की गाडियों एवं सेवाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ब्रांच मैनेजर सोहन नाथ सिद्ध ने आभार जताया।

पंचायतीराज संस्थाओं में रिक्त हुए पदों पर उप चुनाव 26 मई को, उप चुनाव कार्यक्रम घोषित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान की ओर से जारी कार्यक्रमानुसार जिले की पंचायती राज संस्थाओं में विभिन्न कारणों से रिक्त हुए पदों पर उप चुनाव 26 मई को होंगे। उप जिला निर्वाचन अधिकारी अर्पिता सोनी ने बताया कि जिले की राजगढ़ पंचायत समिति की ख्याली ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 6, मुन्दीताल ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 2, भगेला ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 11, चैनपुरा बड़ा के वार्ड संख्या 3, चूरू पंचायत समिति की लाखाऊ ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 2 व 4, सिरसला ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 12, रतनगढ़ पंचायत समिति की दाऊदसर ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 6 व पड़िहारा ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 9 में वार्ड पंच पद के उपचुनाव के लिए 26 मई, 2025 को मतदान होगा। इसी क्रम में जिले की चूरू पंचायत समिति के लाखाऊ में उपसरपंच पद के लिए भी उपचुनाव होना है। कार्यक्रम जारी होने के साथ ही संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में आदर्श आचार संहिता के प्रावधान लागू हो गए हैं।

यह 12 वैकल्पिक दस्तावेज रहेंगे पहचान के लिए मान्य

मतदान के दौरान मतदाताओं को अपनी पहचान साबित करने के लिए फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत करना होगा। किसी कारण से फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत करने में असमर्थ रहने पर मतदान के लिए उसे राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से अनुमोदित 12 वैकल्पिक दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज प्रस्तुत करना होगा। इन दस्तावेजों में आधार कार्ड, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, आयकर पहचान पत्र, मनरेगा जॉब कार्ड, सांसदों, विधायकों को जारी सरकारी पहचान पत्र, केंद्र सरकार या राज्य सरकार, राज्य पब्लिक लिमिटेड कंपनी, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम की ओर से अपने कर्मचारियों को जारी किए जाने वाले फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, श्रम मंत्रालय की ओर से जारी फोटोयुक्त स्वास्थ्य बीमा योजना स्मार्ट कार्ड, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, सक्षम अधिकारी की ओर से जारी फोटोयुक्त छात्र पहचान पत्र, सक्षम प्राधिकारियों की ओर से जारी फोटोयुक्त शारीरिक विकलांगता प्रमाण पत्र, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक/सहकारी बैंक/डाकघर की ओर से जारी फोटोयुक्त पासबुक शामिल हैं।

यह रहेगा पंचायतीराज संस्थाओं में उप चुनाव कार्यक्रम

उप जिला निर्वाचन अधिकारी (अतिरिक्त जिला कलक्टर) अर्पिता सोनी ने बताया कि पंचायती राज संस्थाओं में उप चुनाव के लिए जारी कार्यक्रम के अनुसार वार्ड पंच के लिए 9 मई को जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा नियम 23 व सपठित 56 के अन्तर्गत निर्वाचन की लोकसूचना जारी की जाएगी। 14 मई को सवेरे 10 बजे से सायं 5 बजे तक नाम निर्देशन पत्र प्रस्तुत किए जा सकेंगे। 15 मई को सवेरे 10 बजे से नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा की जाएगी। गुरुवार, 15 मई को दोपहर 3 बजे तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। नाम वापसी का समय समाप्त होने के तुरन्त बाद चुनाव प्रतीकों का आवंटन करते हुए चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों की सूची का प्रकाशन किया जाएगा। 26 मई को सवेरे 07 बजे से शाम 05 बजे तक मतदान होगा। मतदान समाप्ति के तुरन्त पश्चात् पंचायत मुख्यालय पर मतगणना की जाएगी। उपसरपंच पद का चुनाव 27 मई को होगा।

अपनी कमाई में अर्जित धन को परोपकार में लगाना पुण्य का कार्यः सहारण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। सामाजिक संस्था लायंस क्लब चूरू की ओर से शुक्रवार को निकटवर्ती कस्बे रतननगर के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एक वाटर कूलर आरो मशीन सहित भेंट किया गया। क्लब एडमिनिस्ट्रेटर व प्रांतीय सचिव लायन डॉ. कमल वशिष्ठ ने बताया कि लायंस क्लब सदस्य राजीव चाहर की प्रेरणा से ग्राम ढ़ाणी डी.एस. पुरा की तीजा देवी बुगालिया की स्मृति में उनके पति मूलचंद बुगालिया ने एक वाटर कूलर आरो सहित अस्पताल को भेंट किया। डॉ. वशिष्ठ ने बताया कि क्लब अध्यक्ष आर्किटेक्ट अनुराग शर्मा की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक हरलाल सहारण रहे। वहीं कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि पालिकाध्यक्ष निकिता गुर्जर रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक हरलाल सहारण ने भामाशाह मूलचंद बुगालिया को साधुवाद देते हुए इस प्रकार के कार्य को पुण्य का कार्य बताया। उन्होंने कहा कि धन बहुत लोगों के पास होता है, परंतु उसको परोपकार में लगाने वाले बहुत कम लोग होते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आर्किटेक्ट अनुराग शर्मा ने भामाशाह को धन्यवाद देते हुए क्लब की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि पालिका अध्यक्ष निकिता गुर्जर ने लायंस क्लब व भामाशाह का आभार व्यक्त किया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. मेघराज सैनी ने आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस भयंकर गर्मी को देखते हुए अस्पताल में वाटर कूलर की अत्यधिक आवश्यकता थी, जिसको लायंस क्लब ने आज पूरा किया। कार्यक्रम में क्लब के ओम प्रकाश बेरवा व मंगतू राम सैनी ने आयोजकीय भूमिका निभाई। इस अवसर पर राजेंद्र धरेन्द्रा, सत्यनारायण सैनी, मंडल अध्यक्ष निर्मल सेन, राजेंद्र परिहार, पार्षद ओम जांगिड़, असगर खान, चूरू शहर अध्यक्ष सुरेश सारस्वत, चंद्र प्रकाश शर्मा, सुनील ढ़ाका, संदीप चाहर सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन दीनदयाल सैनी ने किया।

30 सरकारी स्कूलों में बनेंगे सामुदायिक शौचालय, 90 लाख की योजना 6 माह में होगी पूरी

10 स्कूलों से मिली मंजूरी, 20 स्कूल में और बनेंगे

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के पंचायत समिति ने ग्रामीण क्षेत्र की 30 सरकारी स्कूलों में सामुदायिक शौचालय बनाने की योजना को मंजूरी दी है। इस योजना पर कुल 90 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। प्रत्येक शौचालय का निर्माण लगभग 3 लाख रुपये में होगा। पंचायत समिति की प्रधान निर्मला राजपुरोहित व प्रधान प्रतिनिधि मधुसूदन राजपुरोहित ने बताया कि निर्माण कार्य 6 माह में पूरा किया जाएगा। अब तक 10 सरकारी स्कूलों से शौचालय निर्माण की मांग आई है। शेष 20 स्कूलों से प्रस्ताव दो दिनों में आने की उम्मीद है। अन्य स्कूल भी पंचायत समिति से शौचालय निर्माण की मांग कर सकते हैं। अभी सरकारी विद्यालयों के पास मौका है। पहले आओ पहले पाओ के तहत सरकारी विद्यालयों में सामुदायिक शौचालय बनाए जाएंगे। इसके तहत जिस विद्यालय का पहला प्रस्ताव आएगा उसको पहले दिया जायेगा। विकास अधिकारी महेंद्र सौंलकी के अनुसार सामुदायिक शौचालयों से छात्रों और शिक्षकों को स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिलेगी। इससे संक्रामक रोगों का प्रसार कम होगा। स्कूलों में पढ़ाई का माहौल सुरक्षित और स्वस्थ बनेगा। यह योजना विद्यार्थियों के लिए सुविधाजनक होगी। साथ ही यह स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्यों की दिशा में एक अच्छा कदम साबित होगी।

चार प्रतिभाओं को मिला निर्मला छबलानी सम्मान 2025

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राज्यपाल से सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका के रूप में सम्मानित बाल निकेतन के लिए आजीवन समर्पित रही पूर्व आचार्या आदरणीय सुश्री निर्मला छबलानी 'बड़ी दीदी' की स्मृति में स्थापित निर्मला छबलानी सम्मान समारोह 2025 का आयोजन गुरुवार को जयपुर में किया गया। कार्यक्रम के संस्थापक समन्वयक डॉक्टर प्रकाश छबलानी ने बताया कि बाड़मेर में कार्यरत डॉक्टर भरत सहारण को थार के प्रतिभावान जरूरतमंद युवाओं को मेडिकल की प्रवेश परीक्षा के लिए पूर्णतः निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण उपलब्ध करवाकर अब तक 110 से अधिक युवाओं को डॉक्टर बनाने के लिए और जोधपुर के एडवोकेट हिंदू सिंह सोढ़ा को उनकी ओर ले भारत में निवास करने वाले पाकिस्तानी अल्पसंख्यकों के हित में किये जा रहे सेवा कार्यों के लिए 21-21 हजार रूपये की सम्मान राशि व स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनके उल्लेखनीय योगदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सम्मानित किया गया। वहीं बाल निकेतन के पूर्व विद्यार्थी गर्व मुरारका को सीए फाइनल परीक्षा 2024 में ऑल इण्डिया 29वीं रैंक तथा डॉक्टर अंजलि को नीट पीजी प्रवेश परीक्षा 2024 में ऑल इण्डिया दूसरी रैंक हासिल करने पर 11-11 हजार रूपये की सम्मान राशि एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार नारायण बारेठ, आर्टिस्ट चंद्रशेखर, डॉ प्रकाश छबलानी, इंजीनियर हरि छबलानी, डॉ जवाहर बाखरू, मनीष बिड़ला, सोनिया बिड़ला, जय कुमार, शिल्पा सहित अन्य परिजन उपस्थित रहे।

बांग्लादेशियों की धरपकड़ की मांग, ज्ञापन सौंपा

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल व सर्व सनातन समाज की ओर से शुक्रवार को जिला कलेक्टर के नाम एसडीएम रामकुमार वर्मा को ज्ञापन देकर पाकिस्तानी, बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों की धरपकड़ के लिए ज्ञापन सौंपा है। दिए गए ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि 22 अप्रैल को पहलगाम में देशभर के कई निर्दोष हिंदू पर्यटकों को आतंकवादियों की ओर से हत्या कर दी गई थी। ऐसे में देश में अवैध रूप से रह रहे पाकिस्तानी, बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों की धर-पकड़ कर उन्हें उनके देश भेजने के लिए चिन्हित करने का जो आदेश दिया है, उसके लिए मुख्यमंत्री ने भी गत दिनों प्रशासनिक अधिकारियों की एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित कर इस मामले में गंभीरता से कार्यवाही करने के निर्देश थे। ज्ञापन में मांग की है कि क्षेत्र की बाहरी बस्तियों में काफी संख्या में संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की जाए। इसके अलावा जिलेभर में बाहर से आकर काम रहे कैटरर्स, होटल स्टाफ, रेहड़ी व फेरीवाले, वेंडर्स, निर्माण कार्य करने वाले लोगों की जांच कर बाहरी लोगों पर ठोस कार्रवाई जाए। इस अवसर पर जगदेव प्रसाद सांखोलिया, ओमप्रकाश पुजारी, भागीरथ प्रजापत, अजय गार्गी, राजेंद्रप्रसाद चांदगोठिया, राकेश शर्मा, विजयकुमार चौमाल, एडवोकेट मनीष चीनिया, रामदेव चंदगनिया, वासुदेव चाकलान, अंजनी शर्मा, महेश सारस्वत, ललित शर्मा, भंवरलाल चौधरी, धनराज इंदौरिया, शंभु लाटा, कमल शर्मा, हेमंत शर्मा, अरविंद मिश्रा सहित कई लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष (जिला व सेशन न्यायाधीश) रविन्द्र कुमार के निर्देशानुसार शुक्रवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव डॉ शरद कुमार व्यास की अध्यक्षता में प्री-लिटिगेशन प्रकरणों के अधिकाधिक संख्या में निस्तारण के लिए 10 मई, 2025 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर बैंक, वित्तीय संस्थाओं, बीएसएनएल, विद्युत विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। सचिव डॉ शरद कुमार व्यास ने बताया कि लोक अदालत को सफल बनाने के लिए बैंक अधिक से अधिक प्री-लिटिगेशन प्रकरणों को प्रस्तुत करें। इन प्रकरणों को अधिक से अधिक संख्या में जरिये राजीनामा निस्तारित करने का प्रयास करें ताकि प्री- लिटिगेशन के माध्यम से धन की वसूली हो सके तथा लंबित प्रकरणों का निस्तारण हो सके। इसी प्रकार बैंकों के न्यायालयों में लंबित 138 एनआई एक्ट के प्रकरणों में भी राजीनामा के जरिये प्रकरणों के निस्तारण के प्रयास किए जाएं ताकि अधिकाधिक प्रकरणों का निस्तारण कर लोक अदालत को सफल बनाया जा सके। उन्होंने उपस्थित सभी को प्रकरणों दर्ज होने से निस्तारण तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया की जानकारी दी तथा बैंक अधिकारियों व बैंक, वित्तीय संस्थाओं, बीएसएनएल, विद्युत विभाग में होने वाले प्री-काउंसलिंग सत्रों में सहयोग करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए संबंधित विभागों के अधिकारीगण के साथ बैठकों का आयोजन किया जाकर प्रकरणों का चिन्हीकरण किए जाने, राजस्व, बैंक, बीमा इत्यादि प्रकरणों के संबंध में विचार-विमर्श किए जाने, धारा 138 एनआई एक्ट के रुपए 10 लाख तक के एवं ऋण वसूली से संबंधित लम्बित/प्री-लिटिगेशन श्रेणी के प्रकरणों का राजीनामा के माध्यम से अधिकाधिक निस्तारण सुनिश्चित किये जाने बाबत जरूरी उपायों पर विचार-विमर्श किया जाने, प्रकरणों के अधिकाधिक निस्तारण के संबंध में प्री-काउंसलिंग के सफल आयोजन के क्रम में विचार-विमर्श किए जाने, राजस्थान लिटिगेषन पॉलिसी, 2018 के तहत प्रकरणों के निराकरण के प्रयास किया जाना, राष्ट्रीय लोक अदालत में प्रकरणों के निस्तारण में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में विचार-विमर्श किए जाने इत्यादि के संबंध में अवगत करवाया। साथ ही उपभोक्ता व विक्रेता/सेवा प्रदाता के मध्य के विवाद से संबंधित प्रकरणों के अधिकाधिक निस्तारण के बारे में भी विशेष चर्चा की।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।